ISSN 2349-6614

मार्च 2023

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

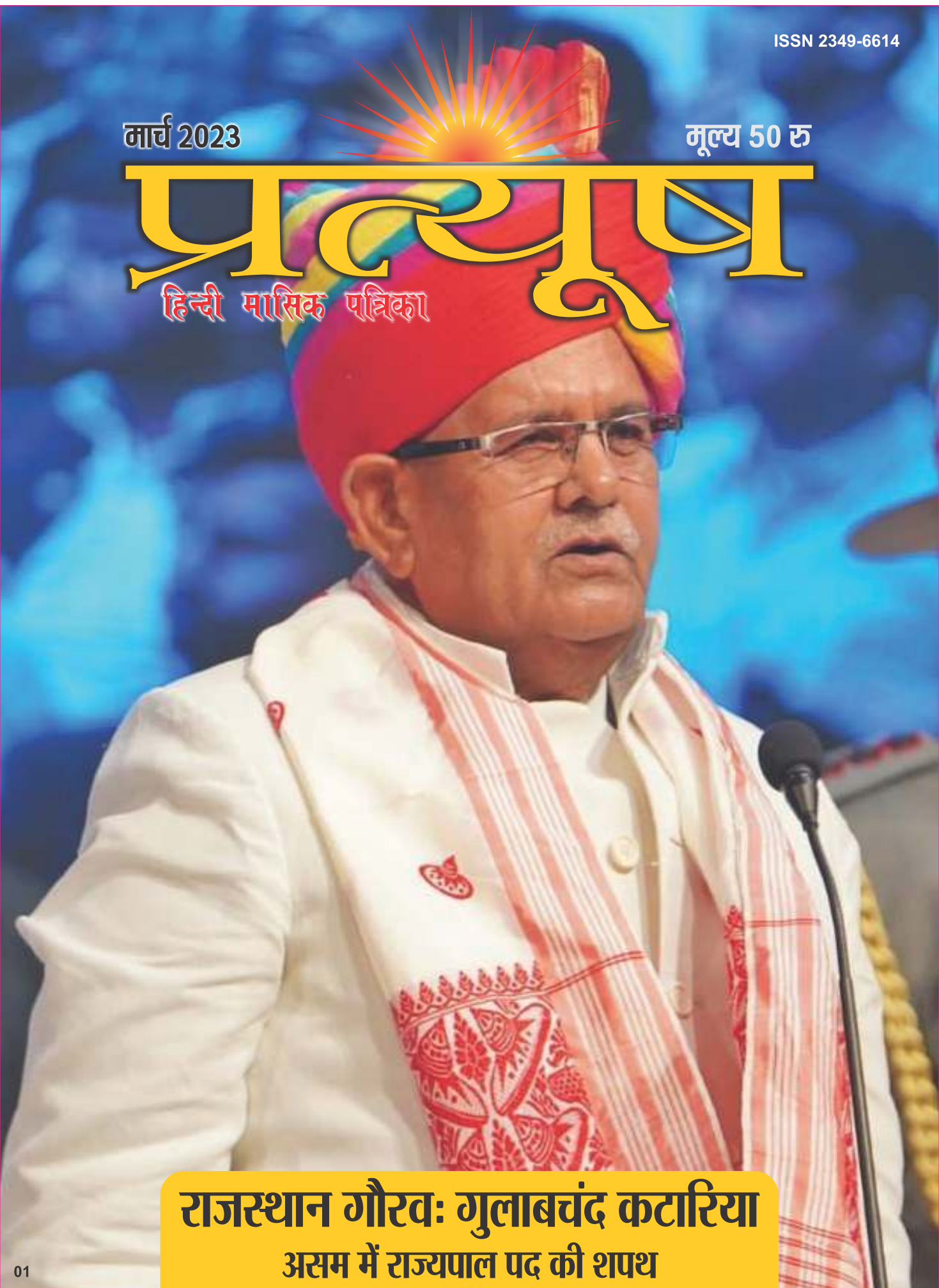

राजस्थान गौरवः गुलाबचंद कटारिया

असम में राज्यपाल पद की शपथ

ARAVALI
GROUP - INDIA

AN ISO 9001:2008
Certified co.

Aravali Minerals & Chemical Industries Pvt. Ltd.

Quarry Owner, Processor, Exporter and Supplier of Indian Onyx, Marbles, Granites & other Natural Stones from Udaipur

MINERAL STONE CONSTRUCTION

- A wonder of nature- the Onyx Marble of Aravali, is most sought after by Architects and Master builders from all over the world for its distinct creamy white and subtle pink colors embellished with nature's own patterns.
- Aravali Onyx, with its fine grain texture and translucency, symbolises supreme luxury, extreme sensitivity and a high degree of aesthetics.
- Aravali Minerals & Chemical Industries is proud to uncover and present before connoisseurs across the globe, this dplendour of nature.

6 Continents 36 Countries, More then 400 Customers

B-132, Mewar Industrial Area, Madri, Udaipur-313003
Tel: 2490675, 2491357, 2491675
OFFICE:SP-1, Udhyog Vihar, Sukher, Udaipur-313003
E-mail: aravali.sunil@yahoo.com, aravali1975@gmail.com
Website: www.aravalionyx.com

मार्च 2023 वर्ष: 20, अंक: 11

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अंदर के पृष्ठों पर...

प्रसंगवश

'भारत जोड़ो' से कांग्रेस को संजीवनी की उम्मीद
पेज 06

रु-ब-रु

मिशन-156 में होंगे कामयाब
पेज 12

रंगपर्व
भारतीय संस्कृति का रागरंग पर्व होली
पेज 16

सुरक्षा

भारत की दमदार दस्तक से परेशान है ड्रेगन
पेज 22

तीर्थ स्थल

हारे के सहारे, श्याम हमारे
पेज 32

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्स: 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोनाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

Rakesh Kumawat, CMD
94141 62686

Shubham Kumawat
+91 9001161614 (M)

ER. Rajat Kumawat
+91 7568347991 (M)
+ 91 7230051822 (O)

Wholesaler

Retailer

- *Bathroom Tiles*
- *Elevation Tiles*
- *Kitchen Tiles*
- *Poster Tiles*
- *Sanitary ware*
- *Imported Ceramic Tiles*
- *Table Tops*
- *SS Kitchen Sink*
- *Bathroom Mirror*
- *Bathroom Basins*
- *PVC Pipe & Fitting*
- *Decorated Wall and Floor Tiles*

CERA · Alient · MULTISTONE TILES · ACURA BATH FITTINGS · UltraTech CEMENT · LV GRANITO

SHUBHAM TILES

18, 120 Feet Main Road, H.M. Sector-5, Udaipur- 313001, Rajasthan
10, R.M.V. Compound Road, Surajpole, Udaipur - 313001, Rajasthan
Email: shubhamtilesudaipur@gmail.com

घाटी में हरी होती आतंक की जड़ें

सरकार दावा करती रही है कि घाटी में आतंकवाद काफी हद तक खत्म किया जा चुका है, मगर हकीकत यह है कि आतंकवादी संगठन नई-नई रणनीति बनाकर सुरक्षा व्यवस्था को चुनौती दे रहे हैं। मानाकि उन पर कड़ी नजर है, फिर भी वे अपनी साजिशों को अंजाम दे रहे हैं। धारा 370 हटने के बाद वे कोई बड़ी वारदात करने में कामयाब तो नहीं हो पाए हैं, मगर लक्षित हिंसा करके सुरक्षा व्यवस्था व राज्य में लम्बित चुनाव प्रक्रिया के रास्ते में समस्याएं जरुर पेश कर रहे हैं। आए दिन मुठभेड़ में आतंकियों के पकड़े अथवा मारे जाने के समाचार आते हैं। अब वे कुछ ऐसे नए तरीके अपनाने लगे हैं, जो पहले नहीं देखे गए। पिछले दिनों जम्मू कश्मीर पुलिस ने लश्कर से जुड़े एक आतंकी के पास से परफ्यूम की बोतल में ताकतवर विस्फोटक बरामद किया। सुरक्षाकर्मियों का कहना है कि इस प्रकार का विस्फोटक काफी घातक होता है। गिरफ्तार आतंकी ने जनवरी में नरवाल में भी ऐसे ही विस्फोटक लगाए थे, जिसमें नौ लोग गंभीर रूप से घायल हो गए थे। इससे पहले भी वह ऐसी घटनाओं को अंजाम दे चुका है। इस आतंकी की गिरफ्तारी से एक दिन पहले तीन आतंकियों को गिरफ्तार किया गया था, जो किसी बड़ी आतंकी घटना को अंजाम देने की तैयारी में थे। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि आखिर कैसे घाटी में आतंकियों की मौजूदगी बनी हुई है और उन्हें कहां से विस्फोटक व हथियार मिल रहे हैं ?

जम्मू कश्मीर के कुलगाम जिले के मीरहामा गांव में एक स्थान से भारी मात्रा में हथियार, गोला-बारूद बरामद करने के साथ ही सुरक्षा बलों की संयुक्त टीम ने आतंकियों के 6 सहयोगियों को भी फरवरी के पहले सप्ताह में गिरफ्तार किया। जो जैश-ए-मोहम्मद के समर्थक बताए जाते हैं। इनकी निशानदेही पर एक पिस्तौल व 23 कारतूस, कार्डेक्स विस्फोटक, इनसास और एम-4 राइफल के 11 मैगजीन व 446 कारतूस, एसॉल्ट राइफल के 30 कारतूस एक हथगोला, चार यूबीजीएल ग्रेनेड, दो रॉकेट शेल, चार वॉकी टॉकी, एक वायरलेस सेट, दो चार्जर एक पाउच बरामद किया गया है। जिस आतंकी के पास से परफ्यूम आइईडी बरामद हुआ है वह पिछले पांच साल से सरकारी स्कूल में शिक्षक है। शिक्षा के मंदिरों तक में ऐसे आतंकियों की पहुंच होने लगे तो फिर वे भावी पीढ़ी को आतंक का पाठ पढ़ाने के अलावा क्या करेंगे ? सीमा पार से प्रशिक्षित होकर आने वाले ऐसे आतंकियों के नापाक मंसूबों को पूरा करने में कुछ स्थानीय परिवार भी सहयोगी होते हैं। जिस शिक्षक को पुलिस ने गिरफ्तार किया है वह पिछले तीन साल से आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के हैंडलर से जुड़ा हुआ था। सवाल यह भी है कि सूबे का तालिमी महकमा इतना लापरवाह और गैर जिम्मेदार कैसे बना बैठा है कि उसकी नाक के नीचे उससे ही तनख्वाह पाने वाला कर्मचारी राष्ट्र विरोधी ताना-बाना बुन रहा है। आज जरूरत इस बात की है कि केवल जम्मू कश्मीर ही नहीं अपितु देश में सघन छानबीन कर देश की शांति, एकता और अखण्डता विरोधी कार्यों में लिप्त लोगों की पहचान कर उन्हें तत्काल कड़ी सजा दी जाए। सहिष्णुता का मतलब ऐसे लोगों को बर्दाश्त करते रहना तो कतई नहीं हो सकता।

विशेष दर्जा समाप्त होने के बाद लंबे समय तक घाटी में कर्फ्यू का माहौल रहा। सुरक्षाकर्मियों की तादाद पहले से कहीं अधिक बढ़ा दी गई थी। पिछले साल सरकार ने माना था कि इसके चलते घाटी में आतंकी संगठनों में युवाओं की नई भर्ती पर लगाम लगी है। मगर हकीकत यह है कि घाटी के नौजवान पाकिस्तान की मदद से लगातार सीमा पार सक्रिय आतंकी संगठनों के सम्पर्क में बने रहते हैं और उनके इशारे पर साजिशों को अंजाम देते हैं। ताजा घटनाओं में गिरफ्तार आतंकी भी स्थानीय थे, घुसपैठ कर सीमा पार से नहीं आए थे। यानी जाहिर है कि घाटी में युवाओं को गुमराह कर हाथ में हथियार उठाने को तैयार करने में आतंकवादी संगठन अब भी कामयाब हो रहे हैं। जब तक स्थानीय लोगों में दशहतगर्दों के प्रति असहयोग का भाव पैदा नहीं होगा, ऐसी घटनाओं पर विराम लगाना कठिन होगा। इसलिए इस दिशा में नए सिरे से रणनीति की जरूरत है।

इस वक्त जम्मू कश्मीर की शासन व्यवस्था केन्द्र सरकार के हाथ में है। वह वहां बढ़ रही दहशतगर्दी का ठीकरा दूसरे के सिर फोड़ कर अपनी जिम्मेदारी से पल्ला नहीं झाड़ सकती। उसे नए सिरे से विचार करने की जरूरत है कि क्या वजह है कि तमाम चौकसी और कड़ाई के बावजूद घाटी में आतंकी मंसूबे बढ़ते ही जा रहे हैं। केन्द्र सरकार लगातार प्रयास करती रही है कि घाटी छोड़कर बाहर गए कश्मीरी पंडित वापस अपने घरों को लौटें। कई परिवार लौटे भी मगर फिर से उन्हें सुरक्षा नहीं मिल पा रही तो उनके वहां टिके रहने को लेकर कोई दावा करना मुश्किल होगा, ऐसा क्या है कि सरकार घाटी में रह रहे थोड़े से गैर कश्मीरी और कश्मीरी पंडितों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर पा रही। आखिर कैसे तमाम शिकंजों के बावजूद आतंकियों के पास हथियार और पैसे वगैरह पहुंच रहे हैं ? सरकार को अपनी रणनीति बदल कर सख्ती करनी होगी।

'भारत जोड़ो' से कांग्रेस को संजीवनी की उम्मीद

करीब 3,500 किलोमीटर की राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' 30 जनवरी (महात्मा गांधी निर्वाण दिवस) को श्रीनगर में पूरी हो गई। अब सबके मन में एक ही सवाल है कि इस यात्रा के तात्कालिक और दीर्घकालिक प्रभाव क्या होंगे? कहने को तो कन्याकुमारी (तमिलनाडु) से श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) तक की इस दूरी को करीब पांच महीने में नापा गया है, लेकिन दक्षिण के राज्यों को राहुल गांधी ने जितना वक्त दिया, उतना उत्तर, विशेषकर हिन्दी पट्टी के सूबों को नहीं दिया। फिर भी, किसी नेता ने बहुत दिनों के बाद इस तरह पांव-पैदल दक्षिण से उत्तर तक सफर तय किया है। जिसका लाभ कांग्रेस को मिलेगा ज़रूर, लेकिन कब और कितना यह तो आने वाला समय ही तय करेगा।

उमेश शर्मा

श्रीनगर के लाल चौक पर कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा का समापन वास्तव में सकारात्मक राजनीति का एक नमूना है। जोड़ने की मनोकामना वाली यह सकारात्मक राजनीति कश्मीर में आकर जब संपन्न होती है, तो पूरे देश और विदेश तक इसका संदेश पहुंचता है। राष्ट्रीय एकता और सद्भावना का मंच मज़बूत होता है, लोगों की समस्याओं को समझने और उनके निस्तारण के लिए पहल का वातावरण बनता है। दूरियां सिमटती हैं और अलगाववाद और आतंकवाद सिर उठाने का साहस नहीं जुटा पाते। उम्मीद है कि राहुल गांधी की इस यात्रा से राजनैतिक पार्टियां सबक लेंगी और अपने नेताओं को भी इस तरह की यात्राओं के लिए प्रेरित कर भारत में सहयोग, सद्भाव और सहकार की कड़ियां मज़बूत करेंगी। राहुल ने इस यात्रा के जरिये धीरे-धीरे ही सही अपनी छवि में एक बदलाव लाने का प्रयास किया है। उन्होंने देश, उसके लोगों, और उनके सुख-दु:ख को निकट से देखा है, अलग-अलग भाषा, भूषा और परम्पराओं में एकता के दर्शन किए हैं, उनकी आँखों ने भविष्य के वे सपने देखें हैं, जिनसे भारत और अधिक मज़बूत हो सकेगा। इस यात्रा ने राहुल गांधी को गंभीर

नेताओं की श्रेणी में शुमार कर दिया है। हालांकि यात्राएं पहले भी निकली थीं लेकिन उनका मकसद अलग-अलग था, सो वे आम आदमी से नहीं जुड़ पाईं। राहुल की यात्रा का उद्देश्य केवल भारत के तमाम लोगों के बीच एक्य भाव से 'भारत जोड़ो' था।

गौरतलब है कि 7 सितम्बर 2022 को कन्याकुमारी से शुरू हुई ये यात्रा 145 दिनों में 12 राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों से गुजरते हुए करीब 4080 किलोमीटर की दूरी तय कर जम्मू-कश्मीर की राजधानी श्रीनगर पहुंची। समग्र रूप से देखा जाए तो यात्रा देशभर के 75 जिलों से गुजरी है। यात्रा समापन पर ऐतिहासिक लाल चौक पर जब राहुल गांधी ने तिरंगा फहराया तब कहा कि भारत से किया गया वादा पूरा हो गया। नफरत हारेगी, मोहब्बत हमेशा जीतेगी, भारत में उम्मीदों का नया सवेरा होगा।' उन्होंने यात्रा को अपने जीवन का सबसे गहरा और सुंदर अनुभव बताया। यात्रा के संदर्भ में उन्होंने कहा, 'मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। लाखों लोगों से मिलना हुआ। यात्रा का लक्ष्य भारत जोड़ो का था, नफरत और हिंसा के खिलाफ यह यात्रा थी।

यह कहा जा सकता है कि 2024 के आम चुनाव में कांग्रेस के लिए यह यात्रा फायदेमंद हो सकती है। फिलहाल इसका ठीक-ठीक आकलन नहीं किया जा सकता, लेकिन यह सब कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि कांग्रेस इस साल नौ राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों में किस हद तक और कहां-कहां अपनी जीत दर्ज

करती है। अगर आसन्न विधानसभा चुनाव वाले कर्नाटक, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, तेलंगाना जैसे राज्यों में से दो-तीन में भी वह सरकार बना ले गई, तो 2024 में विपक्ष की धुरी के रूप में उभरने की उसकी दावेदारी मजबूत हो जाएगी। तभी भाजपा के खिलाफ विपक्षी एकता के नारे की स्वीकार्यता भी बढ़ेगी। हालांकि इसके लिए पार्टी को आत्म-मुग्धता से बचना होगा। मल्लिकार्जुन खरगे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष जरूर चुन लिए गए हैं, लेकिन पार्टी को फिर से खड़ा करने की असल मशक्कत तो राहुल गांधी और उन जैसे ही युवाओं को करनी होगी। इस समय पार्टी जिस जमीन पर खड़ी है, वह काफी कमजोर है, उसे मज़बूती देने का काम अभी से जरूरी इसलिए हो गया है कि राज्यों में चुनाव की रणभेरी बज उठी है और इनके परिणाम ही 2024 के आम चुनाव के फैसले की इबारत लिखेंगे।

कहां क्या हाल

राजस्थान- छत्तीसगढ़ में सत्ता बरकरार रखने की चुनौती का कांग्रेस को सामना करना होगा। वहाँ म.प्र. में भी पार्टी झटके से सरकार गंवाने के बाद दोबारा गद्दी हासिल करने की कोशिश में होगी। तेलंगाना में पार्टी पहले ही चुनौती का सामना कर रही है। ऐसे में मुनुगोडे उपचुनाव की हार ने कांग्रेस की चिंताएं और बढ़ा दी हैं। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के गृहराज्य कर्नाटक में कांग्रेस को खासी उम्मीद है।

पूर्वोत्तर की चुनौती

पूर्वोत्तर भारत को कांग्रेस का गढ़ माना जाता था, लेकिन 2014 के आम चुनाव के बाद सियासी तस्वीर बदली और पार्टी सीटों के लिए जूझ रही है। आंकड़े बताते हैं कि साल 2013 में मेघालय, त्रिपुरा और नगालैंड की कुल 180 विधानसभा सीटों में कांग्रेस के पास 47 थीं। 2018 में यह आंकड़ा घटकर 21 पर आ गया। अब स्थिति ऐसी है कि मेघालय को छोड़कर अन्य दो राज्यों में पार्टी का एक भी विधायक नहीं है।

कलह का खत्मा जरूरी

2023 में चुनावी माहौल बनने से पहले कांग्रेस को नेताओं के बीच जारी मतभेदों को भी दूर करना होगा। इनमें राजस्थान में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट के बीच मतभेद दूर करने होगें। इसके अलावा कर्नाटक में पूर्व सीएम सिद्धारमैया और प्रदेश प्रमुख डीके शिवकुमार के बीच मुख्यमंत्री चेहरे को लेकर तनाव की खबरें आई थीं। छत्तीसगढ़ में भी सीएम भूपेश बघेल और स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंह देव में मतभेद की अटकलें लगती रही हैं।

Pushkar Chandaliya
Director

MOTOROLA
WIRELESS SYSTEM

PYROSON ELECTRONICS
Industrial Electronic & Wireless System
G-26, Anand Plaza, University Road, Udaipur (Raj.)
Telefax: 0294-2429633/9414167533
Email: pyrosonudaipur@rediffmail.com
Website: www.pyroson.com

74वां गणतंत्र दिवस

भारत का संविधान
उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली **बंधुता** बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज
तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल
सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

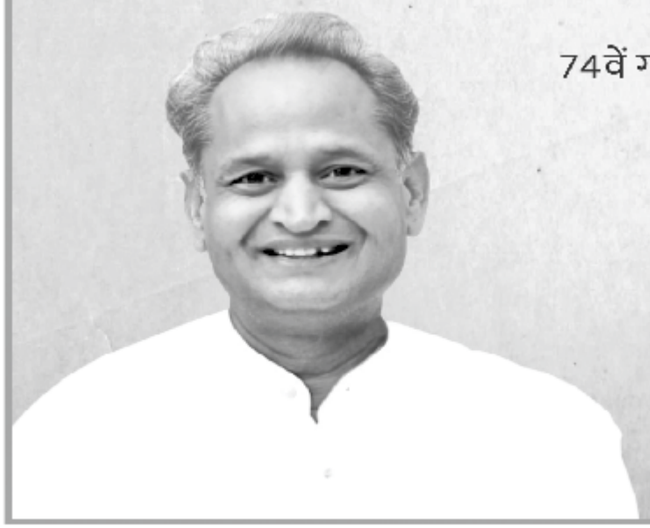

74वें गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर मूल कर्तव्यों को अंगीकृत कर हम सब सत्य, अहिंसा और शांति के मार्ग पर चलते हुए प्रदेश को उन्नति की ओर बढ़ाएं।

सभी प्रदेशवासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द, जय भारत

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

शंकराचार्य की तपोभूमि का धंसाव

संकट में जोशीमठ का अस्तित्व

सनत जोशी

आदि जगतगुरु शंकराचार्य की तपोभूमि जोशीमठ आज अपने अस्तित्व के लिए जूझ रहा है। सातवीं शताब्दी के उत्तराखंड का प्राचीन नगर जोशीमठ भू-स्खलन की चपेट में है। यहां के बाशिंदे दहशतजदा हैं। परिश्रम और जतन से बनाए आशियानों को ध्वस्त होता देख, कलेजा मुंह को आ रहा है। उनकी भूख-प्यास मिट चुकी है और नींद उड़ी हुई है। उन्हें चाहिए सुरक्षित छत।

चमोली जिले का जोशीमठ गंभीर खतरे का सामना कर रहा है। भूमि के धंसने और घरों के दरकने के कारण लोगों को अन्यत्र रहने को विवश होना पड़ा। उनके घरों में दरार पड़ने का सिलसिला जारी है। जोशीमठ की 25 हजार की आबादी में भय स्वाभाविक ही है। शासन-प्रशसन लोगों के लिए सुरक्षित स्थानों की व्यवस्था कर रहा है। आदि शंकराचार्य की तपोभूमि और गेटवे ऑफ हिमालय के नाम से अपनी पहचान रखने वाले जोशी मठ का अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है।

धार्मिक, पर्यटन और सांस्कृतिक शहर के अलावा चीन से सटी सीमा के करीब होने के कारण जोशीमठ का सामरिक महत्व भी है। इसे बचाने के लिए युद्धस्तर पर अभियान चलाने के साथ बेघर हुए लोगों के पुनर्वास की दिशा में कदम उठाना जरूरी है। पहाड़ी शहरों को लेकर भविष्य में बरती जाने वाली सावधानियों की रूपरेखा भी अब निश्चित हो जानी चाहिए।

जोशीमठ की ऐतिहासिकता और सनातन धर्म में उसकी अहमियत किसी से छिपी नहीं है, लेकिन दुर्योग से हमने उसकी अक्षुण्णता को पर्याप्त महत्व नहीं दिया। आठवीं सदी में आदि शंकराचार्य ने यहां पीठ की स्थापना की थी। सन 1872 तक यहां की आबादी महज 455 थी, लेकिन आज यह संख्या 15-20,000 है, तो स्वाभाविक ही उसकी पारिस्थितिकी पर असर पड़ना था। वहां हजारों की तादाद में घर, सराय और होटलों की तामीर कर दी गई। तथ्य यह है कि भू-वैज्ञानिक लगातार आगाह करने रहे हैं कि हिमालय पर्वत अभी बनने की प्रक्रिया में है, इसलिए इसमें भू-स्खलन, बादल फटने जैसी घटनाएं होती रहेंगी, इसके बावजूद उसकी पारिस्थितिकी के प्रति संवेदनशीलता नहीं बरती गई। सच तो यह है कि बढ़ती मानव गतिविधियों ने जोशीमठ ही नहीं, तमाम पहाड़ी इलाकों के वातावरण को प्रभावित किया है।

अपने देश का 15 फीसदी भौगोलिक इलाका (करीब 4.9 लाख वर्ग किलोमीटर) भूस्खलन से प्रभावित होता है। इसमें मूलत: हिमालय और अराकान पर्वत शृंखला के राज्य हैं, जैसे हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, मेघालय आदि। चूंकि हिमालय बहुत पुराना पहाड़ नहीं है और हर जगह इसकी बनावट अलग-अलग है, इसलिए भूस्खलन की घटनाएं वहीं हो रही हैं, जहां की मिट्टी अपेक्षाकृत ढीली है। यही वजह है कि दीर्घावधि को ध्यान में रखकर भूस्खलन से बचाव के उपाय अपनाने की सलाह बार-बार दी जाती है। पहले हमारी आपदा नीति प्रभावितों को मदद पहुंचाने की तक सीमित थी, लेकिन 2005 में आपदा प्रबंधन अधिनियम बनाया गया, जिसमें तय किया गया कि आपदा आने से पहले के बचाव-उपायों पर भी हमें ज्यादा ध्यान देना

नहीं चाहिए ऐसा विकास जो करे विनाश

जोशीमठ के दौरे पर गए विशेषज्ञों के दल को महिलाओं ने अपने खेत-खलिहान-मकान दिखाए और कहा कि उन्हें ऐसा विकास नहीं चाहिए जो विनाश करे। रोते हुए एक वृद्ध महिला भारती देवी ने कहा कि ऐसे विकास का क्या फायदा जो जिंदगी के अंतिम मुहाने पर बैठे हम बुजुर्गों के लिए मौत से भी बदतर हो। हमारी जिंदगी आज पहाड़ जैसी हो गई है।

चाहिए, ताकि जान-माल के नुकसान को कम से कम किया जाए। यह एक अच्छी पहल थी। लेकिन इसके क्रियान्वयन में जितनी संजीदगी होनी चाहिए थी, उसका अभाव ही रहा।

वर्ष 1970 में धौलीगंगा में आई बाढ़ के प्रभाव के कारण पाताल गंगा से लेकर हेलंग और ढाक नाला तक अपार जनधन की हानि हुई थी। उस समय भी यहां पर वनों का अंधाधुंध दोहन हो रहा था। इस क्षेत्र का उस समय के वैज्ञानिकों ने अध्ययन किया था। इसके बाद 1975 में मिश्रा कमेटी ने सरकार को सुझाव दिया था कि जोशीमठ में किसी तरह का भारी निर्माण न करवाएं, लेकिन हिमालय की प्राकृतिक खूबसूरती को नजरअंदाज करते हुए पर्यटन के नाम पर बहुमंजिला इमारतों का निर्माण और भारी खनन का कार्य जारी रखा। अधिक से अधिक कमाई के लालच में इस तरह की गतिविधियां बेरोकटोक जारी रही। इसका परिणाम यह रहा कि जोशीमठ में पिछले 50 सालों के दौरान लोगों का आवागमन बहुत तेजी से बढ़ा और अनियंत्रित तरीके से भवनों का निर्माण हुआ। विशेषज्ञों का मानना है कि भू-धंसाव

का कारण बेतरतीब भवन निर्माण, घरों से निकलने वाले बेकार पानी का रिसाव, ऊपरी मिट्टी का कटाव, मानव जनित विकास के कारण जलधारा के प्राकृतिक प्रभाव में आ रही है रूकावट है। जल निकासी का कोई रास्ता न मिलने की वजह से संकट बढ़ा।

With Best Compliments
Ajay Agarwal
Director, 98290 40088
Hindustan
Ceremic Distributors
UltraTech CEMENT The Engineer's Choice
EVEREST
SOMANY Tiles & Sanitaryware
Simpolo CERAMICS Stay ahead
Kajaria Perfect Walls & Floors
JOHNSON Not Just tiles, Lifestyles
Bell CERAMICS LIMITED
Outside Delhigate, Udaipur -313001
Ph. : 0294-2521381, 5100601, 2414258, Fax : 0294-2524014
E-mail : hcd.udaipur@gmail.com

न मोदी लहर और न ही सत्ता के खिलाफ माहौल

मिशन-156 में होंगे कामयाब

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री राजस्थान

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने गणतंत्र दिवस पर जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित मुख्य समारोह के बाद पत्रकारों से बातचीत की। चुनावी वर्ष होने के कारण स्वाभाविक था कि उनके सामने कुछ ऐसे ही प्रश्न और मुद्दे रखे गए जो विपक्ष की ओर से भी उठाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने तमाम सवालों का जवाब पूरे आत्मविश्वास और बेबाकी से दिया। प्रस्तुत है उनसे बातचीत का सम्पादित स्वरूप।

-सम्पादक

हमारा रास्ता बिल्कुल साफ है। जब 1998 में हमने सरकार बनाई थी, तब 156 सीटों पर जनता ने हमें आशीर्वाद देते हुए विजयी बनाया था। तब मैं प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष था, अब भी हमारी वही स्पीरिट है। हम लोग इस साल होने वाले चुनाव में भी मिशन-156 लेकर चलें हैं। सन 2018 में भी पिछले कार्यकाल में जन कल्याण कार्यों के कारण ही कांग्रेस की सत्ता में वापसी हुई थी। जहां तक 2013 की हार का सवाल है, यह कहने में मुझे कतई संकोच नहीं है कि 'मोदी लहर' उस समय वातावरण पर हावी थी। लेकिन राज्य में भाजपा सरकार के छह माह के प्रारंभिक कार्यकाल में ही जनता को अपनी गलती का अहसास हो गया था। चुनावी वर्ष के दौरान जो माहौल बनता है, वो भी एक बड़ा कारण होता है, सरकार की वापसी का। कारण तो और भी होते ही हैं। हमारे पार्टी कार्यकर्ता जनहित की हमारी योजनाओं को लेकर घर-घर जाते हैं, अन्य पार्टियां भी सड़कों पर उतरती हैं, कमेंट करती है, यह सब होता रहता है। इस बार जनमानस स्पष्ट है। उसे पिछली गलती का अहसास है। हवा बन चुकी है कि मौजूदा सरकार की अशोक गहलोत के नेतृत्व में ही वापसी होनी चाहिए। भाजपा के पास उनकी सरकार के खिलाफ बोलने का कोई मुद्दा नहीं है, कोई तर्क नहीं है। राजस्थानवासियों में सत्ता विरोधी भावना कहीं नहीं है। वे सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों से खुश हैं। राजस्थान में लागू की गई चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा की चर्चा आज पूरे देश में है और अन्य राज्य सरकारें उसे मॉडल मानकर अपने यहां भी शुरू करने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। रोजगार की दिशा में हमने महत्वपूर्ण कार्य किया है। सन 2013 में हमारी हार का एक कारण राज्य कर्मचारियों की नाराजगी थी, तब सरकार से कहीं न कहीं कोई चूक हो गई, लेकिन अब कर्मचारियों में कोई नाराजगी नहीं है। पुरानी पेंशन स्कीम फिर से शुरू हो जाने पर वे खुश हैं। ऐसी कई योजनाएं हमने क्रियान्वित की, जिससे कृषि, उद्योग, बिजली, परिवहन, चिकित्सा, शिक्षा सहित हर क्षेत्र में प्रगति के नए आयाम बने हैं और हर वर्ग को दिल छू लेने वाली विभिन्न योजनाओं का लाभ घर बैठे मिल रहा है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि राजस्थान में लोककल्याणकारी सरकार है, सामाजिक सुरक्षा जिसकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। सरकार हर उस व्यक्ति के साथ खड़ी है, जो जरूरतमंद है। कोरोनाकाल में राज्य सरकार के प्रबंधन की देश में सब तरफ तारीफ हुई है। मैं स्वयं तीन बार कोरोना की गिरफ्त में आया, लेकिन उस दौरान भी मुझे अपने प्रांतवासियों की चिंता लगी रही। मैं 500 वीडि यो कांफ्रेंस के जरिए हर गांव-ढाणी और शहर की कुशलक्षेम लेता रहा और किसी भी व्यक्ति को यह अहसास नहीं होने दिया कि वह अकेला और किसी अभाव में है। हर सरकारी विभाग विशेषकर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने रात-दिन पूरी जागरूकता के साथ समर्पित सेवाओं का कीर्तिमान बनाया। मुझे मालूम है कि मुझे और राज्य सरकार को आज विपक्ष ने टारगेट किया हुआ है, लेकिन जनता सब समझती है, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गोवा में निर्वाचित सरकारों को गिराने का घिनौना काम किया गया, लेकिन राजस्थान में उनकी एक नहीं चल पाई। हमारे सब विधायक एक जुट थे, सहयोगी विधायकों ने भी संकट में साथ दिया। जिनका मैं हृदय से आभार मानता हूं। यदि सब एकजुट न होते तो हमारी सरकार का भी वही हश्र होता, जो अन्य सरकारों का हुआ। परिणाम यह होता कि मैंने जनहित में जो फैसले किए और योजनाओं का निर्धारण किया, उससे लोग वंचित हो जाते। यह एकता बनी रहेगी। सरकार विरोधी काई हवा नहीं है और न ही मोदी लहर जैसी कोई बात है। मैं सेवा की राजनीति करता हूं, प्रदेश को आगे बढ़ाने की सदैव चिंता की है। गांधीजी के संदेश के अनुरूप मैं रचनात्मक राजनीति में यकीन करता हूं। मैंने जनसेवा को जुनून बनाया है, यही वजह है कि मुझे जन-जन का प्यार मिला है। आज देश में महंगाई, बेरोजगारी, तनाव और हिंसा का माहौल है। इसी चिंता को लेकर देश में परस्पर एकता, सहयोग और सद्भाव प्रसार के लिए राहुल गांधी ने 3500 किलोमीटर की भारत जोड़ो यात्रा की। जिसके सुखद परिणाम आएंगे। केन्द्र को देश की ज्वलंत समस्याओं की ओर ध्यान देना ही होगा। मुझे पूरा विश्वास है इस साल के अंत में होने वाले चुनाव में जनता का मुझे भरपूर स्नेह और समर्थन मिलेगा और हम सब मिलकर इस ऐतिहासिक प्रदेश को उन्नति के नए पथ पर अग्रसर करेंगे।

शुद्ध शाकाहारी भोजन

रोशनलाल पालीवाल

हमारे यहां सभी तरह के शाकाहारी भोजन
व्यवस्था के ऑर्डर लिए जाते हैं।

पालीवाल शिव भोजनालय

3, चेतक मार्ग, उदयपुर - 313001 (राज.)

Phone : 0294-2429014, Mobile : 94603-24836

राजशाही की विदाई, राजस्थान का निर्माण

छोटी-बड़ी इक्कीस रियासतों वाली राजशाही को विदा कर नए राजस्थान का निर्माण सचमुच काफी चुनौती भरा था। ब्रिटिश काल के राजपूताना से लेकर राजस्थान के अस्तित्व में आने तक के दौर में इन चुनौतियों से कैसे निपटा गया, प्रस्तुत है इसका सटीक ब्यौरा देता यह आलेख

प्रवीणचन्द्र छाबड़ा

भारत स्वाधीनता अधिनियम के तहत सत्ता हस्तांतरण के पूर्व आज का राजस्थान ब्रिटिश काल में 'राजपूताना' नाम से जाना जाता था। तब इसकी रियासतें चार एजेंसियो में विभाजित थीं। इन पर नियंत्रण के लिए हर एजेंसी का सर्वोच्च अधिकारी रजिडेंट था।

30 मार्च 1949 को छोटी-बड़ी 21 रियासतों में बसी डेढ़ करोड़ की आबादी ने राजशाही को विदा कर नए युग में प्रवेश किया। भारत स्वाधीनता अधिनियम के तहत सता हस्तांतरण के पूर्व आज का राजस्थान ब्रिटिश काल में 'राजपूताना' नाम से जाना जाता था। तब इसकी रियासतें चार एजेंसियों में विभाजित थीं। इन पर नियंत्रण के लिए हर एजेंसी का सर्वोच्च अधिकारी रेजीडेंट था। रियासतों के विलीनीकरण से राजस्थान, संघ के निर्माण के बाद पांच कमिश्नरियों में बदल दिया गया। तब जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर व कोटा संभाग बने। रियासती काल में एजेंटों की मंशा के अनुरूप हाकिम नियुक्त किए जाने लगे। इनका काम जनता को दबाए रखना था। हर रियासत का शासक अपनी सीमा में स्वामी होकर 'अन्नदाता' बने हुए थे। कतिपय बड़ी रियासतों की अपनी मुद्रा थी, अलग टकसाल थी। रियासतों की अपनी डाक सेवा, सेना, स्टाम्प, रेलवे, न्यायालय आदि के अलावा विधि-विधान, राजभाषा थी। राजकीय भाषा में अधिकतर उर्दू का प्रयोग होता था। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को बनी राजस्थान में हीरालाल शास्त्री की अगवाई में पहली सरकार रामनवमी 7 अप्रेल को गठित हुई। इस सरकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती छोटी-बड़ी रियासतों के प्रशासनिक तंत्र के एकीकरण के साथ राजाओं की संपत्ति व उनके वर्चस्व आदि का भी था। रियासतों की अंतरराज्यीय सीमा तथा चुंगी कर हटा कर उनके अलग अस्तित्व को समाप्त कर दिया गया। प्रचलित मुद्रा, स्टाम्प, डाक टिकट आदि तत्काल प्रभाव से राजकोष में जमा कराई गई। जागीरी व्यवस्था होने से छोटे-बड़े सामंत अपने अधिकारों में राजस्व वसूली के साथ लाग-बाग तथा दस्तूरियां भी वसूल करते थे। इन सबसे मुक्ति दिलाने का दायित्व सबसे बड़ा था। विलीन हुई रियासतों में सर्वोच्च न्यायाधिकार राजा में निहित था। कुछ ही रियासतों ने अपने पक्ष में उच्च न्यायालय स्थापित किए हुए थे। उनकी अपीलें संघ न्यायालय और प्रिवि कौंसिल में होती थी। 29 अगस्त 1949 को जोधपुर में एकीकृत उच्च न्यायालय का उद्घाटन राज प्रमुख महाराजा सवाई मानसिंह ने किया। उच्च न्यायालय के पहले मुख्य न्यायाधीश कैलाशनाथ वांचू नियुक्त किए गए। उन सभी राज्यों जयपुर, उदयपुर, कोटा व बीकानेर में उच्च न्यायालयों को अपने क्षेत्र के शेष रहे न्यायिक कार्यों को पूरा करने के लिए बेंच का प्रावधान किया गया। बाद में केवल राजधानी जयपुर में ही बेंच रहने दी गई, जो 1959 में हटाई गई। एक नवम्बर 1949 को विशेष अध्यादेश द्वारा राजस्व बोर्ड की स्थापना की गई, जिसमें अध्यक्ष के साथ दो सदस्य रखे गए। राजस्थान में सार्वजनिक सुरक्षा अध्यादेश 1949,राजस्थान एक्साइज एक्ट 1950, राजस्थान अफीम एक्ट 1950 के अलावा वन संरक्षण, काश्तकार, संरक्षण, भूमि विभाजन, राजस्थान भत्ता, राजस्थान विश्वविद्यालय आदि के अध्यादेश लाए गए। विलीन हुई बड़ी रियासतों को अपनी गठित सेनाएं थीं। स्वतंत्रता के बाद राजस्थानी सेना ने कश्मीर मोर्चे तथा हैदराबाद में की गई सैनिक कार्यवाही में प्रमुख रूप से भाग लिया। संयुक्त राजस्थान के निर्माण के बाद सेनाओं का

एकीकरण कर राजप्रमुख महाराजा सवाईमानसिंह को सर्वोच्च सेनापति बनाया गया। उन्होंने राजस्थानी सीमावर्ती क्षेत्रों का निरीक्षण किया तथा प्रमुख सैनिक स्थानों का भी दौरा किया। रियासतों का अपना कोई विश्वविद्यालय नहीं होने से 1929 में भारत सरकार के तत्वावधान में हाई स्कूल व इंटर के लिए अजमेर में बोर्ड ही एकमात्र शिक्षा का केंद्र था। डिग्री कॉलेजों का सम्बंध आगरा विश्वविद्यालय के साथ रहा। अग्रिम अध्ययन के लिए रियासतों के छात्रों का प्रवेश बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भी होने लगा। 1941 में अजमेर बोर्ड को विश्वविद्यालय बनाने का प्रस्ताव द्वितीय महायुद्ध के कारण वायसराय ने स्थगित कर दिया था। बाद में जयपुर राज्य के तत्कालीन प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल ने जयपुर में विश्वविद्यालय स्थापना की योजना प्रस्तुत की। जयपुर के प्रधानमंत्री रहे सर वी. टी. कृष्णमाचारी ने विश्वविद्यालय के काम को आगे बढ़ाया और राजस्थान के राजाओं से सहमति प्राप्त कर 1947 में राजपूताना विश्वविद्यालय का सृजन किया) 1952–53 तक राजस्थान में 8 स्नातक कॉलेज, 20 इंटर कॉलेज, 113 हाई स्कूल, 540 मिडिल स्कूल तथा 3540 प्राथमिक शालाएं स्थापित हो गई। थी। राजस्थान में पढ़े–लिखों की संख्या केवल 8 प्रतिशत थी। 5 मई 1949 को जन स्वास्थ्य के लिए चिकित्सा विभाग कायम किया गया। रियासतों में बड़े अस्पतालों तथा गांवों में औषधालयों को मिलाकर कुल 330 चिकित्सालय थे। पुनर्गठित विभाग के प्रथम इंस्पेक्टर जनरल तथा निदेशक डॉ. राजमल कासलीवाल नियुक्त किए गए, वे आजाद हिंद फौज में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के निजी चिकित्सक रहे थे। मेडिकल कॉलेज जयपुर में बन चुका था। जयपुर में 500 शैय्याओं के सवाई मानसिंह अस्पताल के अलावा जनाना अस्पताल, मानसिक चिकित्सालय व सेनिटोरियम भी बन चुका था। बड़ी रियासतों में कुल बड़े बीस अस्पताल थे। राजस्थान में आयकर का प्रावधान सबसे पहले 6 अप्रेल 1950 में लागू किया गया। वर्ष 1951–52 में कुल 17 हजार करदाता थे। राजस्थान में 24 जनवरी 1954 को राजस्थान लॉज अडाप्टेशन ऑर्डिनेंस द्वारा सारे राज्य में एक समान श्रम कानून लागू कर दिया गया। राजस्थान के निर्माण के समय राज्य में कुल कारें, बसें, मोटर साइकिल ट्रैक्टर्स आदि मिलाकर साढ़े दस हजार थीं।

मेवाड़ में रखी गई प्रजातंत्र की नींव

मेवाड़ एकमात्र ऐसी रियासत थी, जिसके शासक खुद को भगवान एकलिंगनाथ का दीवान मानते हुए जनता के लिए शासन करते थे। बप्पा रावल के समय से यह परम्परा थी। महाराणा उदयसिंह ने अलग महाराणा की घोषणा की। गोगुंदा में जनता व सामंतों ने महाराणा प्रताप को बतौर शासक चुना। मेवाड़ के राजतंत्र में भी लोकतंत्र व स्वतंत्रता के बीज निहित व सुरक्षित थे। महाराणा भूपालसिंह विशेष प्रयास नहीं करते तो दो–तीन रियासतों के पाकिस्तान में शामिल होने की पूरी आशंका थी।

Vipin Sharma
Director

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

Shreenath®
Travellers

Head Office : 9, Kan Nagar, Main Road, Near Sub City Center
Udaipur Ph. : 0294 - 2488333, 2489555

Daily Parcel
Service Available

Udaipur : 3, Yatri Hotel Udaipole, Udaipur 313 001
Ph. : 0294 - 2423181, 2423182

Fatehpura, Udaipur (Rameshwar)
Shreenath Travellers, Fatehpura
Ph. : 09571210045

भारतीय संस्कृति में राग-रंग का पर्व होली

डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव'

होली का पर्व राग-रंग का बहुत ही सुन्दर उत्सव है। प्राचीन काल से भारतवर्ष में यह एक लोक पर्व के रूप में प्रचलित है। कोयल के मधुर राग से गुंजित बसन्त की रंगीन और मादक प्रकृति की भूमिका में लोक संस्कृति का यह पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। बच्चे, बूढ़े और नर-नारी इस रंगीन लोकोत्सव के आनन्द में पूर्णत: डूब कर भाग लेते हैं और फाग खेलते हैं। स्वच्छंद उल्लास की उमड़ती धाराएँ भारतीय संस्कृति की भूमि का अभिषेक करती हैं। भाव की दृष्टि से यह यौवन का पर्व है, जो मन के तरूणों को विभोर बना देता है। मन से जो वृद्ध हैं वे इस पर्व की आलोचना करते हैं। सभ्यता के बाने में मन से वार्धक्य मुक्त उल्लास के इस पर्व के कुछ पक्षों में अश्लीलता और असभ्यता देखता है, यद्यपि वह भी इसके अन्य पक्षों के सौंदर्य की सराहना करता है।

यदि हम गंभीरता से राग-रंग के इस भारतीय पर्व के सौंदर्य का विश्लेषण कर सकें तो हमें पता चलेगा कि वस्तुत: यह पर्व भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता का प्रतीक है। इसके उचित मूल्यांकन के लिए हमें संस्कृति के स्वरूप को सम्पूर्ण रूप में समझना होगा। पश्चिम के मानसिक प्रभुत्व की धुंधली छाया में हम एक समृद्ध संस्कृति के उत्तराधिकारी होते हुए भी संस्कृति के संपन्न स्वरूप को समझने में असमर्थ बन गए हैं। संसार में प्रत्येक देश की संस्कृति की रचना वहाँ रहने वाले मनुष्यों की ही रचना है। किन्तु प्रकृति अथवा उसके विकार से प्रेरित रचनाओं में संकल्प भाव की स्वतंत्रता तथा समानता का योग अधिक रहता है। उनको ही संस्कृति के अंतर्गत मानना उचित है। इतना अवश्य है कि संस्कृति की ये रचनाएँ प्रकृति की भूमिका में ही रची जाती हैं। जीवन कला, और साहित्य आदि की जो रचनाएँ संकल्प, साम्य और प्रकृति के अद्वितीय के अतिरिक्त प्रकृति का एक जीवित रूप है। उसकी ओर भी उचित ध्यान नहीं दिया गया है। जीवंत संस्कृति को लोक-संस्कृति कहकर उसे ग्रामीण और वन्य लोगों के योग्य ठहरा दिया गया है।

भारतीय संस्कृति की जीवन-धारा आज भी अबाध गति से बही जा रही है। वर्ष के अनेक पर्व इस धारा के तीर्थ बने हुए हैं। होली का पर्व संस्कृति का तीर्थराज है। वर्ष के अनेक पर्व संस्कृति की जीवन रागिनी के स्वर हैं। होली के पर्व में यह रागिनी अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँचती है। होली का पर्व संस्कृति की पूर्णता को अंकित करता है। इस महापर्व में जीवन और संस्कृति अत्यन्त व्यापक और उत्कृष्ट रूप में समन्वित होते हैं। सभी पर्व मनुष्य जीवन के काव्य है। कला, साहित्य आदि की रचनाओं में जीवन को ही मुख्य विषय बनाया जाता है। होली का पर्व मनुष्य के जीवन का एक महाकाव्य है। इसमें जीवन की अत्यन्त व्यापक भूमिका में कला के सौंदर्य का सम्मिश्रण ही जीवन और संस्कृति के समन्वय की उच्चतम परिणति इस पर्व और जीवन की पूर्णता का प्रतीक बनाती है।

प्रकृति मनुष्य जीवन का आधार है। भोजन, काम आदि उसके मुख्य पक्ष है। संस्कृति मनुष्य के संकल्प की सभ्य और सौंदर्य से पूर्ण रचना है। अध्यात्म, कला, संगीत और उत्सव आदि सौंदर्य की ही रचनाएँ हैं। संस्कृति का संस्कार ही उसे उदार और सुन्दर बनाता है। भारतीय संस्कृति के लोक-जीवन में यह समन्वय सबसे अधिक सम्पन्न रूप में मिलता है। पर्वो की परम्परा भारतीय सांस्कृतिक जीवन की अद्वितीय सौंदर्य की बैजयंती माला है। होली का पर्व इस माला का सुमेरू है।

होलिका की इस विधि से करें पूजा

होलिका दहन 6 मार्च को है। रंगभरी होली 7 मार्च को खेली जाएगी। होलिका दहन में होलिका की पूजा की जाती है। सर्वप्रथम प्रथम पूज्य गणेशजी का स्मरण कर जहां पूजा करनी है, उस स्थान पर पानी छिड़क कर शुद्ध कर लें। पूजा करते समय पूजा करने वाले व्यक्ति को होलिका के पास जाकर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए। अग्नि उसके घर से ही मंगानी चाहिए, जहां संतान पैदा हुई हो-

चाण्डालसूति कागेहाच्छुशुहारितवह्निना।
प्राप्तायां पूर्णिमायां तु कुर्यात
तत्काष्ठदीपनम।।(स्मृतिकौस्तुभ)
होलिका मंत्र-
असृक्पाभयसंत्रस्तैः कृता त्वं होलि
बालिषैः।
अतस्तवां पूजायिष्यामि भूते भूतिप्रदा
भव।।

का उच्चाचरण करते हुए तीन परिक्रमा करें। इसी मंत्र के साथ अर्ध्य भी दे सकते हैं। ताम्बे के एक लौटे में जल, माला, रोली, चावल, गंध, फूल, कच्चा सूत, बताशे-गुड़, साबुत हल्दी, गुलाल, नारियल आदि का प्रयोग करना चाहिए। साथ में नई फसल के पके चने की बालियां व गेहूं की बालिया आदि भी सामग्री के रूप में रख लें। इसके बाद होलिका के पास गोबर से बने गडुलिए रख लें। होलिका दहन मुहूर्त समय में जल, मौली, फूल, गुलाल तथा ढाल व गडुलियों की कम से कम चार मालाएं अलग से घर में लाकर सुरक्षित रख लेना चाहिए। इनमें से एक माला पितरों की दूसरी हनुमानजी, तीसरी शीतला माता की तथा चौथी अपने परिवार के नाम की होती है। कच्चे सूत को होलिका के चारों ओर तीन या सात परिक्रमा करते हुए लपेटना चाहिए। फिर लौटे का शुद्ध जल और पूजन की अन्य सभी वस्स्तुओं को प्रसन्नचित्त होकर एक-एक करके होलिका को समर्पित करें। रोली, अक्षत व फूल आदि को भी पूजन में लगातार प्रयोग करें। गंध-पुष्प का प्रयोग करते हुए पंचापचार विधि से होलिका का पूजन किया जाता है। पूजन के बाद जल से अर्ध्य दें। होलिका दहन के बाद होलिका में कच्चे आम, नारियल, भुट्टे या सप्तधान्य, नई फसल का कुछ भाग-गेहूं, चना, जौ भी अर्पित करें। होली की पवित्र भस्म को घर में रखें। रात में गुड़ के बने पकवान प्रसाद गणेशजी को भेंट कर स्वयं ग्रहण करें।

पं. भानुप्रताप नारायण मिश्र

Harshit Joshi
Director
9992220895

N.D. Joshi
Director

shi
SYMBOL OF QUALITY

SHEETAL HOSE INDUSTRIES

Manufacturers of

All type of High & Medium Pressure Hose Assemblies

E-90-B, Mewar Industrial Area, Near Pllution Control Board, Office, Madri,
Udaipur - 313 003 (RAJ.) Tel.: 0294-2494056, Mob.: 94141 63056
E-mail: sheetalhose@gmail.com, Website: www.sheetalhose.com

बजट: 2023-24

आत्मनिर्भर भारत की रूपरेखा

अमित शर्मा

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी को संसद में वित्तीय वर्ष 2023-24 का और लगातार पांचवा आम बजट पेश किया। चुनाव से पहले आखिरी पूर्ण बजट होने के बावजूद लोक लुभावन ऐलान से बचने और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने को तरजीह दी गई है। सरकार की कोशिश रही कि वह लोगों के हाथ में खर्च करने योग्य ज्यादा रकम दे। साथ ही आर्थिक गतिविधियों को रफ्तार देने के लिए पूंजीगत खर्च बढ़ाया गया है।

45.03
लाख करोड़ रुपए का बजट पिछले वर्ष से 5.58 लाख करोड़ अधिक

बजट में पर्यटन से जुड़ी नई योजनाएं और बुनियादी ढांचे के विकास से संबंधित ऐलान भी हैं। इससे अर्थव्यवस्था को ओर मजबूती मिलने की संभावना है। चुनावी साल में सरकार ने एक तीर से कई निशाने साधने की कोशिश की है। बजट घोषणाओं में गरीबों, किसानों, युवाओं, महिलाओं, वरिष्ठ नागरिकों, नौकरीपेशा और कारोबारियों समेत सभी वर्ग को कुछ न कुछ राहत दी गई है। हालांकि विपक्ष ने इसे मात्र घोषणाओं वाला नकारात्मक बजट बताया है। कई मदों में कटौती की निंदा की है।

मध्यम वर्ग को बड़ी राहत

बजट में मध्यम वर्ग का खास ख्याल रखा गया है। आठ वर्ष बाद आयकर दरों में बदलाव करते हुए कर छूट का दायरा बढ़ाया गया है। वरिष्ठ नागरिकों की बचत योजनाओं का दायरा भी बढ़ा है। महिलाओं के लिए दो लाख रुपए की नई बचत योजना शुरू की गई है। दूसरी तरफ कई मदों में आंवटन घटा भी दिया गया है, ऐसा कर रक्षा खर्च में वृद्धि की गई है।

साल 2023-24 के लिए प्रस्तावित बजट में दिहाड़ी मजदूरों के लिए मनरेगा का बजट 73,000 करोड़ रुपए घटाकर 60,000 करोड़ रुपए कर दिया है। किसान के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई का बजट 12,954 करोड़ रुपए से घटाकर 10,787 करोड़ रुपए कर दिया है। यहीं नहीं, छोटे व्यापारियों को दी जाने वाली कर्ज योजना में आवंटित राशि भी 900 करोड़ रुपए कम कर दी गई है। शिक्षा के क्षेत्र में नेशनल एजुकेशन मिशन का बजट 39,953 करोड़ रुपए से कम करके 38,953 करोड़ कर दिया गया है। स्वास्थ्य मद में नेशनल हेल्थ मिशन का बजट बीते साल के 37,160 करोड़ से घटाकर 36,785 करोड़ किया गया है।

बजट में वैसे तो नीचे से लेकर ऊपर तक हर तबके को साधने की कोशिश की गई है। महंगाई-बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर मुखर दिखने वाले मध्यम वर्ग को आयकर में राहत प्रदान की गई है।

आमने सामने

अमृतकाल के पहले बजट में विकसित भारत का संकल्प पूरा करने का आधार है। बजट आकांक्षाओं से भरे समाज, किसानों, मध्यम वर्ग के सपनों को पूरा करेगा।

नरेन्द्र मोदी,
प्रधानमंत्री

केन्द्र सरकार ने मित्रकाल बजट पेश किया है। इसमें नई नौकरियों के सृजन के लिए कोई योजना नहीं है। महंगाई पर काबू पाने का कोई इंतजाम नहीं है।

राहुल गांधी,
कांग्रेस नेता

सप्तऋषि लक्ष्य

1. समग्र और समावेशी विकास
2. अंतिम व्यक्ति तक पहुंच
3. बुनियादी ढांचा विकास एवं निवेश
4. क्षमता को उजागर कर प्रोत्साहित करना
5. हरित विकास
6. युवा शक्ति को बढ़ावा
7. वित्तीय क्षेत्र को बढ़ावा

आएगा

रुपया आएगा एक रुपए में 58 पैसा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों से। इनमें जीएसटी से 17 पैसे, कारपोरेट कर से 15 पैसे, उत्पाद शुल्क से सात पैसे, सीमा शुल्क से चार पैसे और आयकर से 15 पैसे। 34 पैसा कर्ज और कन्या करों से। विनिवेश जैसे गैर-कर राजस्व से छह पैसे और गैर ऋण पूंजी प्राप्तियों से दो पैसे।

जाएगा

ब्याज चुकाने में 20 पैसे
करों और शुल्क में राज्यों का हिस्सा 18 पैसे
रक्षा के लिए आवंटन आठ पैसे
केन्द्रीय क्षेत्र की योजनाओं पर व्यय 17 पैसे

यदि बजट को समग्रता से देखें तो इसमें किसान, आदिवासी, सहकारिता, हरित और ग्रामीण अर्थव्यवस्था, महिला, बुजुर्ग, स्टार्टअप समेत समावेश विकास पर सर्वाधिक फोकस किया गया है। इसके पीछे आत्मनिर्भर भारत की राह को मजबूत करना है।

विधानसभा एवं लोकसभा चुनाव के मद्देनजर यह उम्मीद पहले से थी कि सरकार बजट में सभी वर्गों को कुछ न कुछ राहत प्रदान करेगी, लेकिन जिस प्रकार से बजट का ताना-बाना बुना गया है और बुनियादी ढांचे में निवेश को बढ़ाया गया है वह रोजगार सृजित करने के साथ-साथ अर्थव्यवस्था में तेजी प्रदान करने वाला है। हालांकि युवाओं के लिए बजट में सीधे नौकरियां बढ़ाने की घोषणा नहीं के बराबर है। एक सौ चालीस करोड़ लोगों के देश में हजार शिक्षकों की भर्ती की योजना को गिनवाना पर्याप्त नहीं, पर ऐसा नहीं है कि रोजगार का इंतजाम नहीं किया गया। छोटे उद्योगों के लिए कम से कम तीन बड़ी घोषणाएं की गई हैं, जिनका सकारात्मक असर नौकरियों पर पड़ेगा। कौशल प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया गया है। छोटी कम्पनियों को सस्ते लोन देने के लिए दो लाख करोड़ रुपए रखे गए हैं और इस तरह के उद्योगों को अब तमाम सरकारी फॉर्म भरते वक्त सिर्फ एक पैन नंबर भरकर काम चलाने की आसानी दी गई है। जब एमएसएमई मतलब छोटे और मझोले उद्योग आसानी से काम कर सकेंगे और बंद होने से बच जाएंगे, तो नौकरियां जरूर मिलेंगी। इसी तरह दस लाख करोड़ रुपए की पूंजी को नए काम में लगाने से नई नौकरियां पैदा होंगी। जब दुनियाभर में मंदी हो, ऐसे समय में भारत में साढ़े छह-सात फीसदी की विकास दर नौकरियां पैदा करने का भरोसा दिलाती है।

नौकरीपेशा लोगों के लिए आयकर स्लैब में वृद्धि स्वागत योग्य है। आयकर स्लैब को तार्किक बनाने की मांग विगत चार-पांच साल से हो रही थी, लेकिन आयकर वसूलने में सहजता की वजह से सरकार किसी नई रियायत के लिए तैयार नहीं थी। साल 2014 के बाद अब जो परिवर्तन हुआ है, उसके अनुसार नई आयकर स्कीम को स्वीकार करने वाले लोगों को सात लाख वार्षिक आय पर अब आयकर भुगतान की जरूरत नहीं पड़ेगी। दूसरा परिवर्तन यह है कि यदि आप पुरानी आयकर स्कीम को नहीं चुनेंगे, तो आप पर स्वत: नई आयकर स्कीम लागू हो जाएगी। हालाकि जिन लोगों की वार्षिक आय 15.5 लाख से ज्यादा है, उन्हें तीस प्रतिशत आयकर चुकाना पड़ेगा। संकेत स्पष्ट है कि पुरानी आयकर स्कीम की विदाई होने वाली है। इसका एक अर्थ यह भी है कि आयकर बचाने के लिए होने वाले निवेश में कमी आएगी। वैसे भी आयकर चुकाने वाले लोग ज्यादा नहीं हैं और जो सक्षम वर्ग है, वह आयकर बचाने में सबसे आगे रहता है। आयकर फॉर्म को सरल बनाने के साथ ही आयकर से जुड़े भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए भी ज्यादा सक्रिय होने की जरूरत है।

ये हुआ सस्ता

😐 लिथियम आयन बैटरी बनाने में इस्तेमाल सामान पर आयात शुल्क घटा।
😐 टीवी पैनल्स के ओपन सेल के पुर्जों पर सीमा शुल्क पांच से घटाकर 2.5 फीसद।
😐 मोबाइल फोन बनाने के लिए कुछ पुर्जों के आयात पर शुल्क में कमी।
😐 प्रयोगशाला में बने हीरों के उत्पादन में इस्तेमाल सीड पर शुल्क कम किया गया।
😐 निर्यात को बढ़ावा देने के लिए श्रिप फीड पर सीमा शुल्क कम होगा।

ये हुआ महंगा

☹ सिगरेट पर राष्ट्रीय आपदा आपात शुल्क 16 फीसद बढ़ाया गया।
☹ सोने की छड़ और प्लेटिनम से बने सामान पर शुल्क बढ़ाया गया।
☹ चांदी पर शुल्क छह से बढ़ाकर 10 फीसद किया गया। बने सामान पर भी शुल्क बढ़ा।
☹ कंपाउंडेड रबर पर शुल्क को 10 फीसद से बढ़ाकर 25 फीसद किया गया।
☹ रसोई में इलेक्ट्रिक चिमनी पर आयात शुल्क 7.5 फीसद से बढ़ाकर 15 फीसद किया गया।

केन्द्रीय बजट में केवल मीडिया में हेडलाइन बनाने वाले जुमलों का प्रयोग है। कोरोना काल में संजीवनी साबित हुई महात्मा गांधी नरेगाा योजना में केन्द्र सरकार द्वारा बजट प्रावधान 33 प्रतिशत (लगभग राशि 30,000 करोड़) कम करना साबित करता है कि यह बजट गरीब, भूमिहीन किसान एवं आमजन विरोधी है। कृषि और कृषक कल्याण से संबंधित बहुत सारी थोथी घोषणाएं की गइ हैं।

अशोक गहलोत,
मुख्यमंत्री, राजस्थान

दो-चार राज्यों के चुनाव को देखकर यह बजट पेश किया गया है, जुमला बजट है। महंगाई रोकने के लिए इस बजट में कुछ नहीं है।

मल्लिकार्जुन खड़गे,
कांग्रेस अध्यक्ष

केन्द्र सरकार का यह चुनावी बजट है। इसमें जनकल्याण की कोई योजना नहीं है। हर बार की तरह यह बजट भी मृग मरीचिका ही है।

अखिलेश यादव,
सपा प्रमुख

केन्द्रीय बजट भविष्यवादी नहीं है। पूरी तरह से अवसरवादी, जनविरोधी और गरीब विरोधी है। यह केवल एक वर्ग के लोगों को लाभान्वित करेगा।

ममता बनर्जी,
मुख्यमंत्री पश्चिम बंगाल

'बसंती' सराही तो गई, मगर अपनाई नहीं गई

हेमामालिनी, प्रसिद्ध अभिनेत्री व सांसद

एक अभिनेत्री के तौर पर मैने तरह-तरह के किरदार निभाए हैं। मगर मेरी सबसे यादगार भूमिका शोले की बसंती है। वह साहसी तांगेवाली एक सशक्त महिला की प्रतिनिधि पात्र है, जो अपनी शर्तों पर जीती है और अपनी ही शर्तों पर काम करती है। उसकी अपनी एक राय है, और उसे वह पूरी बेबाकी से अभिव्यक्त भी करती है। बरहाल, रूपहले परदे की खुदमुख्तार और दिलेर बसंती के किरदार को तो काफी लोगों ने सराहा और पसंद किया, मगर अफसोस! आजादी के बीते साढ़े सात दशकों में औरतों की असल जिंदगी में जिस तब्दीली को हम सब देखना चाहते हैं, वह मुमकिन न हो सकी।

विरोधाभासों और विसंगतियों से भरे मुल्क के रूप में हमने अपने देश की औरतों को अब तक वह माहौल नहीं दिया, जिसमें वे अपनी पसंद की जिंदगी चुन और जी सकें। ज्यादातर औरतों को आर्थिक मुख्यधारा से अलग रखकर हमने देश के आर्थिक व समावेशी विकास की राह में भी रूकावटें खड़ी कीं। और वह भी तब, जबकि एक के बाद दूसरी सरकारों ने औरतों की भूमिका को परिवर्तनकारी माना, मगर उन्हें अपने सपने पूरे करने के लिए बुनियादी इन्फ्रास्ट्रक्चर नहीं मुहैया कराया।

अध्यात्म के शिखर तक पहुंचने के लिए शिव और शक्ति के महामिलन का वर्णन करते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा था, 'शक्ति के बिना जगत का उत्थान संभव नहीं।' अगर किसी ने शक्ति की मुक्ति के महत्व को समझा है, तो वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं। अपने एक 'मन की बात' संबोधन के तहत उन्होंने बताया था कि कैसे छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित जिले दंतेवाड़ा में आदिवासी औरतों असाधारण काम कर रही हैं। हालांकि, दंतेवाड़ा कभी खून-खराबे और हिंसा से बुरी तरह ग्रस्त इलाका भी रहा है, मगर वहां की औरतें अपने कारोबार कर रही हैं और आत्मनिर्भर बन रही हैं। वे अपने जीवन के फैसले खुद ले रही हैं। आदिवासी औरतें रिक्शा चला रही हैं और आर्थिक-सामाजिक रूप से खुद को सशक्त बना रही हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने स्थानीय प्रशासन की उन कोशिशों की भी सराहना की, जिसमें उन्होंने स्त्रियों की संभावनाओं को देखते हुए प्रशिक्षण देना शुरू किया है।

हममें से जिन लोगों ने देश के आदिवासी इलाकों को साल-दर-साल हिंसा से आक्रांत देखा है, वहां कामयाबी की ये कहानियां उम्मीद जगा रहीं हैं। सरकार ने समाज के सबसे वंचित तबके की औरतों के लिए समान अवसरों की जमीन तैयार की है। सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं का सबसे ज्यादा फायदा महिलाओं ने उठाया है। इससे यह भी पता चलता है कि वे अधिकतर हासिल करने के लिए आगे आ रही हैं। मुद्रा योजना इस लिहाज से काफी महत्वपूर्ण है कि वह महिलाओं के उद्यमी बनने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। इसे जिन 12 करोड़ लोगों ने अपनाया है, उनमें 76 फिसदी से ज्यादा महिलाएं हैं। यह किसी मौन क्रांति से कम नहीं।

महिलाओं के इस तरह विकास के लिए आगे आने को सरकार ने देश की विकास गाथा का एक पैमाना बना दिया है। प्रधानमंत्री जब फैसले लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी की बात करते हैं, तो इसमें कोई औपचारिकता नहीं होती। उन्होंने इसे करके भी दिखाया है। आज देश के महत्वपूर्ण मंत्रालय भी महिलाएं संभाल रही हैं।

पिछले वर्षों में महिलाओं की भागीदारी के धरातल का जो विस्तार हुआ है, उसमें भारतीय सेना भी शामिल है। अभी तक शॉर्ट सर्विस कमीशन में जिन महिला अधिकारियों का चयन होता है, उनके लिए सरकार ने स्थायी कमीशन की घोषणा भी की है। संवाद भी शुरू हुआ है, जिसने समाज की कई असहज करने वाली सच्चाईयों को हमारे सामने रखा है। चाहे मामला तीन तलाक का हो या फिर निकाह हलाला का, इन्हें लेकर सिर्फ मुस्लिम महिलाएं ही नहीं, बल्कि बराबरी में विश्वास करने वाले सभी लोग चिंतित रहे हैं। इन पर फैसलों ने मुस्लिम महिलाओं को एक बड़ी ताकत दी है। महिलाओं की अगुवाई वाले इसी विकास की अवधारणा को आगे ले जाने की जिम्मेदारी अब हर किसी को संभाल लेनी चाहिए। एक आत्मनिर्भर बसंती अब सिर्फ हमारी कल्पनाओं में नहीं होनी चाहिए।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

JKCement

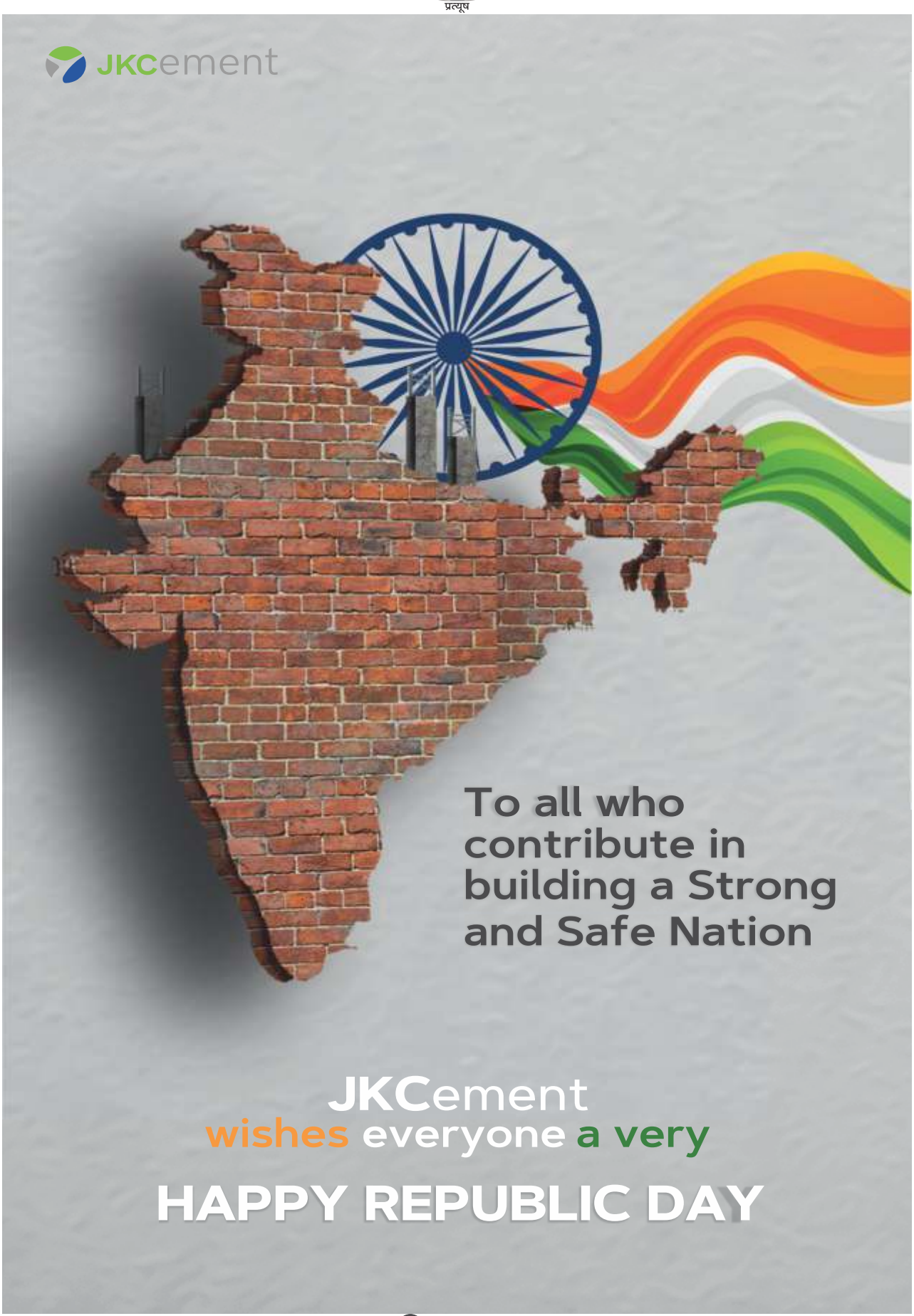
To all who
contribute in
building a Strong
and Safe Nation
JKCement
wishes everyone a very
HAPPY REPUBLIC DAY

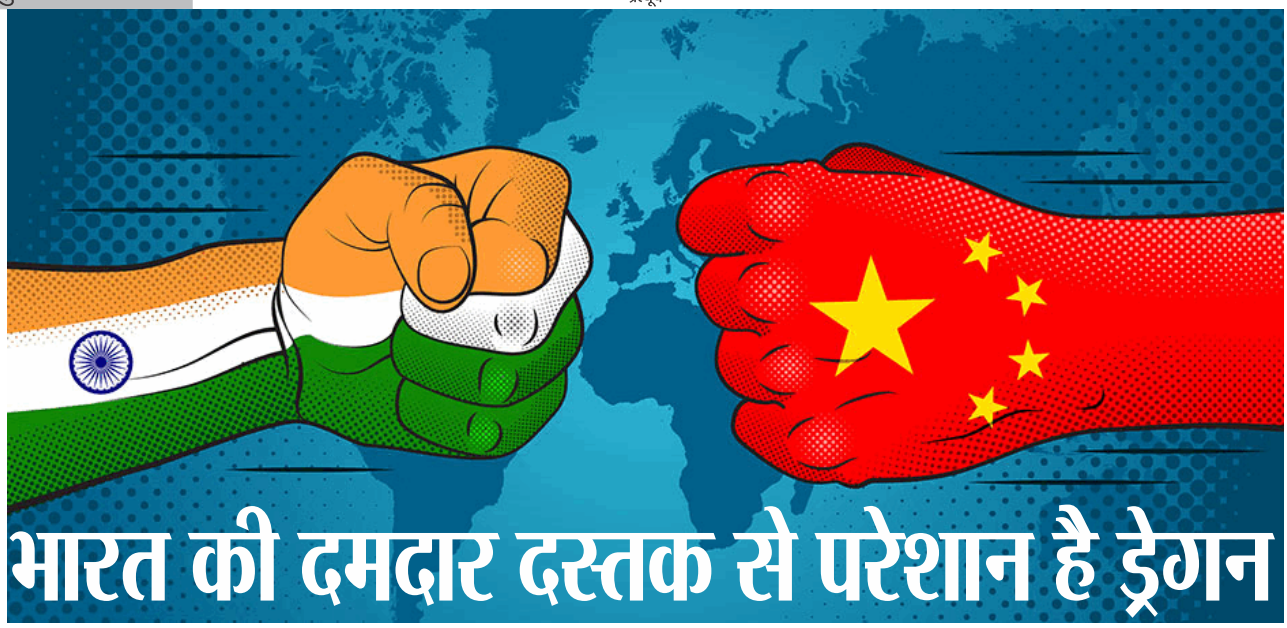

भारत की दमदार दस्तक से परेशान है ड्रैगन

ओमपाल

भारतीय सेना के माकूल जवाब के बाद चीन अरुणाचल प्रदेश के तवांग से चीन का उल्टे कदम लौट जाना ही उसके पास एक मात्र विकल्प था। मगर खतरा अभी टला नहीं है। वह 1962 में कब्जाई हजारों वर्ग किलोमीटर भूमि के अलावा भी हमारे उन इलाकों पर पैनी नज़र गड़ाए बैठा है, जहां सामरिक दृष्टि से हम लाभ की स्थिति में हैं। यह उसकी पुरानी रणनीति है। तवांग में उसकी ऐसी ही मंशा थी। अतएव हर पल हमें सतर्क रहने की जरूरत है।

भारत-चीन की सीमा पर पिछले कुछ समय से तनाव बढ़ रहा है और खासतौर पर तवांग की घटना के बाद कुछ ज्यादा ही। इसमें कोई दो राय नहीं कि भारतीय सेना के जवानों ने तवांग में चीनी घुसपैठ के प्रयास को साहसपूर्वक न केवल विफल कर दिया, बल्कि अपने शक्ति शौर्य का जबरदस्त प्रदर्शन भी किया। इससे भारतीय सेना का आमजन में गौरव बढ़ा है और देशवासियों में पहले से अधिक आत्मविश्वास का संचार भी हुआ है।

फिर भी अभी राष्ट्र की सुरक्षा के दृष्टिकोण से कुछ चिंताएं आमजन के मस्तिष्क में हैं। चीनी सैनिक निरंतर घुसपैठ के प्रयास में लगे हुए हैं। पिछले वर्ष भारत की सीमा में जो सैनिक घुस आए थे और जिन्होंने लगभग दो से ढाई सौ वर्ग किलोमीटर जमीन पर कब्जा किया था, वहां से चीनी सैनिकों को भारत अभी तक हटा नहीं सका है। चीनी और भारतीय सैनिक अधिकारियों के बीच निरंतर बैठकें हुई हैं, उनमें यह समझौता भी हुआ कि भविष्य में चीनी और

भारतीय सैनिकों के बीच अपनी-अपनी सीमाओं की सुरक्षा को लेकर अगर कोई मतभेद या विवाद होता है तो किसी भी पक्ष से आग्नेयास्त्रों का प्रयोग नहीं किया जाएगा। यानी केवल शारीरिक बल से एक-दूसरे को रोकने का प्रयास किया जाएगा। यह समझौता युद्ध रोकने के दृष्टिकोण से तो उपयोगी हो सकता है, पर भारतीय सीमाओं के या पुरानी कब्जाई हुई जमीन वापस लेने के दृष्टिकोण से उपयोगी नहीं कहा जा सकता।

एलएसी को लेकर चीन की सामरिक व रणनीतिक मंशा बिल्कुल स्पष्ट है। वह किसी भी तरह सीमावर्ती इलाकों में अपनी स्थिति मजबूत बनाकर उनकी मौजूद स्थिति (यथास्थिति) को न सिर्फ बदलना चाहता है, बल्कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर जहां-जहां हम लाभ की स्थिति में हैं, वहां-वहां वह अपनी पकड़ बनाकर खुद को मजबूत बनाना चाहता है। यह उसकी पुरानी रणनीति रही है, और इस मकसद को पूरा करने के लिए वह नियंत्रण रेखा पर कुछ-न-कुछ हरकतें करता रहता है।

साल 1993 और 1996 में हुए दो बड़े समझौतों के बाद यह माना जाने लगा था कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर अब थोड़ी सी शांति आ गई है। 2003 व 2007 के समझौते ने इस सोच को और मजबूती दी। मगर 2012 में जब चीन पर शी जिनपिंग का शासन शुरू हुआ, तब से बीजिंग का रुख काफी आक्रामक है। जिनपिंग चाहते हैं कि चीन विश्व शक्ति बने। इसके लिए वे दो मोर्चों पर काम करना चाहते हैं,। पहला चीन को ताकतवर बनाना, और दूसरा, जो इलाके उसकी समृद्धि के लिए आवश्यक हैं, उनको किसी-न-किसी तरह अपने अधीन करना। चूंकि चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा को स्वीकार नहीं करता, इसलिए जिन-जिन सीमावर्ती इलाकों को वह सामरिक

या रणनीतिक तौर पर अपने लिए मुफीद मानता है, वहां उकसाने की कार्रवाई करता रहा है।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अधिवेशन में जिनपिंग ने चीन के भविष्य की जो रूपरेखा पेश की, उससे दुनियाभर में चिंता है। उन्होंने दो तरह के लक्ष्य सामने रखे हैं। पहला, 2035 तक चीन को विकासशील देशों की कतार से निकालकर एक ऐसा देश बनाना, जिसमें आम जनता गरीब नहीं, बल्कि मध्यवर्गीय हो, यानी उसकी आमदनी दुनिया के पैमाने पर अमीर देशों के मीडिल क्लास जैसी ही हो, साथ ही, चीन की सेना का आधुनीकिकरण भी 2035 तक करना है। लेकिन इससे बड़ा दूसरा लक्ष्य विश्व शक्ति बनने का उन्होंने 2049 के लिए रखा है।

याद रखना चाहिए कि पिछले बीस सालों में चीन ने काफी तेजी से तरक्की की है और जिनपिंग के सत्तासीन होने के बाद के दस साल में चीन की अर्थव्यवस्था का आकार दो दुगुना हुआ है। साल 2012 में जब वह कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बने, तब से चीन की जीडीपी 8.53 ट्रिलियन या लाख करोड़ डॉलर थी। अब यह 17 लाख करोड़ डॉलर के पार जा चुकी है। उसने जापान को काफी पीछे छोड़ दिया है और

अमेरिका के नजदीक पहुंचता जा रहा है।

नब्बे के दशक के पहले से ही भारत-चीन के सीमा विवाद को हल करने के लिए एक सत्ता पोषित बौद्धिक धड़ा कहने लगा था कि भारत-चीन के बीच जो सीमा रेखा अंग्रेजों ने खींची थी, जिसे मैकमोहन लाइन कहा जाता है, वह छोड़ देना चाहिए और जो भूमि जिसके नियंत्रण में है, वहां तक उसके अधिकार को मान लेना चाहिए। यानी भारत की जो लगभग 30-40 हजार वर्ग किलोमीटर भूमि चीन ने 1962 से कब्जाई है, उसे चीन का मान लेना चाहिए। यह एक प्रकार से समझौते या व्यापार के नाम पर सीधा भारतीय भूमि का समर्पण था। राम मनोहर लोहिया मैकमोहन लाइन को अंग्रेजों द्वारा खींची गई गलत रेखा मानते थे और इसे वास्तविक सीमा नहीं मानते थे। वे कहते थे कि भारत और चीन के बीच सीमा रेखा मैकमोहन लाइन के आगे तक है, जिसमें संपूर्ण हिमालय और उसके आगे तक की मानसरोवर सहित भारतीय भूमि है। चीन अब भी भारतीय भूमि को हड़पने की कोशिश में है। तवांग की घटना इसका साफ संकेत है। केन्द्र सरकार और सेना को इसके माकूल जवाब की रणनीति तैयार करनी होगी। इस पुरानी बीमारी का इलाज जरूरी हो गया है।

परम्पराओं का एक सुखद पहलू: गणगौर

डॉ. मोनिका शर्मा

राजस्थान की माटी में संगीत व कला का ऐसा समन्वय है कि उसकी सुगंध से हर कोई प्रभावित होता है। लोक संस्कृति का दिग्दर्शन कराते हैं, यहां के पर्व, त्योहार, उत्सव, संगीत और नृत्य। गणगौर राजस्थान का एक प्रमुख लोकपर्व है। इसका अर्थ प्राय: यही समझा जाता है कि इस दिन माता पार्वती की पूजा होती है। वैसे गणगौर का शाब्दिक अर्थ होता है गण अर्थात गणों के अधिपति। अतएव यह पर्व शिव और पार्वती की संयुक्त पूजा का पर्व है। शिव को यहां ईसर और पार्वती जी को गणगौर के रूप में नामांकित किया गया है। रिश्तेदारी हो या दोस्ती का जुड़ाव, औरतें साथ होते हुए भी एक-दूजे के साथ को खुलकर नहीं जी पाती। ऐसे में सारी औपचारिकताओं से परे गणगौर, उनके मन को साझी खुशियों की पोटली खोलने वाला त्योहार है। जो हर बरस स्त्रीमन को नया उल्लास देने आता है। ठिठके-सहमे जीवन में हंसी-ठिठोली और मान-मनुहार का यह पर्व सुखद बदलाव बनकर आता है। विवाह के बाद पहली गणगौर की पूजा हर नववधू के लिए खास उत्साह लेकर आती है। राजस्थान में आज भी लड़कियां शादी के बाद पहली गणगौर की पूजा के लिए मायके जाती हैं। यह वाकई सुखद है कि यह त्योहार पूजा-अर्चना के अलावा भी अपने में स्त्रीत्व के कई खुशहाल रंग समेटे है। इस पर्व के बहाने मायके आई बेटियां अपनी सखियों से मिलती हैं, सुख-दुख साझा करती हैं। घर-आंगन से जुड़ने का यह मौका देता है।

होली के दूसरे दिन से ही हर घर में इस पर्व के रंग बिखरते हैं। लोकगीत सुनाई देने लगते हैं। यह स्त्रीमन का उल्लास ही तो है कि सज-धज कर रोज सुबह-सुबह महिलाएं गणगौर का पूजन करती हैं। हंसना बतियाना, नाचना, गाना और सखियों के संग हर दुख को भूलकर पति और परिवार के लिए आशीर्वाद मांगना, उन्हें भी एक दूजे से जोड़ देता है।

लोकगीत: गणगौर पूजा में गीतों-दोहों में ही मन की बातें कही जाती हैं। गीतों में बहू-बेटियां अपने परिजनों के नाम भी लेती हैं। पूजन के समय लोकगीत ही मंत्रों की तरह गाए जाते हैं।

खेलन द्यो गणगौर, भंवर म्हाने पूजण द्यो गणगौर
म्हारा दादोसा कै मांडी गणगौर रै रसिया,
घड़ी दोय खेलबा ने जाबा द्यो...
म्हारा बाबोसा कै मांडी, गणगौर रै रसिया,
घड़ी दोय खेलबा नै जाबा द्यो...।

गीत के माध्यम से नवविवाहिता के भाव उस कसक को बताते हैं जो उसे सखियों के बीच जाकर फिर खुलकर जीने की चाह के लिए है। अब इस गीत के भाव को पढ़ें और समझें...

म्हारा माथा नै मैमंद ल्यावो म्हारा
हंजा मारू येई रहो जी।
म्हारा हाथां नै चुडलो ल्यावो म्हारा हंजा
मारू येई रहो जी।
गणगौरयां रो बडो हैं त्युंआर म्हारा
हंजा मारू येई रहो जी...

इस मुखड़े में गणगौर के पर्व पर साज-शृंगार के सामान ले आने की बात नवविवाहिता कह रही है। नि:संदेह स्त्री जीवन में खुशियां बिखेरने वाला यह पर्व वैवाहिक जीवन की पूर्णता का भी पर्व है।

यूं शुरू हुई यह परम्परा

गणगौर कब से मनाया जाता हैं, इस संबंध में लोक मान्यताएं, पौराणिक कथन किंवदंतियां हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार पार्वतीजी का विवाह जब शिवजी से हुआ तब उनकी मनोकामना पूरी हुई थी। एक पक्ष यह भी कहता है कि पार्वतीजी ने शिवजी को अपना पति मानकर चाहा कि हर जन्म में वे ही उन्हें पति रूप में प्राप्त हों। इस मनोकामना को पूर्ण करने के लिए उन्होंने गणगौर की पूजा का व्रत लिया। उनकी इच्छा पूर्ण हुई और भगवान शिव से उनका विवाह हो गया। दूसरे पक्ष की मान्यता है कि विवाह के बाद पार्वतीजी पीहर आईं तो सभी सहेलियों ने गाते-बजाते उनका स्वागत किया। तभी से यह पर्व मनाया जाता है।

Happy Holi

With Best Compliments From

Mohit Patel

Jitendra Patel

Celebration Glorious 30 years of Successful Achievements & Customer Satisfaction

PATEL PHOSCHEM LIMITED

Plant I- Umarda, Jhamarkotra Road, Udaipur (Raj.)

Plant II- Khemli, Udaipur (Raj.)

Manufacturer of Single Super Phosphate Powder & Granules, Phosphoric Acid & Other Fertilizers

PATEL ENTERPRISES

Workshop- Zinc Chouraha, Debari, Udaipur (Raj.)

Plant- Gudli Industrial Area, Udaipur (Raj.)

Manufacturer of Fertilizer, Chemical and Synthetic Gypsum Plant & Machineries

Office: 113-114, 1st Floor, Ostwal Plaza-I, Airport Road, Sunderwas, Udaipur, Rajasthan Pin- 313 001, Contact - 7426968982
Email: patelphoschem@gmail.com, info.paterenterprises@gmail.com

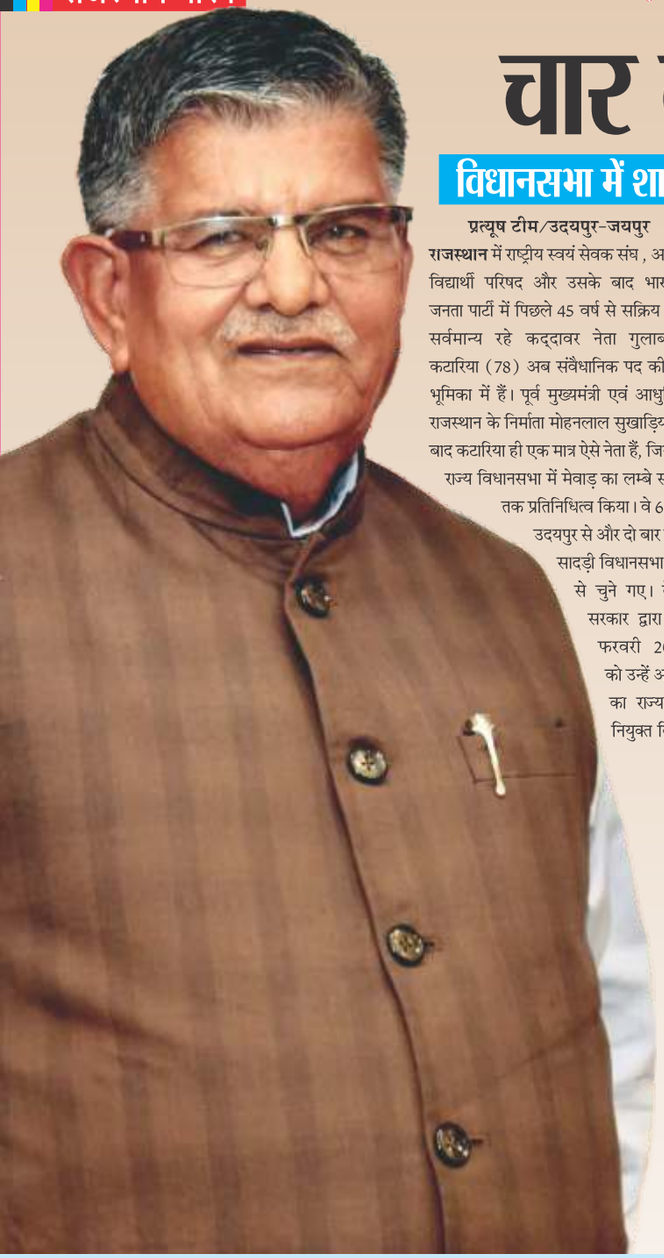

चार दशक की राजनीति के बाद नई भूमिका में कटारिया

विधानसभा में शानदार विदाई, असम में ली राज्यपाल पद की शपथ

प्रत्यूष टीम/उदयपुर-जयपुर

राजस्थान में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, अ.भा. विद्यार्थी परिषद और उसके बाद भारतीय जनता पार्टी में पिछले 45 वर्ष से सक्रिय और सर्वमान्य रहे कद्दावर नेता गुलाबचंद कटारिया (78) अब संवैधानिक पद की नई भूमिका में हैं। पूर्व मुख्यमंत्री एवं आधुनिक राजस्थान के निर्माता मोहनलाल सुखाड़िया के बाद कटारिया ही एक मात्र ऐसे नेता हैं, जिन्होंने राज्य विधानसभा में मेवाड़ का लम्बे समय तक प्रतिनिधित्व किया। वे 6 बार उदयपुर से और दो बार बड़ी सादड़ी विधानसभा क्षेत्र से चुने गए। केन्द्र सरकार द्वारा 11 फरवरी 2023 को उन्हें असम का राज्यपाल नियुक्त किया गया। उन्हें गुवाहटी में 22 फरवरी को मुख्य न्यायाधीश संदीप मेहता ने पद की शपथ दिलाई। आदिवासी अंचल के एक स्कूल में मास्टर से सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने वाले कटारिया जल्दी ही राजनीति के भी मास्टर बन गए। कटारिया देलवाड़ा (जिला राजसमंद) के मूल निवासी हैं और वहीं उनकी शादी हुई। परिवार में पत्नी अनिता, तीन भाई और पांच बेटियां हैं। वे चार दशक के राजनीतिक कॅरियर में महज चार साल (1985 से 1989 तक) बिना सरकारी पद रहे। इसके अलावा वे हमेशा विधायक या सांसद रहे हैं। उनके अलावा परिवार से कोई भी राजनीति में नहीं है। 13 अक्टूबर 1944 को जन्मे कटारिया ने देलवाड़ा में स्वयंसेवक संघ के रूप में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। इसके बाद वे पढ़ाई के लिए उदयपुर आए और यहां संघ के नगर कार्यवाह रहे। भाजयुमो के बाद भाजपा में प्रदेश मंत्री, महामंत्री व प्रदेशाध्यक्ष बने। वे भैरोंसिंह शेखावत की सरकार में शिक्षामंत्री रहे। फिर वसुंधरा राजे सरकार में पंचायतराज मंत्री और गृहमंत्री का जिम्मा भी निभाया। गुलाबचंद कटारिया 1977 में पहली बार विधायक चुने गए थे और उसके बाद 1980 से 1985, 1993 से 1998, 1998 से 2003, 2008 से 2013, 2013 से 2018 और 2018 से 16 फरवरी 2023 तक विधायक रहे। इसके अलावा कटारिया 1989 से 1993 तक उदयपुर से लोकसभा सदस्य भी रहे। 2009 से 2013 तक 2018 से 16 फरवरी 2023 तक नेता प्रतिपक्ष के पद पर रहे। कटारिया संगठन में भी विभिन्न पदों पर रहे हैं। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत भारतीय जनता युवा मोर्चा से की थी। वर्ष 1977 से 1980 तक भारतीय जनता युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष रहे। 1980 से 1985 तक राजस्थान भाजपा के सचिव, 1985 से 1993 तक महासचिव और 1999 से 2000 तक प्रदेश अध्यक्ष भी रहे। चार दशक की राजनीति के दौरान कटारिया का पक्ष हमेशा मजबूत रहा। उनके समर्थक हर बाद बदलते रहे। कई लोग विरोधी हुए तो कई समर्थन में जुटते रहे। पार्टी में उनकी पकड़ और दबदबा इतना रहा कि उनकी बात को कोई टाल नहीं सकता था। पूरे जिले में पार्टी पदाधिकारी ही नहीं, तमाम मोर्चों के पदाधिकारी और हर छोटे-बड़े टिकट वे ही तय करते रहे। उनके दांवपेच से विरोध खेमा हमेशा बौखलाहट में रहा। वे कुशल वक्ता हैं। लाग-लपेट से दूर कई बार अपने भाषण को लेकर विवादों में रहे और बाद में सहज रूप से माफी भी मांगी। वे कार्यकर्ताओं व जनता के बीच ज्यादा से ज्यादा रहने की कोशिश करते रहे। राजस्थान विधानसभा में उन्होंने जनता से जुड़े मुद्दों को बड़ी बेबाकी से उठाया और सामने वाले को निरुत्तर भी किया। हाल ही में उन्होंने पेपरलीक मामले को लेकर सरकार को इस तरह घेरा कि मुख्यमंत्री को भी इस दिशा में ठोस कदम उठाने की घोषणाएं करनी पड़ी।

त्याग पत्र, सम्मान में भोज

असम के राज्यपाल मनोनीत होने के बाद 16 फरवरी को गुलाबचंद कटारिया ने राजस्थान विधानसभा से इस्तीफा दे दिया। कटारिया ने दिन में विधानसभा की कार्यवाही में हिस्सा लिया। प्रश्नकाल के बाद शून्यकाल में भी वे कुछ देर रूके। दोपहर तीन बजे विधानसभा स्थगित होने तक वे सदन में मौजूद रहे। इसके बाद उन्होंने स्पीकर डॉ. सी.पी. जोशी को त्यागपत्र दिया। शाम को विधानसभा मुख्यद्वार पर उनके साथ सभी विधायकों की ग्रुप फोटो ली गई। इस दौरान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत भी मौजूद रहे। वहीं शाम को कटारिया के विदाई समारोह के बाद परिसर में विधानसभा अध्यक्ष की ओर से रात्रिभोज दिया गया। इस दौरान सम्पूर्ण विधानसभा भवन को बहुरंगी लाइटों से जगमग किया गया। कटारिया ने अपनी ओर से भी विधानसभा सदस्यों को आभार भोज दिया।

जनता के प्रति समर्पण जरूरी

विधानसभा में विदाई एवं सम्मान समारोह में कटारिया ने कहा कि जनप्रतिनिधि सदन में जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। जनता उन्हें अपनी समस्याएं उठाने के लिए सदन में भेजती है। यदि हम जनता की सेवा करना चाहते हैं तो सदन को अधिक से अधिक चलाना चाहिए। सदन में पक्ष और विपक्ष का संघर्ष वैचारिक होता है न कि व्यक्तिगत। जनता के प्रति समर्पण ही हमारी सबसे बड़ी कमाई है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि राज्यपाल के रूप में अपनी संवैधनिक जिम्मेदारियों का पूरी निष्ठा के साथ निर्वहन करेंगे। समारोह को संबोधित करते हुए विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी ने कहा कि हमें वैचारिक दृटि से संसदीय लोकतंत्र को मजबूत करना चाहिए। जोशी ने विश्वास जताया कि राज्यपाल के रूप में कटारिया इस पद को और ऊंचाईया प्रदान करेंगे। समारोह में संसदीय कार्यमंत्री शांति धारीवाल ने आभार व्यक्त करते हुए विधानसभा सदन से जुड़े कटारिया के विभिन्न प्रसंगों का उल्लेख किया। उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के नेता पुखराज, सीपीआई (एम) के बलवान पूनिया, भारतीय ट्राइबल पार्टी के राजप्रसाद एवं सीपीए की राजस्थान शाखा के सचिव संयम लोढ़ा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

उदयपुर में स्वागत

असम का राज्यपाल नियुक्त होने के बाद गुलाबचंद कटारिया 18 फरवरी को उदयपुर आए। इस दौरान भारतीय जनता पार्टी द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। डबोक एयरपोर्ट से वाहन रैली निकाली गई। 19 फरवरी को नागरिक अभिनंदन किया गया। इस दौरान जिलाध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली, सहकारिता प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक प्रमोद सामर, उपमहापौर पारस सिंघवी, शहर जिला उपाध्यक्ष तख्तसिंह शक्तावत, शहर जिला महामंत्री गजपालसिंह राठौड़, विधायक फूलसिंह मीणा, जिला प्रमुख संभाग के प्रधान, कार्यकर्ता, विधायक धर्मनारायण जोशी, प्रताप गमेती, चित्तौड़ सांसद सीपी जोशी, देहात जिलाध्यक्ष चन्द्रगुप्त सिंह चौहान, ओबीसी मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष जगदीश शर्मा, शेख शब्बीर मुस्तफा मौजूद थे। कटारिया ने हवाई अड्डे पर महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। उसके बाद सूरजपोल पर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि दी। यहां से कटारिया का कारवा रैली के रूप में बड़बड़ेश्वर मंदिर पहुंचा, जहां स्नेहभोज हुआ। 20 फरवरी को उदयपुर देहात जिला भाजपा की ओर से एवरेस्ट गार्डन में उन्हें सम्मानित किया गया। 22 फरवरी को वे विशेष विमान से परिवार सहित असम (गुवाहटी) के लिए रवाना हुए।

केन्द्र सरकार ने 11 फरवरी को 13 राज्यों के राज्यपाल बदले, उनमें नौ ऐसे राज्य हैं जहां जल्द चुनाव होने हैं। सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति अब्दुल नजीर और चार भाजपा नेता समेत छह शख्सियतों को पहली बार राज्यपाल पद की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

शिवप्रताप शुक्ल

गोरखपुर जिले के मूल निवासी और पूर्वांचल के भाजपा नेता पंडित शिव प्रताप शुक्ल को हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया है। शुक्ल 2014 से 19 तक मोदी सरकार में मंत्री रहे

गुलाबचंद कटारिया

राजस्थान में भाजपा के सबसे कद्दावर नेताओं में से एक गुलाबचंद कटारिया को असम का राज्यपाल बनाया गया है। राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रहे कटारिया आठ बार विधायक रहे। वे 2003 से लगातार उदयपुर शहर का विधानसभा में प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

जस्टिस एस. अब्दुल नजीर

सुप्रीम कोर्ट से सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति एस. अब्दुल नजीर आंध्र प्रदेश के राज्यपाल बनाए गए हैं। न्यायमूर्ति नजीर उच्चतम न्यायालय की उस पीठ का हिस्सा थे जिसने अयोध्या मामले में ऐतिहासिक फैसला सुनाया था। वह उस बेंच का भी हिस्सा थे जिसने तीन तलाक को अपराध घोषित किया था।

लक्ष्मण प्रसाद आचार्य

भाजपा नेता लक्ष्मण प्रसाद आचार्य सिक्किम के नए राजयपाल होंगे। वाराणसी के रामनगर निवासी संघ से जुड़े लक्ष्मण आचार्य ने राम मंदिर आंदोलन में भी अहम भूमिका निभाई थी।

सी.पी. राधाकृष्ण

भाजपा नेता सी.पी. राधाकृष्णन झारखंड के नए राज्यपाल होंगे। वे कोयंबटूर से भाजपा के दो बार के लोकसभा सदस्य हैं।

लेफ्टिनेंट जनरल परनाइक

राष्ट्रपति ने सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल कैवल्य त्रिविक्रम परनाइक को अरुणाचल प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया है। परनाइक सेना की प्रतिष्ठित उत्तरी कमान के कमांडर के रूप में सेवाएं दे चुके हैं

राजस्थान का मान बढ़ाएंगे कटारिया: सीएम

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि असम में राज्यपाल के रूप में कटारिया संविधान के मूल्यों की रक्षा करते हुए राजस्थान का मान-सम्मान बढ़ाएंगे। हमें पूर्ण विश्वास है कि असम में रहने वाले राजस्थानियों को घर के मुखिया जैसा एहसास होगा। लोकतंत्र में विचारधाराओं का वाद-विवाद होता है, व्यक्तिगत नहीं। उन्होंने साफा पहनाकर कटारिया का अभिनंदन किया।

मेवाड़ को पांचवी बार संवैधानिक पद का गौरव

चालीस साल से राजनीति में सक्रिय कटारिया भाजपा के वरिष्ठ नेता है। यह 5वां मौका है, जब मेवाड़ से किसी व्यक्ति को राज्यपाल बनाया गया है। कटारिया से पहले स्वतंत्रता सेनानी कांग्रेस नेता सादिक अली, पूर्व मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया, जनसंघ के वरिष्ठ नेता सुंदरसिंह भंडारी और रॉ के डायरेक्टर रहे अरविंद दवे को राज्यपाल बनाया गया था।

सादिक अली: उदयपुर में 1910 में जन्मे सादिक अली 1977 से 1980 तक महाराष्ट्र के राज्यपाल और 1980 से 1982 तक तमिलनाडु के राज्यपाल रहे। वे लोकसभा और राज्यसभा के सदस्य भी रहे।

मोहनलाल सुखाड़िया: प्रदेश में मुख्यमंत्री का सबसे बड़ा कार्यकाल पूरा करने वाले मोहनलाल सुखाड़िया भी उदयपुर से थे। वे 17 साल तक (1954 से 1971) लगातार प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। इसके बाद उन्हें कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु के राज्यपाल की जिम्मेदारी दी गई।

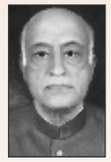

अरविंद दवे: अरविंद दवे 1999 से 2003 तक अरुणाचल प्रदेश 2003 से 2004 तक मणिपुर, 2002 में मेघालय और 2003 में असम के कार्यवाहक राज्यपाल रहे।

सुंदरसिंह भंडारी: सुंदरसिंह भंडारी को अटलबिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में बनी सरकार के दौरान राज्यपाल बनाया गया था। जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में रहे भाजपा के वरिष्ठ नेता भंडारी को 1998 में बिहार और 1999 में गुजरात का राज्यपाल बनाया गया।

पीएस तलेसरा को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड: कारोबारी इकाइयों को नौ पुरस्कार

उदयपुर। यूसीसीआई का स्थापना दिवस समारोह पी.पी सिंघल ऑडिटोरियम में हुआ। संस्थापक सदस्य पी.एस. तलेसरा को यूसीसीआई लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। इसके अलावा 8 श्रेणियों में 09 अवार्ड दिए गए। मुख्य अतिथि जाने-माने पत्रकार शेखर गुप्ता थे। अध्यक्ष संजय सिंघल ने उदयपुर को लेकर अपना विजन बताया। उन्होंने कहा कि यूसीसीआई शहर की आर्थिक प्रगति में 20 प्रतिशत वृद्धि के साथ रोजगार के नए अवसर उत्पन्न करने के लिए संकल्पबद्ध है। महासचिव मनीष गलूंडिया ने बताया कि इसी बीच एक्सीलेंस अवार्ड दिए गए।

जिंक सीएसआर अवार्ड में दो उद्योग पुरस्कृत: ■ पायरोटेक टेंपसंस मैन्यूफैक्चरिंग अवार्ड लार्ज एंटरप्राइजेज : रामा फास्फेट लिमिटेड को पहली बार मिला । ■ आर्क गेट मैन्यूफैक्चरिंग अवार्ड- मीडियम एंटरप्राइज: टेंपसंस इंस्ट्रूमेंट्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड को दूसरी बार। ■ सिंघल फाउंडेशन मैन्यूफैक्चरिंग अवार्ड (स्माल एंटरप्राइज): मैराथन हीटर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को दूसरी बार। ■ वंडर सीमेंट मैन्युफैक्चरिंग अवार्ड (माइक्रो एंटरप्राइज): बनारसी मार्बल स्टोन प्राइवेट लिमिटेड को पहली बार। ■ हारमनी-मेवाड़ सर्विसेज अवार्ड (लार्ज एंटरप्राइज): इंटरनेशनल सर्टीफिकेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को पहली बार। ■ जी आर अग्रवाल सर्विसेज अवार्ड (मीडियम एंटरप्राइज): मेवाड़ एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड को पहली बार। ■ डॉ. अजय मुर्डिया इंदिरा आईवीएफ सर्विसेज अवार्ड (स्माल एंटरप्राइज): आब्जर्व ऑनलाइन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को दूसरी बार। ■ वेदांता हिंदुस्तान जिंक सीएसआर अवार्ड: आदित्य सीमेंट वर्क्स को पहली बार व जेके टायर एंड इंटस्ट्रीज लिमिटेड को 5वीं बार।

पीयूष सिंघल के नाम पर मार्ग

उदयपुर। नगर निगम की ओर से मादड़ी अंडरपास से रोड नम्बर-2 तक के मार्ग को पीयूष सिंघल मार्ग नाम दिया गया है। उद्यमी केजी गुप्ता ने बताया कि शिलापट्ट का अनावरण सिंघल परिवार के वरिष्ठ सदस्यों की ओर से किया गया। कार्यक्रम का संचालन कम्पनी के प्रबंध निदेशक समीर सिंघल ने किया। बताया गया कि पीयूष सिंघल का जन्म आगरा में हुआ था। उन्होंने नामी कम्पनियों को स्थापित कर शिखर तक पहुंचाया।

कटारिया ज्वैलर्स के शोरूम का उद्घाटन

उदयपुर। सगोद रोड, रतलाम स्थित कटारिया, ज्वैलर्स का उद्घाटन कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने किया। इस अवसर पर विशेष अतिथि सांसद गुमानसिंह डामोर, विधायक चैतन्य काश्यप, महापौर प्रहलाद पटेल उपस्थित थे। राज्यपाल ने कहा कि रतलाम में कटारिया ज्वैलर्स के भव्य शोरूम के रूप में आज जो नई शुरूआत हुई है, वह निश्चित ही रतलाम में एक विश्वस्तरीय सुविधा का विस्तार है। उन्होंने कटारिया परिवार के व्यवसायिक और सामाजिक योगदान को सराहा। इस अवसर पर कटारिया परिवार के रवि कटारिया, सुनील कटारिया, अभय गांधी, रतनलाल कटारिया ने अतिथियों का स्वागत किया।

भार्गव अध्यक्ष

उदयपुर। जिला टेबल टेनिस एसोसिएशन सत्र 2023-2027 के चुनाव में संदीप भार्गव व सचिव यशपाल सिंह सिसोदिया नियुक्त हुए। सीनियर उपाध्यक्ष पद पर जे.एस. हिरण व उपाध्यक्ष के लिए चान्द चावत, राजेन्द्र कोठारी व सतेन्द्र पाल सिंह छावड़ा, उपसचिव पद के लिए प्रवीण पालीवाल एवं माया चावत व कोषाध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा नियुक्त किए गए।

प्रो. सारंगदेवोत कार्यवाहक अध्यक्ष, आगरिया 8वीं बार मंत्री, राठौड़ तीसरी बार प्रबंध निदेशक

उदयपुर। विद्या प्रचारिणी सभा भूपाल नोबल्स (बीएन) संस्थान की आमसभा प्रताप चौक संस्थान परिसर में हुई। इसमें संस्थान की कार्यकारिणी के तीन साल के लिए चुनाव हुए। चुनाव अधिकारी डॉ. प्रेमसिंह रावलोत ने बताया कि 212 मतदाताओं में से 195 ने मतदान किया। कार्यवाहक अध्यक्ष पद पर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने जीत दर्ज करते हुए भगवत सिंह नेतावल को 74 मतों से पराजित किया। देवेन्द्र सिंह पिपलाज को 30 मतों से हराकर डॉ. महेन्द्र सिंह आगरिया 8वीं बार मंत्री बने। दिलीप सिंह लुणदा को 28 मतों से हरा मोहब्बत सिंह रूपाखेड़ी तीसरी बार उपमंत्री और प्रबंध निदेशक पद पर काबिज हुए। उपाध्यक्ष के दो पदों पर डॉ. दरियाव सिंह 100 मत और डॉ. जब्बर सिंह 94 मत पाकर जीते। संयुक्त मंत्री पद पर राजेन्द्र सिंह ताणा 50 मतों से जीते। जबकि वित्त मंत्री पर शक्तिसिंह कारोही विजयी हुए। कार्यकारिणी सदस्यों के 9 पदों पर हनुवंत सिंह बोहेडा, नवल सिंह जूड़, नकुल सिंह मुरोली, कमलेश्वर सिंह कच्छेर, भंवर सिंह कोठारिया, सुरेन्द्र प्रताप सिंह रूद, करण सिंह उमरी, महेन्द्र सिंह पाखण्ड, पुष्पेन्द्र सिंह भींडर निर्वाचित हुए। कार्यकारिणी में भूतपूर्व छात्रसंघ प्रतिनिधि के 4 पदों पर डॉ. युवराज सिंह बेमला, राजेन्द्र सिंह पिपलान्त्री, कुलदीप सिंह ताल व महेन्द्रसिंह पाटिया पूर्व प्रक्रिया में निर्विरोध निर्वाचित हुए।

राहुल अग्रवाल का सम्मान

उदयपुर। संस्कृत भारती द्वारा संस्कृत को जन भाषा बनाने तथा संस्कृत के विकास व उत्थान की दिशा में किए जा रहे अथक प्रयासों के पूर्ण सहयोग प्रदान करने, संस्कृत व संस्कृति के क्षेत्र में निरंतर प्रयासरत रहकर योगदान देने के लिए पेसिफिक समूह व पीएमसीएच के चैयरपर्सन राहुल अग्रवाल का सम्मान किया गया। संस्कृत भारती के प्रांत प्रचार प्रमुख डॉ. यज्ञ आमेटा ने उन्हें प्रतीक चिन्ह संस्कृत वदतु नामक पुस्तक भेंट की।

लांबा उदयपुर रेंज आईजी

उदयपुर। प्रदेश सरकार ने हाल ही 75 आईपीएस अफसरों की बदली की। जयपुर के एडि. कमिश्नर अजयपाल लांबा उदयपुर रेंज आईजी बनाए गए हैं। वे 2014 से जून 2015 तक उदयपुर एसपी थे। मौजूद आईजी प्रफल्लकुमार को आईजी-क्राइम जयपुर बनाया है। रंजीता शर्मा को उदयपुर में एएसपी व हनुमानगढ़ एसपी अजय सिंह को उप महानिरीक्षक एसएसबी उदयपुर बनाया गया है। राजसमंद में सुधीर जोशी, प्रतापगढ़ में अमित कुमार, बांसवाड़ा में अभिजीत सिंह व डूंगरपुर में कुंदर कंवरिया एसपी होंगे।

DERMADENT CLINIC

Dermatology | Dentistry | Hair Transplant

Hair Transplant

Before

After

Before

After

Before

After

Before

After

Our Specialties

- Stitch Less Hair Transplant (FUE)
- PRP
- LLLT
- Trichoscopy
- Mesotherapy

Recipient of The Mewar Health Care Achievers Award for Best Hair Transplant Surgeon in Udaipur for 5 consecutive years

Why Dermadent Clinic

- Pioneer of FUE Transplant in Rajasthan.
- Most experienced team of FUE in Rajasthan.
- Vast 8 years of experience in Hair Transplant.
- Dr. Prashant Agrawal; a renowned International faculty and trainer in the field of Hair Transplant.
- SAARC AAD recognised Hair Transplant Training center.
- Have trained more than 100 budding dermatologist in Hair Transplant across India.
- State of the art clinic and operation theatre.

State of The Art Clinic

Dr. Prashant Agrawal

Skin Specialist & Hair Transplant Surgeon

60 - Meera Nagar, Shobhagpura, 100 Ft. Road, Udaipur

Hair Transplant HELPLINE NO. 75975-12345

www.dermadentclinic.com

मातृ शक्ति की पूजा का पर्व : नवरात्र

डॉ. सीतेश द्विवेदी

देवी भागवत पुराण के अनुसार पूरे वर्ष में चार नवरात्र मनाए जाते हैं। जिनमें दो गुप्त नवरात्र सहित शारदीय नवरात्र और बासंती जिसे चैत्र नवरात्र कहते हैं, भी सम्मिलित हैं। वास्तव में ये चारों नवरात्र ऋतु चक्र पर आधारित हैं और सभी ऋतुओं के संधिकाल में मनाए जाते हैं।

सभी नवरात्र का आध्यात्मिक दृष्टि से अपना महत्व है। आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो यह प्रकृति और पुरुष के संयोग का भी समय होता है। प्रकृति मातृशक्ति होती है इसलिए इस दौरान देवी की पूजा होती है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि संपूर्ण सृष्टि प्रकृतिमय है और वह सिर्फ पुरुष हैं यानी हम जिसे पुरुष रूप में देखते हैं, वह भी आध्यात्मिक दृष्टि से प्रकृति यानी स्त्री रूप है। स्त्री से यहां तात्पर्य यह है कि जो पाने की इच्छा रखने वाला है वह स्त्री है और जो इच्छा की पूर्ति करता है वह पुरुष है।

चैत्र से गर्मी की शुरुआत

ज्योतिष की दृष्टि से चैत्र नवरात्र का विशेष महत्व है, क्योंकि इस नवरात्र की अवधि में सूर्य का राशि परिवर्तन होता है। सूर्य 12 राशियों में भ्रमण पूरा करते हैं और फिर से अगला चक्र पूरा करने के लिए पहली राशि मेष में प्रवेश करते हैं। सूर्य और मंगल की राशि मेष दोनों ही अग्नि तत्व वाले हैं इसलिए इनके संयोग से गर्मी की शुरुआत होती है।

हिन्दू नववर्ष आरम्भ

चैत्र नवरात्र से नववर्ष के पंचांग की गणना शुरू होती है। इसी दिन से वर्ष के राजा, मंत्री, सेनापति, वर्षा, कृषि के स्वामी ग्रह का निर्धारण होता है और वर्ष में अन्न, धन, व्यापार और सुख शांति का आंकलन किया जाता है। नवरात्र में देवी और नवग्रहों की पूजा का कारण यह भी है कि ग्रहों की स्थिति पूरे वर्ष अनुकूल रहे और जीवन में खुशहाली बनी रहे।

धार्मिक दृष्टि से विशेष महत्व

जहां तक बात है चैत्र नवरात्र की तो धार्मिक दृष्टि से इसका विशेष महत्व है, क्योंकि चैत्र नवरात्र के पहले दिन आदिशक्ति प्रकट हुई थी और देवी के कहने पर ब्रह्मा जी ने सृष्टि निर्माण का काम शुरु किया था। इसलिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से हिन्दू नववर्ष शुरु होता है। चैत्र नवरात्र के तीसरे दिन, भगवान विष्णु ने मत्स्य रूप में पहला अवतार लेकर पृथ्वी की स्थापना की थी। इसके बाद भगवान विष्णु का सातवां अवतार जो भगवान राम का है, वह भी चैत्र नवरात्र में हुआ था। इसलिए धार्मिक दृष्टि से चैत्र नवरात्र का बहुत महत्व है।

वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्व

नवरात्र का महत्व सिर्फ धर्म, अध्यात्म और ज्योतिष की दृष्टि से ही नहीं है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी है। ऋतु के बदलते समय रोग जिन्हें आसुरी शक्ति कहते हैं, उनका अंत करने के लिए हवन, पूजन किया जाता है जिसमें कई तरह की जड़ी बूटियों और वनस्पतियों का प्रयोग किया जाता है। हमारे ऋषि मुनियों ने न सिर्फ धार्मिक दृष्टि को ध्यान में रखकर नवरात्र में व्रत और हवन पूजन के लिए कहा है बल्कि इसका वैज्ञानिक आधार भी है।

हवन- पूजन से स्वास्थ्य लाभ

नवरात्र के समय व्रत और हवन पूजन स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभकारी हैं। कारण यह है कि चारों नवरात्र ऋतुओं के संधिकाल में होते हैं यानी इस समय मौसम में बदलाव होता है जिससे शारीरिक और मानसिक बल में कमी आती है। शरीर और मन को पुष्ट और स्वस्थ बनाकर नए मौसम के लिए तैयार करने के लिए व्रत किया जाता है। ऋतु संधि बेला में व्रत –उपवास से स्वास्थ्य लाभ मिलता है। व्रत उपवास करने वाले को अपनी सेहत एवं स्थिति के अनुसार व्रत उपवास रखना चाहिए। रोगी को डाक्टर से सलाह लेकर उपवास रखना चाहिए।

ज्योतिषीय और आध्यात्मिक दृष्टि से महत्व

चैत्र में अग्नितत्व ग्रह सूर्य अग्नितत्व मूलक राशि मंगल में प्रवेश करता है, जिससे गर्मी शुरू हो जाती है। प्राचिन काल में ऋतु और राशि परिवर्तन के ऐसे समय में स्वयं को स्वस्थ रखने और बीमारियों से बचने के लिए लोग उपवास सहित भगवती की आराधना करते थे। सात्विक आहार, व्रत–उपवास शरीर और मन दोनों की शुद्धि का सशक्त उपक्रम है।

सृष्टि का निर्माणोत्सव

धुलेंडी के साथ ही चैत्र मास आरंभ होता है। इसका शुक्लपक्ष नए हिंदू संवत्सर के प्रारंभ का पक्ष है। नव संवत्सर के स्वागत की तैयारी प्रकृति महीनेभर पहले से करने लगती है। टेसू और सेमल के फूल खिलने लगते हैं। पुराने पत्ते झड़ जाते हैं, सारे पेड़-पौधे नए और हरे- भरे ही जाते हैं। गेहूं की बालियां पककर लहराने लगती हैं। कोयल की कूक मोरों को आकर्षित करने लगती है। सर्वत्र प्रकृति का नेपथ्य में ही सही, जब चुपके-चुपके उत्सव चल रहा हो, तब समझ जाइए कि मधुमासीय नव संवत्सर का आगमन निकट है। ब्रह्मा ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सृष्टि का निर्माण किया था। सतयुग जो कि चारों युग का आदि युग है, का निर्माण चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि को हुआ था। दक्षिण भारत में इसे उगादि कहते हैं। उगादि इस दिन लोग नवीन वस्त्र पहन, घर के चौकों-चन्दन और रंगोली से सजा द्वार पर आमपत्र लगाते हैं। नवरात्रि के प्रथम दिन, नव संवत्सर की प्रथम रात्रि का चैत्र शुक्ल का प्रथम दर्शन ही चैत्र चंद्र दर्शन है, जिसे उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसे ही चैतीचंद महोत्सव कहा जाता है। इस दिन भगवान झूलेलाल और माता रानी की विशेष पूजा की जाती है। प्रतिपदा का अपभ्रंश पड़वा है। आज ही के दिन श्री राम ने अत्याचारी शासक बाली का वधकर प्रजा को मुक्ति दिलाई थी। बाली के अत्याचार से मुक्त प्रजा ने विजयध्वज (गुड़ी) फहराकर उत्सव मनाया था। इसलिए नव संवत्सर की प्रथम तिथि गुड़ी पड़वा के नाम से जानी जाती है। इस दिन नई साड़ी पहना कर बांस में ताम्बे या पीतल का लोटा और पल्लव आदि रखकर गुड़ी बनाई जाती है तथा उसकी और श्री राम-हनुमानजी की पूजा की जाती है। युधिष्ठिर का राज्याभिषेक आज ही के दिन हुआ था। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने शर्कों पर विजय प्राप्त कर विक्रम सम्वत् आरंभ किया। द्वापर में द्वारिका में रहने वाले प्रसेनजीत (सत्राजीत राजा का भाई) की हत्या से कलंकित श्रीकृष्ण जब मणि का पता लगाने, अंधेरी गुफा में प्रवेश कर गए, तब समस्त ब्रजवासियों ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ कर, चैत्र शुक्ल नवमी पर्यन्त उपवास सहित देवी आराधना की थी तथा रात्रि जागरण किया था, ताकि श्रीकृष्ण गुफा से सकुशल वापस लौट आएं।नव संवत्सर के दिन प्रात: पंचांग की पूजाकर वर्षफल का श्रवण किया जाता है। नवरात्रि उपासक कक्ष की पूर्व दिशा को गोबर से लीपकर भगवती को स्थापित कर उसके सामने मिट्टी की वेदी बनाकर कलश रखें तथा विधिवत गेहूं, जौ आदि धान्य बोएं। श्री गौरी, गणपति, नवग्रह, पोडश मातृका की पूजा कर भगवती श्री अम्बा की यथासुलभ सामग्रियों से पूजा करनी चाहिए।

-आशुतोष झा

कैसा लगा यह अंक

प्रत्यूष

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित विवरण
घोषणा पत्र फार्म-4

1. प्रकाशन स्थल	उदयपुर
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	आशीष बापना
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. पावर हाउस के पास एमआईए एक्सटेंशन, रिको, उदयपुर
4. प्रकाशक का नाम	पंकज शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	हाँ
पता	रक्षाबंधन, धानमण्डी, उदयपुर
5. सम्पादक का नाम	विष्णु शर्मा हितैषी
क्या भारत का नागरिक है	हाँ
पता	हितैषी भवन, सूरजपोल अन्दर, उदयपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों	पंकज शर्मा रक्षाबंधन, धानमण्डी, उदयपुर

मैं पंकज शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 01 मार्च, 2023 **पंकज शर्मा**

स्थान : उदयपुर **प्रकाशक**

बड़े चमत्कारी हैं कलयुग के अवतार खाटू वाले बाबा

हारे के सहारे, श्याम हमारे

भारत में बहुत से ऐसे धार्मिक स्थल हैं जो अपने चमत्कारों व वरदानों के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्हीं में से एक हैं- राजस्थान के शेखावटी क्षेत्र (सीकर) का विश्व विख्यात खाटू श्याम मंदिर। यहां फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को विशाल मेला भरता है। इसे 'लक्खी मेला' कहा जाता है। इसमें देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु भाग लेकर श्याम बाबा को सिर नवाते हैं।

नंदकिशोर

श्याम बाबा की कहानी महाभारत काल से आरम्भ होती है। वे पहले बर्बरीक के नाम से जाने जाते थे तथा पान्डव भीम के पुत्र घटोतकच्छ और नाग कन्या अहिलवती के पुत्र थे। बाल्यकाल से ही वे बहुत वीर और महान योद्धा थे। उन्होंने युद्ध कला अपनी माँ से सीखी।

भगवान शिव की घोर तपस्या करके उन्हें प्रसन्न किया और उनसे तीन अभेध्य बाण प्राप्त किये तथा त्रिबाणधारी कहलाए। अग्निदेव ने प्रसन्न होकर उन्हें धनुष प्रदान किया, जो कि उन्हें तीनों लोकों में विजयी बनाने में समर्थ था।

महाभारत का युद्ध कौरवों और पाण्डवों के मध्य अपरिहार्य हो गया था, इस समाचार से उनकी भी युद्ध में सम्मिलित होने की इच्छा हुयी। जब वे अपनी माँ से आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचे तब माँ को हारते हुये पक्ष का साथ देने का वचन दिया। वे अपने नीले घोड़े पर तीन बाण और धनुष के साथ कुरूक्षेत्र की रणभूमि की ओर अग्रसर हुए।

सर्वव्यापी कृष्ण ने ब्राह्मण वेश धारण कर बर्बरीक को मार्गमें रोका और यह जानकर उनकी हंसी भी उड़ायी कि वह मात्र तीन बाण से युद्ध में सम्मिलित होने आया है। ऐसा सुनने पर बर्बरीक ने उत्तर दिया कि मात्र एक ही बाण शत्रु सेना को ध्वस्त करने के लिये पर्याप्त है और ऐसा करने के बाद बाण पुन: तरकस में आएगा। यदि तीनों बाणों को प्रयोग में लिया गया तो तीनों लोकों में हाहाकार मच जाएगा।

इस पर कृष्ण ने उन्हें चुनौती दी की इस पीपल के पेड़ के सभी पत्रों को छेद कर दिखलाओ, जिसके नीचे दोनों खेड़े थे। बर्बरीक ने चुनौती स्वीकार की और अपने तुणीर से एक बाण निकाला और ईश्वर को स्मरण कर उसे पेड़ की और चलाया।

तीर क्षण भर में पेड़ के सभी पत्तों को भेद कर कृष्ण के पैर के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने लगा, क्योंकि एक पत्ता उन्होंने अपने पैर के नीचे दबा लिया था, बर्बरीक ने कहा कि आप अपने पैर को हटा लीजिये वरना बाण आपको चोट पहुंचा देगा।

कृष्ण ने बर्बरीक से पूछा कि वह युद्ध में किस ओर से सम्मिलित होगा तो बर्बरीक ने अपनी माँ को दिया वचन दोहराया कि वह युद्ध में उस पक्ष की ओर से भाग लेगा जो निर्बल व हार की ओर अग्रसर हो। कृष्ण जानते थे कि युद्ध में हार तो कौरवों की ही निश्चित है और इस पर अगर बर्बरीक ने उनका साथ दिया तो परिणाम उनके पक्ष में ही होगा।

ब्राह्मण बने कृष्ण ने बालक से दान की अभिलाषा व्यक्त की, इस पर वीर बर्बरीक ने उन्हें वचन दिया कि अगर वो उनकी अभिलाषा पूर्ण करने में समर्थ होगा तो अवश्य करेगा। कृष्ण ने उनसे शीश का दान मांगा। बालक बर्बरीक क्षण के लिए स्तब्ध रह गया, परंतु उसने वचन का दृढ़ता पूर्वक पालन किया। बालक बर्बरीक ने ब्राह्मण से अपने वास्तविक रूप में आने की प्रार्थना की और कृष्ण के प्रकट होने पर बालक ने उनके विराट रूप के दर्शन की अभिलाषा व्यक्त की, कृष्ण ने उन्हें अपना विराट रूप दिखाया।

उन्होने बर्बरीक को समझाया कि युद्ध आरम्भ होने से पहले युद्धभूमि की पूजा के लिये एक वीर क्षत्रिय के शीश के दान की आवश्यकता होती है, उन्होंने बर्बरीक को युद्ध में सबसे बड़े वीर की उपाधि से अलंकृत कर उनका शीश दान में मांगा। बर्बरीक ने उनसे प्रार्थना की कि वह अंत तक युद्ध देखना चाहता है, श्रीकृष्ण ने उनकी यह बात स्वीकार कर ली। फाल्गुन माह की द्वादशी को उन्होंने अपने शीश का दान दिया। उनका सिर युद्धभूमि के समीप ही एक पहाड़ी पर सुशोभित किया गया, जहां से बर्बरीक सम्पूर्ण युद्ध का जायजा ले सकते थे।

युद्ध की समाप्ति पर पांडवों में ही विवाद हुआ कि युद्ध में विजय का श्रेय किसे दिया जाए, इस पर कृष्ण ने उन्हें सुझाव दिया कि बर्बरीक का शीश सम्पूर्ण युद्ध का साक्षी है, अतैव उससे बेहतर निर्णायक भला कौन हो सकता है। सभी इस बात से सहमत हो गए।

बर्बरीक के शीश ने उत्तर दिया कि कृष्ण ही युद्ध में विजय प्राप्त कराने में सबसे महान पात्र हैं, उनकी सीख, उनकी उपस्थिति, उनकी युद्धनीति ही निर्णायक थी। उन्हें युद्धभूमि में सिर्फ उनका सुदर्शन चक्र ही घूमता हुआ दिखायी दे रहा था जो कि शत्रु सेना को काट रहा था,महाकाली दुर्गा कृष्ण

के आदेश पर शत्रु सेना के रक्त से भरे प्यालों का सेवन कर रही थीं।

वीर बर्बरीक के महान बलिदान से श्री कृष्ण काफी प्रसन्न हुए और वरदान दिया कि कलियुग में तुम श्याम नाम से जाने जाओगे, क्योंकि कलियुग में हारे हुए का साथ देने वाला ही श्याम नाम धारण करने में समर्थ है। ऐसा माना जाता है कि एक बार एक गाय उस स्थान पर आकर अपने स्तनों से दुग्ध की धारा स्वत: ही बहा रही थी, बाद में खुदाई के बाद वह शीश प्रकट हुआ। एक बार खाटू के राजा को स्वप्न में मंदिर निर्माण और शीश मन्दिर में सुशोभित करने के लिए प्रेरित किया गया। तदन्तर उस स्थान पर मंदिर का निर्माण कार्तिक माह की एकादशी को शीश मंदिर में सुशोभित किया गया। इस दिन को बाबा श्याम के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। मूल मंदिर 1027 ई. में रूपसिंह चौहान और उनकी पत्नी नर्मदा कंवर द्वारा बनाया गया था। मारवाड़ के शासक दीवान अभय सिंह ठाकुर के निर्देश पर 1720 ई. में मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ। श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए हाल ही में मंदिर परिसर का विस्तार

किया गया है। अब सोलह कतारों में भक्त अपने प्रिय श्याम बाबा के शीघ्र और आसानी से दर्शन कर सकते हैं।

कहा जाता है कि मंदिर में श्यामबाबा का नित नया रूप देखने को मिलता है। कई लोगों को तो इस विग्रह में कई बदलाव भी नजर आते हैं। कभी मोटा तो कभी दुबला। कभी हंसता हुआ तो कभी ऐसा तेज युक्त कि उस पर नजरें भी नहीं टिक पाती। श्यामबाबा का धड़ से अलग शीष और धनुष पर तीन बाण की छवि वाली मूर्ति यहां स्थापित है। कहते हैं कि मंदिर की स्थापना महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद स्वयं भगवान कृष्ण ने अपने हाथों की थी।

Sadhana Mahatma
Director
+91 97993 94391

Wonder View Palace

6, Panch Dewari Marg, Hanuman Ghat
O/s. Chandpole, Udaipur - 313001 (Raj.) India

+91 294 2432494/317
info@wonderviewpalace.com www.wonderviewpalace.com

भावात्मक एकता का प्रतीक

ऋषभदेव तीर्थ

अरावली की उपत्यकाओं के बीच उदयपुर नगर के दक्षिण में 65 किमी दूर जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के नाम पर सुविख्यात ऋषभदेव नगर कुवारिका (कोयल) नदी के तट पर बसा है। अति प्राचीन यह अतिशय क्षेत्र भारत में ही नहीं विश्व में एक प्रमुख जैन तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है। यह सर्वधर्म समभाव का भी प्रतीक है। यहां हर जाति-धर्म के लोग श्रद्धा भाव से पूजा एवं दर्शन के लिए आते हैं। इस वर्ष 16 मार्च को यहां भगवान ऋषभदेव के जन्मोत्सव का परम्परागत भव्य मेला भरेगा।

मीठालाल चित्तौड़ा

यह तीर्थ क्षेत्र अति प्राचीन माना जाता है. इसी कारण इसे ऋषभदेव, केशरियाजी, धुलेव आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा पर केशर चढ़ाई जाती है। यहाँ प्रतिदिन हजारों रुपयों की कैसर चढ़ती है। धुला भील के नाम से इस गांव का नाम धुलेव पड़ा, ऐसा कहा जाता है कि धुला भील को सपना आया कि यह चमत्कारी प्रतिमा जंगल में पेड़ के तने में दबी हुई है। वर्तमान में यह स्थान पगल्याजी के नाम से प्रसिद्ध है। प्रतिमा की खुदाई कर मुख्य मंदिर में स्थापित किया गया इसी कारण इस गाँव का नाम धुलेव पड़ा। ग्रामीण क्षेत्र के आदिवासी आज भी इस गांव को धुलेव या भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा काले पत्थर की होने से कालिया बाबा (काला बाबा) के नाम से पुकारते हैं।

क्षेत्र की ऐतिहासिकता

धुलेव गांव आरम्भ में खड्ग प्रान्त के जवास पट्टे में था कालान्तर में जवास राव ने इसे केशरियाजी को भेंट किया। इस मंदिर के निर्माण से सम्बन्धित अनेक मान्यताएं प्रचलित हैं। प्राप्त शिलालेखों के आधार पर यह मंदिर दूसरी शताब्दी में काली ईटों का बना था। बाद में आठवीं शताब्दी में परेवा नामक पत्थर से बना और इसके पश्चात् विक्रम संवत् 1431 में इसे मज़बूत पत्थर से बनाया गया। मंदिर के खेला मण्डप की दीवारों में आमने-सामने स्थित सबसे प्राचीन दो शिलालेखों के आधार पर हरदास नामक

अतिप्राचीन है प्रतिमा

भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा बहुत प्राचीन है, इसकी प्राचीनता के सम्बन्ध में अनेक किवदन्तिया प्रचलित हैं। इतिहास वक्ताओं के अनुसार यह प्रतिमा पहले कल्याणपुर गांव में स्थित थी। परमारों के आक्रमण के कारण इसे यहां लाकर वृक्ष की गोद में छिपा दिया गया। कुछ का मानना है कि यह प्रतिमा पहले डूंगरपुर जिले में बड़ौदा गांव में स्थित मंदिर में स्थापित, थी, लेकिन मुस्लिम आक्रमणों के कारण इसे यहां लाकर छुपाया गया। एक और मान्यता के अनुसार यह प्रतिमा श्रीलंका से यहां लाई गई तथा मसारों की ओबरी होते, इसे यहां लाकर महुआ के पेड़ की गोद में छुपाया गया।

जैन सेठ एवं उसके पुत्र पूँजा एवं कोता द्वारा, इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया गया। बाद में समय-समय पर मंदिर का निर्माण होता गया।

मंदिर के गर्भगृह में ऋषभदेव भगवान की आकर्षक साढ़े तीन फुट ऊँची श्याम वर्णीय प्रतिमा विराजमान है। पावासन पर मूल प्रतिमा जी के अग्र भाग में लघु आकृति की नव धातुओं की नव देवों की मूर्तियाँ हैं एवं नव देवों के नीचे सोलह स्वप्न खुदे हुए हैं। ऋषभदेव भगवान की पद्मासन मुद्रा के नीचे वृषभ (बैल) का चिन्ह अंकित है जो कर्ममूलक संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। मूल भगवान ऋषभदेव के साथ जो पीठिका है वह धातु निर्मित है। विशाल मंदिर परिसर में आदिनाथ भगवान सहित चौबीस तीर्थकरों के एक साथ दर्शन होते हैं। इस चौबीसी में भगवान के दोनों और दायें-बांये दो नग्न कायोत्सर्ग, खड़गासन तीर्थकर मूर्तियां स्थित हैं जो भगवान के आभा मण्डल को दर्शाती हैं।

मंदिर का स्थापत्य

ऋषभदेव भगवान का मंदिर अपनी भव्यता श्रेष्ठ शिल्प कला एवं स्थापत्य कला के कारण प्रसिद्ध है। मंदिर में प्रवेश द्वार के साथ ही बाह्य परिक्रमा चौक आता है। प्रवेश द्वार के

बाहर दोनों और काले पत्थर का हाथी खड़ा है जो भक्तों का स्वागत करता प्रतीत होता है। अन्दर दस सीढ़ियां चढ़ने के बाद प्रवेश द्वार के अन्दर उत्तर में भगवान की कुलदेवीयाँ चक्रेश्वरी माता एवं दक्षिण में पद्मावती माता के दर्शन होते हैं। कुछ सीढ़ियों के बाद मंदिर का नवग्रह, चक्र प्रारम्भ होता है। गर्भ ग्रह में ऋषभदेव भगवान की मूल प्रतिमा प्रतिष्ठापित है एवं उसके चारों और प्रदीक्षणा पथ स्थित है। प्रदीक्षणा पथ के चारों और बावन जिनालयों में विभिन्न तीर्थकरों की प्रतिमाएं हैं। प्रत्येक जिनालय के द्वार चांदी की प्राचीन शिल्प कला से सुसज्जित हैं। इसके पार्श्व में देव कुलिकाओं की पक्तियाँ हैं। प्रत्येक के मध्य में मण्डप सहित एक-एक मंदिर और इसी के पास चारभुजा का मंदिर और पास में ही तैबीसवें तीर्थकर का 108 फणयुक्त पार्श्वनाथ जी का मंदिर बना हुआ है।

जिन मंदिर के चारों ओर मेवाड़, क्षेत्र के अन्य प्राचीन मंदिर मैनाल, बाडासी, बिजौलिया, नागदा के मंदिर की तरह ही देवी देवताओं एवं देव कुलिकाओं की प्रतिमाएँ स्थित हैं। इस मंदिर में गणेश जी की विभिन्न मुद्राओं में जितनी प्रतिमाएँ हैं, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं हैं। मंदिर में गर्भगृह, सभामण्डप, विला मण्डप, स्तम्भों एवं छतों पर श्रेष्ठ शिल्प उकेरा गया है। तथा सभी कला रचनाएं एक दूसरे से भिन्नता लिए हुये हैं। मंदिर में ब्रह्मा, शिव, गणेश आदि देवताओं की प्रतिमाएँ मंदिर के शिल्प एवं धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाती हैं। गर्भगृह के पश्चात् खेला मण्डप तथा उसके बाहर वेदी है। जहाँ दिगम्बर जैन समाज द्वारा नित्य पूजा होती है। वेदी के पास भेरुजी का स्थानक है। यह मंदिर वैज्ञानिक पद्धति से उत्तम वास्तुकारों द्वारा निर्मित किया गया है पूर्व दिशा में उदय होते हुये भास्कर (सूर्य) की दैदिप्यमान किरणें भगवान ऋ षभदेव के चरणकमलों की वन्दना करती प्रतीत होती हैं, साथ ही मंदिर का निर्माण इस पद्धति से हुआ है कि नीचे प्रथम द्वार के बाहर से भी भगवान के दर्शन होते हैं जो भक्तगण मंदिर के बाहर नीचे से ही तीर्थ के अधिपति ऋषभदेव भगवान के दर्शनों का लाभ ले सकते हैं। मंदिर की व्यवस्था राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग के अधीन है। एवं दैनिक कार्यक्रमों के अनुसार प्रात: 7 बजे भगवान ऋषभदेव का जल से अभिषेक, इसके बाद दूध का अभिषेक एवं अंगपोछन के पश्चात् केशर पूजा होती है। तत्पश्चात बैंडबाजे के साथ भगवान की आरती एवं स्तुति होती है। दोपहर दो बजे बाद पुन, यह प्रक्रिया दोहराई जाती है। सायंकाल को भगवान ऋषभदेव को सोने एवं चांदी की आंगी धारण करवायी जाती है जो रात्रि 8 बजे तक रहती है। सांय पुन: भगवान की आरती होती है । बाद में भगवान की स्तुति में भक्तों द्वारा भजन एवं गीत गाये जाते है। रात्रि को 830 बजे कपूर आरती के साथ मंदिर के पट बंद होते हैं।

जन्मोत्सव पर दो दिवसीय मेला

तीर्थ के अधिष्ठाता भगवान ऋषभदेव की जन्म तिथि चैत्र कृष्णा अष्टमी एवं नवमी पर यहाँ विशाल मेला लगता है। दूर-दूर से आने वाले श्रद्धालु ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा पर केशर चढ़ाते हैं एवं मन्नते मांगते हैं। अष्टमी के दिन भगवान के जन्मदिन पर प्रातः विशेष जल, दूध अभिषेक, केशर पूजा एवं आरती का आयोजन होता है। पूरे मंदिर को सजाया जाता है। दोपहर तीन बजे भगवान के निज मंदिर से पगल्याजी तक विशाल शोयायात्रा निकाली जाती है। इसमें भगवान ऋषभदेव को विशेष चांदी के रथ में विराजमान कर नगर, भ्रमण कराया जाता है। शोभायात्रा पगल्याजी पहुंचने पर एक विशेष रोचक प्रक्रिया अपनायी जाती है। शोभायात्रा के साथ चलने वाली रंगबिरंगी पताकाओं से सजी रथगाड़ी को (इन्द्रध्वज गाड़ी) को पगल्याजी ढलान पर छोड़ा जाता है ऐसी मान्यता है कि यदि यह इन्द्रध्वज रथ गाड़ी आगे फिसल कर बांयी और चली जाती है तो आने वाला वर्ष शुभ माना जाता है यदि रथ गाड़ी कुछ दूर सीधी चली जाय तो आने वाले वर्ष में कोई न कोई प्राकृतिक प्रकोप की संभावना रहती है इस प्रकार आने वाले वर्ष के शुभ एवं अशुभ का आंकलन किया जाता है। शोभायात्रा के पगल्याजी पहुंचने पर भगवान को बन्दूको से सलामी दी जाती है तत्पश्चात भगवान की पूजा अर्चना होती है।

प्रत्यूष
समाज में समरसता और भातृत्व भाव की पोषक पत्रिका
प्रत्यूष (बहुरंगी हिन्दी मासिक)
के आज ही सदस्य बनें। मात्र 600 रुपए वार्षिक।
पता: 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001

जुल्म के प्रतिकार का पर्वः चेटीचंड

सुरेश जसवानी

हर जाति, समाज की अपनी पहचान होती है। इनमें से चेटीचंड (वरुणावतार) अर्थात भगवान झूलेलाल का प्राक्ट्योत्सव सिंधियों की शक्ति और पहचान का पर्व है। सिंध प्रदेश में बादशाह मिर्गशाह के जुल्मों से जनता बेहद दुखी थी। बादशाह धर्म परिवर्तन के लिए जनता पर जुल्म करता था। चारों और त्राहि-त्राहि मची थी। सिंधियों का अस्तित्व खतरे में पड़ने लगा। संकट की इस घड़ी में जनता ने तय किया कि वह मिर्ग बादशाह के अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए सिंधु नदी के तट पर वरुण देव की पूजा करेंगे। लगातार सात दिन तक वरुण देव की पूजा की गई। प्रार्थना और पुकार के सातवें दिन रात के समय सिंधु नदी की लहरों पर विशालकाय 'मछली' पर सवार 'वरुण देव' संत उदेरोलाल के रूप में प्रकट हुए। इसी समय आकाशवाणी हुई कि अत्याचारियों का नाश करने और धर्म की रक्षा के लिए मैं (वरुणदेव)नसीरपुर शहर में भाई रतनराय के घर जन्म लूंगा। यह पवित्र दिन विक्रम संवत् 1007 को चैत्र शुक्ला द्वितीया के दिन आया। जनता बेहद प्रसन्न हुई। जैसे ही अत्याचारी मिर्ग बादशाह को यह खबर लगी तो उसने अपने एक मंत्री को नसीरपुर शहर में रतनराय के घर से नवजात को उठा लाने का हुक्म दिया। मंत्री अपने रक्षकों के साथ रतनराय के घर पहुंचा और जैसे ही बालक को उठाने का प्रयास किया वह बुरी तरह भयभीत होकर पांच कदम पीछे हटा और गिर पड़ा। मंत्री ने बालक के रूप में एक चक्रवर्ती सम्राट सिहासन पर बैठा पाया। मंत्री ने तत्काल वहां से लौटकर यह चमत्कार पूर्ण घटना बादशाह को बताई। मिर्ग बादशाह कुछ डरा जरूर, लेकिन अहंकार नहीं छोड़ा और बालक रूपी उस अवतार को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। झूलेलाल देव तो अंतरयामी थे। उन्हें मिर्ग बादशाह की साजिश मालूम थी। बादशाह के सिपाही झूलेलाल को गिरफ्तार करें, उससे पहले ही भगवान झूलेलाल का गुस्सा आग में परिवर्तित होकर बादशाह के महल पर टूट पड़ा। देखते ही देखते महल राख होने लगा। इसी बीच आए भयंकर तूफ़ान ने आग सारे शहर में फैला दी। मिर्ग बादशाह, झूलेलाल के चरणों में गिरकर अपने गुनाहों एवं अत्याचारों की माफ़ी मांगने लगा। चारों तरफ की चीख पुकार और आराधना सुनकर

भगवान झूलेलाल की दो रूपों में पूजा की जाती है। पानी में मछली पर सवार, पालथी मारकर बिराजित हाथ में पुस्तक, दूसरे में माला, ललाट पर तिलक, सफेद मूछ एवं दाढी और सिर पर ताज एवं मोर पंख। दूसरा घोड़े पर सवार। दाहिने हाथ में नंगी तलवार बाएं हाथ में पताका, माथे पर टोपी पहने एक वीर योद्धा के रूप में दिखाई देते हैं।

भगवान झूलेलाल ने अग्नि देव एवं तूफ़ान को शांत किया। मिर्ग बादशाह ने उसी ध्वस्त महल के स्थान पर पवित्र मंदिर का निर्माण करवाया जिसका नाम 'जिन्दह ' पीर रखा जो हिंदू और मुसलमान दोनों के लिए तीर्थ बन गया। झूलेलाल जिन्हें उदेरोलाल के नाम से भी पुकारा जाता है, सिंधी समाज के संरक्षक माने जाते हैं। एकता और भाईचारे को अधिक सुदृढ़ करने के लिए सिंधी यह पर्व मनाते हैं जो सिंधियत की पहचान है। यह दिन सभी सिंधियों के लिए पवित्र है। चाहे वे हिंदू हों या सिंधी मुसलमान। इस पावन अवसर पर जहां सिंधी हैं, मेलों का आयोजन होता है। भगवान झूलेलाल ने बुद्धि और ज्ञान को प्राथमिकता दी एवं धर्म जाति के बंधनों को तोड़कर एकता पर जोर दिया। भगवान झूलेलाल के जन्म दिवस को चेटीचंड के रूप में मनाया जाता है। वरुण देवता का उल्लेख रामायण में सुंदर कांड के अंत में आता है। भगवान राम को जब लंका जाने के लिए समय पर सेतु बांधना था, तब वरुण देव ब्राह्मण का रूप धारण कर हाथों में हीरे, माणक, मोतियों का थाल लेकर श्रीराम के पास आए और उन्हें नल व नील दो भाइयों का पता बताया जिनकी मदद से समुद्र पर पुल बांधा गया और भगवान श्री राम लंका पहुंचे। वरुणावतार को तीन नामों से पुकारा जाता है। झूलेलाल, उदेरोलाल एवं अमरलाल। जन्म से पहले भाई रतनराय को बालक के झूलते हुए दर्शन हुए थे, इसलिए झूलेलाल कहा जाता है। मछली व घोड़े पर सवारी एवं झूले में झूलते व उनको स्तुति हेतु ज्योति प्रज्वलन के समय आयोलाल, झूलेलाल कहा जाता है। झूलेलाल भगवान ने वरुण पंथ की स्थापना की जिसमें 'जल और ज्योति पूजा को प्रमुखता दी गई है। सिंधी सभ्यता सिंधु घाटी की सभ्यता है। सिंधु संस्कृति अथवा वैदिक संस्कृति को यदि मानव जाति की संस्कृति कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वैदिक संस्कृति तथा आर्य संस्कृति का जन्म सिंधु नदी के तट पर हुआ इसलिए इसको सिंधु संस्कृति अथवा हिंदू संस्कृति कहा जाता है परंतु इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि यह संस्कृति केवल सिंधी भाषा भाषियों की संस्कृति है। सिंधु के कई अर्थ हैं। मूल अर्थ है सागर या दरिया। वेदों में सिंधु और सप्त सिंधु का वर्णन आया है। तदनुसार सिंधु वह देश है, जहां सिंधु नदी बहती है। इस प्रकार सिंधु दरिया का अर्थ भी देता है, और एक देश विशेष के नाम का भी। अब ती सिंधु प्रदेश की सीमाएं काफ़ी सिकुड़ गई हैं वह एक देश के स्थान पर एक प्रांत रह गया है परंतु प्राचीनकाल में सिंध का विस्तार दूर-दूर तक था। उसमें सात सिंधु अर्थात सात नदियों का समावेश था। झूलेलाल, उदेरोलाल तथा अमरलाल वही वरुण देवता हैं जिनको भारत के गांवों से लेकर शहरों तक के लोग अपने 'कुल देवता' के रूप में मानते हैं।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

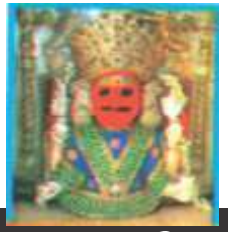

0294-2410444
0941415579 7 (M)

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ ज्योतिष कार्यालय

कांतिलाल जैन
(ब्रह्मचारी)

जैन साधनानुसार हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र के विशेषज्ञ

नाकोड़ा रूप भवन

167, रोड नं. 11, अशोक नगर, माया मिष्ठान के पास, उदयपुर-313001 (राज.)

मिलने का समय : दोपहर 3 से सायं 7 बजे तक

नाकोड़ा रूप भवन

Ph: 022-24123857, 093220-90220 (M)

**ब्लॉक नं. 10, केलकर बिल्डिंग,
नयागांव के.ए. हाउसिंग सोसायटी,
प्लॉट नं. 60-बी,एस.एम. जाधव मार्ग,
कृष्णा हॉल के सामने, दादर (ईस्ट) मुम्बई-14**

रविवार चौकी एवं आरती

**मिलने का समय :
दोपहर 3 से
सायं 7 बजे तक**

नैतिकता का संदेश श्रीराम का जीवन

रघुकुल में राजा दशरथ के महलों में जन्म लेने वाले श्री रामचन्द्र कोई उपदेश नहीं देते। वे एक साधारण इन्सान की जिन्दगी जीते हैं, पर जो कुछ उन्होंने किया, वह एक कर्त्तव्य परायणता और इन्सानियत की कहानी है। बाल्मिकी उन्हें साधुओं की रक्षा और दुष्टों का संहार करने वाले महामानव के रूप में देखते हैं। तुलसीदास जी की रामचरित मानस में उन्हें एक मर्यादा, पुरुषोत्तम रघुवंश शिरोमणि के रूप में चित्रित, किया गया है। कविवर मैथिली शरण गुप्त ने रामकथा की, उपेक्षिता उर्मिला को केन्द्र में रखकर राम कथा को धर्म बड़ा धनधाम नहीं के विचारों को महाकाव्य का रूप दिया है। समय के साथ इस दिव्य कथा में अगणित क्षेपक जुड़े और घटे हैं और पूरा भारत राम कथा के स्मारकों और मन्दिरों से अटा पटा पड़ा है। देवताओं में राम का एक विशिष्ट स्थान है। सरयू तट पर बसी उनकी स्वर्ण नगरी अयोध्या आज भी यथावत है। कनक बिहारी की पूजा अर्चना को समर्पित लाखों भक्तजन सारे संसार से यहां आकर अपने रामलला को शीश नवाकर मनोरथ की सिद्धी पाते हैं। उत्तर प्रदेश की यह धर्म नगरी राम के जीवन से जुड़े सजीव प्रसंगों की साक्षी है। कनक भवन, चित्रकूट, जनकपुरी, सीतामढ़ी, किष्किन्धा, नल-नील सेतु आदि ऐसे अगणित स्मारक हैं, जो आज भी रामायण के इतिवृत को प्रमाणित करते हैं। रामायण में 'मिरेकिल्स' या अविश्वसनीय घटनाएं नहीं के बराबर हैं और पूरी कथा बेहद नैसर्गिक और विश्वसनीय लगती है। कृष्ण कथा और गीता से बहुत पहले लिखी गई यह रचना भारतीय जीवन के मानव मूल्यों के श्रेयसता की गाथा है। जीवन और परिवार का हर सम्बन्ध इसमें चित्रित हुआ है और गोस्वामीजी सबका उत्तर देते हुए राम की विजय और रावण की पराजय से उस कर्त्तव्य, परायणता के मानवतावाद की शिक्षा दे रहे हैं, जो आज भी पूरे संसार का अभीष्ट है।

राम को अवतार न मानने वाले लोग भी उन्हें एक इतिहास पुरुष और महामानव मानकर उनके जीवन से प्रेरणा ले सकते हैं। राम ने ऐसा कुछ भी नहीं किया और कहा जो विवादास्पद हो या आलोचना का विषय बने । उन्होंने भारत भूमि को राक्षसों या दानवों से मुक्त किया। अपने पिता की आज्ञा मानी। साम्राज्य को छोड़कर चौदह वर्षों तक जंगलों में रहे। बालि का वध कर सुग्रीव को न्याय पूर्वक राजा बनाया। पत्नी का हरण करने वाले रावण को युद्ध में पराजित कर लंका को असुर राज्य से मुक्त किया। एक राजा का आदर्श जीवन जीते हुए रामराज्य का एक ऐसा मॉडल दुर्लभ है, जहां जन आलोचना के कारण उन्हें पत्नी सीता और पुत्र लव कुश तक का परित्याग करना पड़ा। रामनवमी कर्त्तव्य और त्याग की चेतना का पर्व है।

-त्रिलोकीदास खंडेलवाल

Raghu Mahal
Hotels Pvt. Ltd.
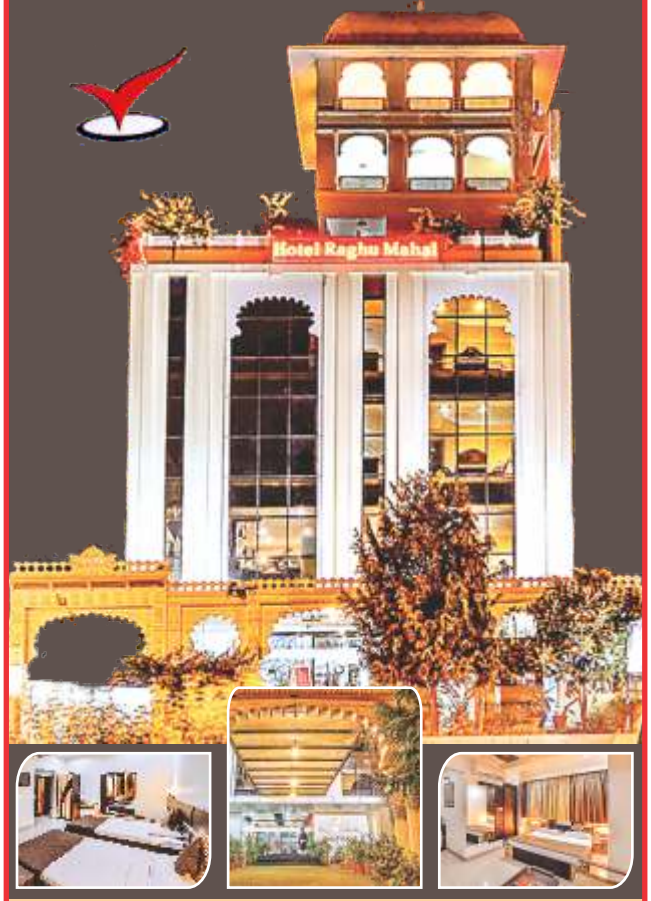

FLAMES RESTAURANT
(Multi Cusine)
(A Unit of Raghu Mahal Hotels Pvt. Ltd.)
Ph :- 0294-2425694 M.:- 09649466662

Spa-Beer Bar-Banquet Hall
93, Opp. M.B. College, Darshanpura, Airport Road,Udaipur (Raj.)
Tel :- 0294-2425690-93 Email :- raghumahalhotels@gmail.com
Website :- www.raghumahalhotels.com

दुनिया का पहला नाक से देने वाला कोरोनारोधी टीका लाँच

नाक के जरिए दिए जा सकने वाले दुनिया के पहले भारत निर्मित टीके को जनवरी के अन्तिम सप्ताह में स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने लाँच किया। नेजल टीके 'बीबीवी 154' को हीट्रोलोगस बूस्टर खुराक के रूप में वयस्कों में सीमित उपयोग के पिछले वर्ष नवंबर में भारतीय औषधि महानियंत्रक (डीसीजीआई) की मंजूरी मिली थी। हैदराबाद से संचालित कंपनी के अनुसार तीन चरणों में क्लीनिकल परीक्षणों में इस टीके के सफल परिणाम आए।

नेजल वैक्सीन को बूस्टर डोज के तौर पर दिया जाएगा। हालांकि इसे प्राइमरी वैक्सीन के तौर पर भी इस्तेमाल किया जा सकता है। मतलब जिन्होंने टीके नहीं लगवाए हैं वे इस नेजल वैक्सीन को ले सकते हैं। वहीं, दोनों डोज लेने वाले लोग भी बूस्टर डोज के तौर पर इस टीके को ले सकते हैं।

कोरोना वायरस समेत कई सूक्ष्म वायरस म्युकोसा के जरिये शरीर में प्रवेश करते हैं। नेजल वैक्सीन सीधे म्यूकोसा में ही रोग प्रतिरोधक क्षमता पैदा करती है। मतलब जहां से वायरस शरीर में घुसपैठ करता है। वैक्सीन वहीं से काम शुरू कर देती है। नेजल वैक्सीन शरीर में इम्युनोग्लोबुलिन उत्पन्न करती है। माना जाता है कि यह संक्रमण को शुरुआती चरण में रोकने में कारगर होता है। यह प्रसार को भी रोकता है।

कैसे इस्तेमाल होती है

यह वैक्सीन नाक के जरिये स्प्रै करके दी जाती है। हाल ही में एम्स के पूर्व निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया ने भी बताया था कि नेजल वैक्सीन बेहतर है, क्योंकि यह म्यूकोसा में ही इम्युनिटी बना देता है।

केवल वयस्कों के लिए

■ वैक्सीन स्टोरेज और डिस्ट्रीब्यूशन के लिए 2 से 8 डिग्री सेल्सियस पर स्थिर रह सकती है।

■ इसे वाशिंगटन यूनिवर्सिटी, सेंट लुइस के साथ साझेदारी में तैयार किया गया है।

■ नेजल वैक्सीन को 18 साल से ऊपर के लोगों के लिए मंजूरी दी गई है।

मौजूदा टीके से अलग कैसे

1. इस समय देश में लग रही वैक्सीन के दो डोज दिए जा रहे हैं। दूसरी खुराक के 14 दिन बाद टीका लेने वाल व्यक्ति को सुरक्षित माना जाता है, लेकिन नेजल वैक्सीन 14 दिन में ही असर दिखाने लगती है।

2. यह सिंगल डोज वैक्सीन है। इसके साइड इफेक्ट्स भी इंट्रामस्कुलर टीके के मुकाबले कम हैं। इससे सुई और सीरिंज का कचरा भी कम होगा।

3. नेजल डोज न केवल कोरोना से बचाएगा, बल्कि बीमारी के प्रसार को भी रोकेगा। मरीज में माइल्ड लक्षण भी नजर नहीं आएंगे।

पाठक पीठ

नृत्य सम्राट पंडित बिरजू महाराज की प्रथम पुण्यतिथि पर 'थम गई लय, बिखर गए घुंघरू श्रद्धांजलि स्वरूप विवेक अग्रवाल का आलेख बहुत सुंदर था। वास्तव में महाराज जी को नृत्य, शास्त्रीय संगीत, वाद्य–वादन और गायन में जो महारत हासिल थी वह अदभुत थी। उनकी अनुपस्थिति से नृत्य–संगीत क्षेत्र में कहीं न कहीं सूनापन तो दिखता ही है। नमन।

मनीष भटनागर,
जिला रसद अधिकारी

सियाचिन की बर्फ पर शिवा के कदम रेणु शर्मा का आलेख अच्छा था। इसके साथ ही उन्होंने मेवाड़ के उन वीर जवानों का भी जिक्र किया है, जो सीमा पर तैनात हैं और अपने अदम्य साहस के लिए सम्मानित किए गए हैं।

मुकेश कलाल,
आरएएस अधिकारी

सम्मेद शिखर क्षेत्र में इको सेंसेटिव जोन नोटिफिकेशन के प्रावधानों के कार्यान्वयन पर केन्द्र ने तत्काल रोक लगाकर उचित ही किया है। सम्मेद शिखर न सिर्फ जैन बल्कि सर्वसमाज की आस्था का केन्द्र है। फरवरी अंक में इस संबंध में महिम जैन का आलेख सामयिक था।

रिषभ भाणावत,
बिल्डर

फरवरी माह के अंक का सम्पादकीय ठीक वैसा ही था, जैसा एक सधे हुए सम्पादक की दृष्टि होती है। इस संबंध में मेरा एक सुझाव है कि वातावरण इस तरह का बनना चाहिए जिससे देश हर महीने चुनावी शोर से बच सके और सरकारें भी जनता के प्रति अपना दायित्व संजीदगी के साथ निर्वाह कर सकें।

राजेश मोटावत,
उद्यमी

प्रत्यूष

प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें

75979 11992, 94140 77697

प्रत्यूष

होलियाना मूड के पकवान

शुद्ध, स्वादिष्ट और पौष्टिक खानपान के बिना किसी त्योहार की चर्चा ही बेकार है। इस होली पर ऐसा क्या बनाएं, जिसका स्वाद यादगार और मज़ेदार भी बन जाए। रंगीले त्योहार पर प्रस्तुत हैं, कुछ खास रेसिपी।

रेणु शर्मा

रसमलाई चीज केक

सामग्री

बेस के लिए

- डाइजेस्टिव बिस्किट (टुकड़ा)– 200 ग्राम
- बटर (पिघला हुआ) – 80 ग्राम
- मूस के लिए
- वनीला पॉड–1
- मुलायम पनीर– 500 ग्राम
- फेंटी हुई मलाई– 500 ग्राम
- दूध– 100 ग्राम
- रसमलाई (साबुत) – 400 ग्राम
- जिलेटिन– 30 ग्राम
- ठंडा पानी (जिलेटिन को डुबोने के लिए)– 90 ग्राम

सजावट के लिए

- सफेद चॉकलेट स्प्रे

- पिस्ता के गुच्छे
- चॉकलेट गार्निश

विधि

बिस्किट के टुकड़े और मक्खन को अच्छी तरह से मिलाएं और दिल के आकार के पतीले में इसे फैलाएं। ठंडा होने के लिए इसे रेफ्रिजरेटर में रखें। 90 मि.ली. पानी में जिलों न डालकर इसे सोखने के लिए दूसरी तरफ रख दें। पनीर, फेंटा हुआ क्रीम, दूध और वनीला पॉड लेकर मूस मिश्रण बनाएं। रेफ्रिजरेटर में रखे बिस्किट के टुकड़े का प्रयोग करें, इसके ऊपर रसमलाई डालें। ओवन में जिलेटिन को पिघलाकर इसे मूस मिश्रण में मिलाएं। इस मिश्रण को पतीले में डालकर फीज होने के लिए रातभर के लिए रख दें। चीज केक को पतीले से निकालकर स्प्रे डालें और रेफ्रिजरेटर में पिघलने के लिए रख दें। पिस्ता के गुच्छे और चॉकलेट से इसे गार्निश करें।

चुकंदर का हलवा

सामग्री

- चुकंदर – 2 मध्यम आकार के कद्दूकस करके 2 कप बना लें
- दूध – 1 कप
- चीनी – 1/2 कप
- इलायची पाउडर– 1/2 बड़े चम्मच
- घी – 2 बड़े चम्मच
- काजू–5–6
- किशमिश – 9–10
- खोवा 100 ग्राम

विधि : मोटी परत वाली कढ़ाई को गरम करके इसमें घी डालें। जैसे ही घी गरम हो जाये तो इसमें काजू व किशमिश डालें और इसे सुनहरा भूरा होने तक तलें। इसके बाद इसे बाहर निकालरएक तरफ रख दें। फिर घी में कद्दूकस किया हुआ चुकंदर, डालें और इसे मध्यम आंच पर 8 से 9 मिनट तक चलायें। इसमें दूध मिलायें और इसे हल्की आंच पर पकायें। इसे बार–बार हिलाते रहें ताकि यह तली पर चिपके नहीं। दूध को चुकंदर में अच्छी तरह अपोषित हो जाने दें। इसमें चीनी और इलायची पाउडर डालकर अच्छी तरह मिलायें। फिर हल्की आंच पर चुकंदर को पकायें ताकि इसमें चीनी अच्छी तरह मिल जाए और यह मिश्रण गाढ़ा हो जाये। पकने के बाद मिश्रण अपने आप किनारों को छोड़ देगा। इस प्रक्रिया में 15 से 18 मिनट लगेंगे। गैस को ऑफ कर दें। इसमें भुने हुए काजू, किशमिश और खोवा को अच्छी तरह से मिलायें। अब इसे कटोरे में निकालकर नैवेद्यम (प्रसादम) के रूप में परोसें।

प्याज की कचौरी

सामग्री

- मैदा–2 कप
- नमक–1 चम्मच
- तेल– आवश्यकतानुसार
- पानी– आवश्यकतानुसार

भरावन के लिए

- बारीक कटा प्याज–3
- बारीक कटी मिर्च– 2
- जीरा– 3/4 चम्मच
- अदरक–लहसुन पेस्ट– 1 चम्मच
- धनिया पाउडर– 1 चम्मच
- हल्दी पाउडर– 1/2 चम्मच
- लाल मिर्च पाउडर– 1 चम्मच,
- जीरा पाउडर 1 चम्मच
- गरम मसाला पाउडर– 1 चम्मच

नमक– स्वादानुसार

विधि: एक बरतन में मैदा, नमक और एक चम्मच तेल डालें। कुछ देर तक अच्छी तरह से मिलाएं। कम–कम मात्रा में पानी डालते हुए मैदे को गूंद लें। ढककर एक से दो घंटे के लिए छोड़ दें। कड़ाही में दो चम्मच तेल गर्म करें और उसमें जीरा डालें। जब जीरा चटकने लगे तो उसमें कटा प्याज और मिर्च डालकर प्याज के पारदर्शी होने तक भूनें। सर्व करें। अदरक–लहसुन पेस्ट डालें और दो से तीन मिनट तक और भुनें। सभी मसाले और नमक कड़ाही में डालें। फिर इन्हें अच्छी तरह से मिलाएं और एक से दो मिनट तक भुनें। गैस ऑफ कर दें और भरावन की तैयार सामग्री को पूरी तरह से ठंडा होने दें। अब गूंदे हुए मैदे को एक बार फिर से गूंद लें और लोई काट लें। हर लोई के बीच में थोड़ी–थोड़ी मात्रा में तैयार भरावन को डालें और किनारे को बंद करके उसे पूरी के आकार में बेल लें। कड़ाही में तेल गर्म करें और कचौरी को मध्यम आंच पर सुनहरा होने तक तल लें। टिश्यू पेपर पर निकालें। पुदीना की चटनी के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

बेक्ड बूंदी जामुन

सामग्री

बूंदी के लिए

- 1 कप कुट्टू का आटा
- 3/4 कप पानी
- तलने के लिए घी

रबड़ी के लिए

- 1 लीटर दूध
- 100 ग्राम चीनी

चाशनी के लिए

- 1 कप चीनी
- 3/4 कप पानी
- 2 केसर के टुकड़े

अन्य सामग्री

- कटे हुए कुछ सूखे बादाम

शुगर सीरप (चाशनी के लिए): चीनी और पानी को मिलाएं और इस मिश्रण को हल्का गाढ़ा होने तक उबालें। इसे ठंडा कर लें। केसर को छोटे पतीले में गर्म करें, इसमें थोड़ा पानी मिलायें और इसे तब तक रगड़ें जब तक कि यह अच्छी तरह से घुल नहीं जाता। इसमें चाशनी मिलायें।

बूंदी के लिए: आटा और पानी मिलाकर चिकनी लेई जैसा बना लें। घी को गरम करें और इसे बूंदी के ऊपर डालें ताकि बूंदी गर्म घी में गिरजाए। बूंदी को भूनें। बूंदी को चीनी की गर्म चाशनी में डालें और इसे कुछ समय के लिए छोड़ दें ताकि चाशनी बूंदी में अच्छे से मिल जाये।

रबड़ी के लिए: दूध में चीनी डालकर इसे उबालें और हिलाते रहें, जब तक कि यह 2 कप न हो जाये। इसे ठंडा होने दें। अंत में परोसने से 15 मिनट पहले इस डिश के ऊपर समान रूप से बूंदी फैलायें। उस पर रबड़ी के मिश्रण को डालें और इसके ऊपर कटा हुआ बादाम और इलायची पाउडर डालें। अब असको ओवन में 200 डिग्री सेल्सियस पर 15 मिनट तक पकायें।

अमृतसरी अजवाइन पनीर

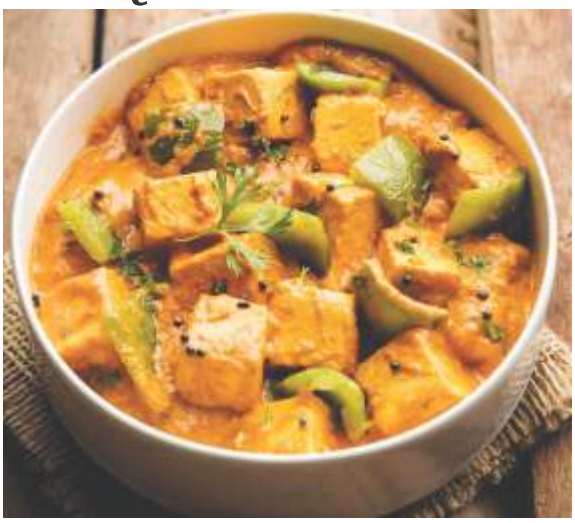

सामग्री

- पनीर– 1 कप
- टोमैटो प्यूरी– 1 कप
- बारीक कटा प्याज– 1
- लहसुन– 2 कलियां
- हरी मिर्च– 1
- अदरक– 1 टुकड़ा
- काजू–5
- लौंग– 2
- अजवाइन– 1 चम्मच
- गरम मसाला पाउडर– 1 चम्मच
- हल्दी पाउडर– 1 चम्मच
- धनिया पाउडर– 1–1/2 चम्मच
- लाल मिर्च पाउडर– 1/2 चम्मच
- चीनी– 1/2 चम्मच
- नमक– स्वादानुसार
- तेल– 1 चम्मच
- धनिया पत्ती– सजावट के लिए

विधि: प्याज, लहसुन, अदरक और हरी मिर्च का पेस्ट तैयार कर लें। इसके बाद काजू का भी पेस्ट तैयार करें। अजवाइन को पीस लें। एक पैन में तेल गर्म करें और उसमें प्याज वाले पेस्ट को कुछ मिनट तक भूनें। मध्यम आंच पर प्याज को अच्छी तरह से भूनें। हल्दी पाउडर, अजवाइन पाउडर और गरम मसाला को पैन में डालें और अच्छी तरह से मिलाएं। दो मिनट तक भूनें। अब पैन में टोमैटो प्यूरी, धनिया पाउडर, लाल मिर्च पाउडर और नमक डालकर मिलाएं। पैन को ढककर मसालों को चार से पांच मिनट तक पकाए। काजू का पेस्ट और चीनी डालकर मिलाएं। एक मिनट तक और पकाएं। सबसे अंत में पनीर के टुकड़े डालकर मिलाएं। दो–चार मिनट तक चलाएं। धनिया पत्ती से सजा कर पेश करें।

शाही पुलाव

सामग्री

- बासमती चावल–1 कप
- जीरा–1 चम्मच
- दालचीनी– 1 टुकड़ा
- इलायची–2
- केसर–चुटकी भर
- गर्म दूध–1/4 कप
- कटी हुई मिर्च–2
- नमक–स्वादानुसार
- घी–आवश्यकतानुसार
- पुदीना–4चम्मच

सब्जियों के लिए

- गाजर–2
- गोभी–1/2 कप
- काजू– 1/4 कप
- किशमिश–1/4 कप
- नमक स्वादानुसार

विधि: बासमती चावल को धोकर आधे घंटे के लिए पानी में भिगो दें। केसर को गर्म दूध में भिगों दें। एक बड़े पैन में घी गर्म करें और उसमें जीरा, दालचीनी, लौंग, इलायची और हरी मिर्च डालें। कुछ सेकेंड भूनें। अब पैन में चावल, नमक, केसर वाला दूध और कप पानी डालें। तेज आंच पर चावल को पकाएं। जब पानी उबलने लगे तो आंच धीमी कर दें और पैन को ढककर पानी के सूखने तक चावल को पकाएं। गैस ऑफ करें। गाजर और गोभी को छोटे–छोटे टुकड़ों में कांट लें। कड़ाही में घी गर्म करें और उसमें गोभी और गाजर डालें। हल्का–सा नमक छिड़के और सब्जियों को हल्का मुलायम होने तक पका लें। गैस ऑफ कर दें। अब एक दूसरे पैन में एक चम्मच घी और गर्म करें और उसमें काजू को सुनहरा होने तक भूनें। किशमिश डालें और कुछ सेकेंड भूनने के बाद गैस ऑफ कर दें। अब तैयार पुलाव में सब्जियां, मेवा और पुदीना पत्ती डालें। हल्के हाथों से मिलाएं और सर्व करें।

प्रत्यूष

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

व्यापारिक कार्यों में उन्नति के योग बनेंगे, धन प्राप्ति होगी, राजनीतिक कार्यों में उन्नति एवं सफलता मिलेगी। शत्रु पक्ष पराजित होगा। स्त्री, संतान का पर्याप्त सुख मिलेगा, यात्राओं से लाभ एवं प्रसन्नता मिलेगी। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। भाग्य पूर्ण रूप से साथ देगा, पुरुषार्थ में प्रबलता आवश्यक है।

वृषभ

कारोबार में उन्नति, धनलाभ होगा, परंतु खर्च भी अधिक होगा, सुख–समृद्धि में वृद्धि होगी, यात्रा में निराशा होगी, शत्रु पक्ष से हानि की संभावनाएं। मन क्रोधित होगा, हर काम में बाधाएं आएंगी, दाम्पत्य जीवन में कमी अनुभव होगी। किसी वृद्धजन के परामर्श से ही नीति निर्धारण करें। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

मिथुन

व्यवसाय उत्तम रहेगा। लाभ के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। राजकीय सम्मान एवं शासकीय पद प्राप्त होगा। धार्मिक कार्यों में रूचि अधिक रहेगी एवं खर्च भी होगा। परिवार में क्लेश विवाद रहेगा। भौतिक सुख में वृद्धि संभव। नया मकान, वाहन की प्राप्ति होगी। दीर्घकालिक निवेश से लाभ होगा।

कर्क

धन–मान की हानि, शासकीय एवं न्यायिक लाभ मिल सकता है। शत्रुओं से भय रहेगा। यात्राओं में निराशा हाथ लगेगी। मुख एवं रक्त विकास से शरीर को कष्ट हो सकता है। जो जातक पुलिस मिलिट्री आदि की तैयारी में हैं, उनको सफलता मिलेगी। स्थान परिवर्तन के भी योग है।

सिंह

व्यापार में लाभ विशेषकर श्वेत वस्तुओं से, खर्च अधिक बना रहेगा। राजकीय कार्यों से लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। धर्म में रूचि रहेगी। यात्रा के योग बनेंगे। परिवार में वाद–विवाद की स्थिति। शरीर को कष्ट रहेगा। क्रोध की अधिकता रहेगी। नौकरी पेशा जातक अपने ही सहकर्मियों से सावधानी बरतें।

कन्या

कारोबार एवं कार्य क्षेत्र में उन्नति, विशेष धन लाभ होगा। शासकीय क्षेत्र में मान–सम्मान में वृद्धि होगी। शत्रु पक्ष का दमन होगा। शरीर स्वस्थ रहेगा मन में प्रसन्नता रहेगी। साझेदारी में किए गए कार्य लाभप्रद सिद्ध हो सकते हैं। आत्मबल में कमी का अनुभव होगा।

तुला

कर्मक्षेत्र में प्रभावी रहेंगे एवं धन लाभ के पर्याप्त अवसर मिलेंगे, परंतु खर्च भी अधिक होगा। पुराने मित्र एवं सहयोगियों से मेल–मिलाप होगा। पद में वृद्धि होगी। गले में पीड़ा संभव है। शत्रु पक्ष से हानि की आशंका रहेगी। अनैतिक कार्य आपको कष्ट देंगे। किसी सुधीजन का सानिध्य प्राप्त होगा।

इस माह के पर्व/त्योहार

3 मार्च	फाल्गुन शुक्ल एकादशी	रामस्नेही फूलडोल/खाटूश्याम मेला
6 मार्च	फाल्गुन शुक्ल चतुदर्शी	होलिका दहन/होली चातुर्मास
7 मार्च	फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा	धूलंडी
8 मार्च	चैत्र कृष्णा प्रथमा	विश्व महिला दिवस/शब्बेरात
9 मार्च	चैत्र कृष्णा द्वितीया	संत तुकाराम जयंती
12 मार्च	चैत्र कृष्णा पंचमी	श्री रंग पंचमी
14 मार्च	चैत्र कृष्णा सप्तमी	शीतला सप्तमी पूजा
15 मार्च	चैत्र कृष्णा अष्टमी	शीतलाष्टमी पूजा/बासोड़ा/ केशरियाजी मेला/वर्षीतप प्रारंभ
17 मार्च	चैत्र कृष्ण दशमी	दशमाता व्रत पूजा
19 मार्च	चैत्र कृष्णा द्वादशी/त्रयोदशी	रंगतेरस
22 मार्च	चैत्र शुक्ला प्रतिपदा	नवरात्रि घट स्थापना/नवसंवत्सर (विक्रम संवत् 2080)
23 मार्च	चैत्र शुक्ला द्वितीया	चेटीचण्ड/झूलेलाल जयंती
24 मार्च	चैत्र शुक्ला तृतीया	गणगौर पूजा/रमजान मास प्रारंभ
29 मार्च	चैत्र शुक्ला अष्टमी	नवपद ओली प्रारंभ
30 मार्च	चैत्र शुक्ला नवमी	श्रीराम नवमी/राजस्थान दिवस

वृश्चिक

व्यवसायिक क्षेत्र में उन्नति मिलेगी। धनलाभ होगा। शासकीय एवं सामाजिक क्षेत्र में मान–सम्मान की प्राप्ति होगी। शत्रु पराजित होंगे। अहंकार काफी नुकसान पहुंचा सकता है। क्रोध पर नियंत्रण आवश्यक, दाम्पत्य में कमी, स्वास्थ्य प्रभावित होगा।

धनु

कार्य–व्यापार मध्यम रहेगा। धन का खर्च अधिक होगा। राजकीय कार्यों में सफलताएं मिलेगी। न्यायिक मामलों में विजय। धर्म–कर्म की वृद्धि होगी, भाई–भतीजों से मतभेद संभव, शारीरिक कष्ट की संभावना। कर्म क्षेत्र के लिए नई योजनाएं एवं नीति भविष्य में लाभप्रद रहेगी। भाग्यपूर्ण रूपेण साथ देगा।

मकर

व्यवसाय में आय कम व्यय अधिक, नौकरी पेशा जातकों को विशेष लाभ, कानूनी विवादों में नया मोड़ आएगा। उच्चाधिकारियों से विशेष सावधानी बरतें, स्थान परिवर्तन की संभावना बनेगी। भाई–बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। पैतृक मामले पक्ष में रहेंगे। माता–पिता को कष्ट होगा।

कुम्भ

व्यवसाय उत्तम रहेगा। स्थाई संपत्ति में वृद्धि, सामाजिक एवं शासकीय क्षेत्र में सम्मान मिलेगा। पदोन्नति होगी। शत्रुओं का दमन होगा। जनता में लोकप्रियता प्राप्त होगी। सतांन सुख का अनुभव करेंगे। भाग्य पर विश्वास न कर पुरुषार्थ पर बल भरोसा करें। मानसिक अवसाद की स्थिति बन सकती है।

मीन

दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता का अनुभव, कर्म क्षेत्र में कुछ नया कर पाएंगे। आय की अपेक्षा व्यय अधिक रहेगा। राजकीय लाभ प्राप्त होगा। प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। भाईयों का मेल मिलाप एवं कार्यों में सहयोग प्राप्त होगा। आकस्मिक कार्यों में असावधानी से हानि, संतान पक्ष से संतुष्टि, भाग्य में वृद्धि होगी।

साहित्य अकादमी स्थापना दिवस एवं अमृत सम्मान समारोह

उदयपुर। राजस्थान साहित्य अकादमी के 65वें स्थापना दिवस पर मुख्य वक्ता ओम थानवी ने कहा कि अब साहित्यिक समारोह भी बाजार की चीज हो गए हैं। यह बात साहित्य के नैतिक मापदण्डों के प्रतिकूल है। मुख्य अतिथि डॉ. चंद्रप्रकाश देवल ने कहा कि विश्व की सभी सभ्यताओं में सबसे पहले कविता का प्रादुर्भाव भारत में हुआ। अकादमी अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण ने अकादमी की भावी योजनाओं की जानकारी दी। राजस्थान साहित्य

अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष पं. जनार्दनराय नागर की पुत्रवधू डॉ. दिव्य प्रभा ने भी विशिष्ट अतिथि के तौर पर विचार रखे। अमृत सम्मान समारोह में 75 वर्ष की आयु प्राप्त पांच साहित्यकारों को शॉल, सम्मान पत्र, प्रतीक चिह्न तथा नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में किशन दाधीच समेत सरस्वती सभा के अन्य सदस्य भी मौजूद थे। आयोजन में साहित्यकारों की भागीदारी बहुत कम रही।

लोटस ने मनाया 16वां स्थापना दिवस

उदयपुर। लोटस हाइ-टेक इंडस्ट्रीज ने 16 वर्ष पूर्ण कर 17वें वर्ष में प्रवेश किया। महाप्रबंधक भानुप्रिया जैन ने बताया कि 16वें स्थापना दिवस और विश्वकर्मा जयंती के आयोजन डबोक स्थित फैक्ट्री में हुए। संस्थापक प्रवीण सुथार ने बताया कि इस अवसर पर अनूप सोनी, संजय गोयल, भगवती लाल सुथार, इंद्र कुमार सुथार, ख्याली लाल शर्मा, राधा किशन शर्मा, रोहित शर्मा मौजदू थे।

संभागीय आयुक्त एमबी चिकित्सालय में गंदगी पर नाराज

उदयपुर। संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट ने पिछले दिनों महाराणा भूपाल चिकित्सालय के इंमरजेंसी वार्ड से निरीक्षण करते हुए साफ-सफाई व प्रबंधन सेवाओं का जायजा लिया। विभिन्न कमियों पर अस्पताल प्रबंधन को सुधार के निर्देश दिए। उन्होंने पूरे परिसर में लगे 180 कैमरे पर महज एक ऑपरेटर होने पर आश्चर्य करते हुए कहा कि सबसे ज्यादा केस इंमरजेंसी में आते हैं, ऐसे में यहां की व्यवस्थाओं को हाइटेक बनाने की आवश्यकता है। निरीक्षण के दौरान आरएनटी प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल, एमबी अधीक्षक डॉ. आर एल सुमन, समिति सदस्य पंकज कुमार शर्मा भी मौजूद थे। भट्ट ने इमरजेंसी के बाहर अव्यवस्थित पार्किंग, पोर्च में क्षतिग्रस्त प्लस्तर और भीतर धंसी हुई फर्श पर नाराजगी जताते हुए लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को बुलाकर इसे शीघ्र दुरूस्त कराने को कहा। इन कार्यों में कोई कोताही बरतता है तो उसके विरूद्ध कार्रवाई करें।

डॉ. सिंह कॉस्मेटिक इर्मेटोलॉजी बोर्ड के चेयरमैन बने

उदयपुर। अर्थ ग्रुप के सीईओ डॉ. अरविंदर सिंह हाल ही में इंटरनेशनल बोर्ड ऑफ कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजी एंड एस्थेटिक्स, लंदन, यूके के चेयरमैन बने। डॉ. सिंह ने बताया कि यह बोर्ड भारत और विदेश में कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजी व एस्थेटिक्स के क्षेत्र में डिप्लोमा व सर्टिफिकेट्स प्रदान करेगा। इस बोर्ड में कॉस्मेटोलॉजी ट्रेनिंग के अवसर मिलेंगे। यह ट्रेनिंग्स ऑनलाइन, क्लासरूम तथा हैड्स ऑन प्रैक्टिकल में होगी। ये कोर्सेस एशिया में काफी कम दरों पर उपलब्ध कराएंगे। इन कोर्सेज की मदद से रोजगार तथा स्वरोजगार के अवसर मिलेंगे।

शंकर बने अध्यक्ष

उदयपुर। कृष्णा कल्याण संस्थान की संस्थापिका माया ने जिला अध्यक्ष पद पर विजय शंकर माली को मनोनीत किया। राष्ट्रीय प्रवक्ता मनोज चौधरी, ओपी महात्मा, उमेश शर्मा, बसंती देवी, कमलेंद्र सिंह आदि मौजूद थे।

चौहान प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर। राजस्थान शिक्षक एवं पंचायती राज कर्मचारी संघ की प्रदेश कार्यकारिणी के चुनाव निर्वाचन अधिकारी संयुक्त कर्मचारी महासंघ के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष ओमप्रकाश शर्मा की देखरेख में हुए। इसमें शेरसिंह चौहान प्रदेश अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित किए गए।

विद्यापीठ द्वारा डॉ पारीख को डीलिट उपाधि

उदयपुर। राजस्थान विद्यापीठ में प्राप्त डीलिट की उपाधि मेरे जीवन के अब तक मिले सभी सम्मानों में सबसे अहम है क्योंकि यह ऐसे संस्थान से प्राप्त हुई, जिसकी नींव ही मानवता, समुदायिक सेवा, पिछड़ों और वंचितों को मुख्यधारा से जोड़ने के विचारों पर टिकी है। यह विचार पद्मश्री डॉ. सुधीर एम पारीख ने जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के आईटी सभागार में 15वें विशेष दीक्षांत समारोह में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि विद्यापीठ और अमेरिका के ख्यातनाम विश्वविद्यालयों के बीच एक्सचेंज प्रोग्राम किए जाएंगे, जिससे विद्यार्थियों और शिक्षकों को शिक्षा और नवाचारों के अनुभव साझा करने का अवसर मिले। कुलपति प्रो एसएस सारंगदेवोत ने डीलिट उपाधि का वाचन कर उन्हें इस उपाधि से अलंकृत किया। प्रो सारंगदेवोत ने कहा कि भारतीय ज्ञान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऐसे रूप में लाना होगा जिससे विश्वपटल आलोकित हो जाए। आने वाले दिनों में वे ही संस्थान चल पाएंगे जो क्वालिटी एज्युकेशन, रिसर्च एवं नवाचार में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खरे उतर सकेंगे। इसी दिशा में विद्यापीठ नए आयाम स्थापित करने के लिए प्रयासरत है। विशिष्ट अतिथि नर्मदा बालघर के संस्थापक भरतभाई मेहता ने कहा कि समारोह से दोनों देशों के बीच नए संबंधों की शुरूआत हुई है। कुल प्रमुख बीएल गुर्जर, रजिस्ट्रार डॉ हेमशंकर दाधीच ने भी संबोधित किया। संचालन डॉ रचना राठौड़ ने किया। समारोह से पूर्व अतिथियों द्वारा संस्थान परिसर में संस्थापक जनुभाई की आदमकद प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

राव समाज का राष्ट्रीय महासम्मेलन

बांसवाड़ा। अखिल भारतीय राव समाज का राष्ट्रीय महासम्मेलन गत दिनों सागवाड़िया में किंग सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुंवर राव गगन सिंह के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। इस मौके पर टीकम सिंह राव ने 51 लाख रूपए समाज में शिक्षा के विकास एवं श्रवण सिंह राव ने 1.25 करोड़ रूपए बालक एवं बालिका शिक्षा के विकास के लिए देने की घोषणा की। महासम्मेलन में राव समाज को राष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ाने के अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। विभिन्न क्षेत्रों के समाजजन ने आयोजक परिवार के टीकम सिंह राव, गिरिराज सिंह, राव, गोविंद सिंह राव, गगन सिंह राव का स्वागत किया। भगवत सिंह नादाना ने बताया कि कार्यक्रम में महिलाओं की अधिक भागीदारी रही, राज्य के सभी जिलों सहित संपूर्ण भारत के विभिन्न अंचलों से राव समाज के युवा, मातृ शक्ति एवं वरिष्ठजन ने भाग लिया।

हनुमान मंदिर का 23वां पाटोत्सव

ब्यावर। श्री सीमेंट लिमिटेड स्थित श्री संकटमोचन हनुमान मंदिर का 3 फरवरी को 23वां पाटोत्सव विविध अनुष्ठानों व श्रीराम चरित मानस के अखण्ड पाठ के साथ मनाया गया। कम्पनी के संयुक्त अध्यक्ष श्री अरविंद खींचा दम्पत्ती ने पुर्णाहति पूजन किया। गर्भगृह में मैन्यू फेक्करिंग कलस्टर हेडइस्ट, श्रीमनोज श्रीवास्तव दम्पत्ती ने पं. लक्ष्मीनारायण पुष्कर के आचार्यत्व में पूजा अर्चना की। इस अवसर शहर में भव्य शोभा यात्रा भी निकाली गई। त्रि दिवसीय आयोजन में सांस्कृतिक संध्याएं भी हुई। भजन संध्या में कम्पनी कार्यकर्त्ताओं के साथ आमंत्रित शहरवासी भी खूब नाचे-झूमे। सभी कार्यक्रमों में कम्पनी के संजय मेहता, आर.एन.डाणी, मनोरंजन कुमार, शिखर चतुर्वेदी एवं जे.एस. गट्टानी, सहित श्री सीमेंट के विभिन्न विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों ने सपरिवार भाग लिया। हनुमान मंदिर का मनमोहक श्रृंगार किया गया।

ऑपरेशन कर निकाली 525 पथरियां

उदयपुर। शान्तिराज हॉस्पिटल, न्यू भोपालपूरा में 74 वर्षीय नीमच निवासी रोगी सुरेश माली का दूरबीन से 3-डी एवं आयसीजी तकनीक से ऑपरेशन कर पित्ताशय निकाला। इसमें 525 पथरियां निकाली गई। लेप्रोस्कोपिक एवं बेरियाट्रिक सर्जन डॉ. सपन जैन ने बताया कि मरीज पिछले 3 साल से पेट दर्द एवं पेनक्रियाटाइटिस बीमारी से भी परेशान था। ऑपरेशन के चार घंटे बाद मरीज को लिक्विड डाइट शुरू कर दी थी एवं हॉस्पीटल से अगले दिन छुट्टी दे दी गई।

मनोज व सीमा को नेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड सर्टिफिकेट

उदयपुर। 1857 से 1947 तक के अमर शहीदों और हजारों गुमनाम स्वाधीनता सेनानियों की वीर गाथा को इक्कीस हजार फीट कपड़े की दीर्घ पट्टी पर उकेर कर उदयपुर के मनोज आंचलिया और सीमा वेद ने विश्व कीर्तिमान बनाया है। उनके इस अद्भुत कार्य पर डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने उन्हें हार्वड रिकार्ड, नेशनल बुक ऑफ रिकार्ड सर्टिफिकेट प्रदान किया।

मेवाड़ पुनर्खोज का जेएलएफ में हुआ विमोचन

उदयपुर। जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में फोटाग्राफ के जरिये मेवाड़ के गौरवशाली इतिहास एवं वर्तमान व्यवहार के बारे में डॉ संदीप पुरोहित की किताब मेवाड़ पुनर्खोज का विधानसभा अध्यक्ष डॉ सीपी जोशी, डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ व निवृत्ति कुमारी सिंह ने विमोचन किया। किताब में महलों, मंदिरों के अलावा मेवाड़ के शौर्य और स्वाभिमान के प्रतीक चित्तौडगढ़ और महाराणा प्रताप को ही विशेष स्थान दिया गया है। झीलों के साथ पिछोला के घाट और उससे जुड़ी संस्कृति व तीज-त्यौहारों को बदलते परिवेश के साथ बताया गया है।

होटल एसोसिएशन उदयपुर एवं नेपाल के बीच व्यवसायिक संगोष्ठी

उदयपुर। होटल एसोसिएशन उदयपुर के अंतरराष्ट्रीय टूर के दौरान नेपाल के काठमांडू स्थित होटल वैशाली में संगोष्ठी हुई। होटल एसोसिएशन अध्यक्ष धीरज जोशी ने नेपाल की एसोसिएशन को उदयपुर आने का न्यौता दिया। सचिव जतिन श्रीमाली ने उदयपुर के सांस्कृतिक विरासत एवं टूरिज्म के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी और दोनों देशों के बीच हो सकने वाले पर्यटन व्यवसाय पर रोशनी डाली। अधिशासी सदस्य एवं टूर कोऑर्डिनेटर हिमांशु गुप्ता ने नेपाल एसोसिएशन के सत्कार के लिए धन्यवाद प्रेषित किया। नेपाल होटल ऐसोसिएशन अध्यक्ष श्रीजन राणा ने दोनों देशों के मध्य पर्यटन व्यापार बढ़ाने की असीमित संभावना की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया। इस मौके पर पूर्व अध्यक्ष भगवान वैष्णव सुदर्शन देव सिंह कारोही, राजेश अग्रवाल, रतन टाक, नरेश भादविया भी उपस्थित थे।

सद्दू पांडे के चित्रों का विमोचन

उदयपुर। सनाढ्य समाज साहित्य मण्डल कार्यालय पर मथुरा के निकट गिरीराज पर्वत पर श्रीनाथ जी के प्राकट्य निमित्त रहे सद्दू पांडे के कृतित्व चित्रों का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. अनिल शर्मा, विशिष्ठ अतिथि राजेंद्र प्रसाद सनाढ्य थे। अध्यक्षता अम्बालाल सनाढ्य ने की। इस अवसर पर विजय शर्मा, कमाण्डर शलभ शर्मा, लव शर्मा, वात्सल्य शर्मा, सुषमा शर्मा, मीनाक्षी शर्मा, सावन सनाढ्य, सुषमा दीक्षित, वंशिका शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए।

श्री परशुराम कुंड आमंत्रण यात्रा

कोटा। विप्र फाउण्डेशन एवं समस्त ब्राम्हण समाज के तत्वावधान में अरूणाचल प्रदेश स्थित परशुराम कुण्ड पर भगवान परशुराम की 51 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापना के क्रम में यहा भव्य श्री परशुराम कुण्ड आमंत्रण यात्रा निकाली गई। विप्र फाउण्डेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं यात्रा संयोजक सुरेन्द्र शर्मा ने बताया कि यात्रा में विप्र फाउण्डेशन के जिलाध्यक्ष अजय चतुर्वेदी, उपाध्यक्ष हीरेन्द्र शर्मा व संजय शर्मा, महामंत्री विकास शर्मा सहित विप्र फाउण्डेशन व सभी ब्राम्हण समाजों के पदाधिकारी मौजूद थे।

वृद्धाश्रम के बुजुर्गों से लिया आशीर्वाद

उदयपुर। तारा संस्थान द्वारा संचालित श्रीमती कृष्णा शर्मा आनंद वृद्धाश्रम में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. गौरव वल्लभ तथा हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड के पूर्व मुख्य कार्यकारी एवं वेदांता ग्रुप के डायरेक्टर अखिलेश जोशी ने बुजुर्गों से आशीर्वाद प्राप्त किया। हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी एवं वेदांता ग्रुप के डायरेक्टर अखिलेश जोशी ने कहा कि जीवन में आनंद प्राप्त करना बहुत जरूरी है। व्यक्ति मन से अकेला होता है। विचारों से सारी दुनिया चलती है। तारा संस्थान की अध्यक्ष कल्पना गोयल ने संस्थान की जानकारी दी। संचालन संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी दीपेश मित्तल ने किया।

धानमंडी विद्यालय में वार्षिकोत्सव

उदयपुर। महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय धानमंडी में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह हुआ। संस्था प्रधान ऋचा रूपल ने वार्षिक प्रतिवेदन पढ़ा एवं स्वागत अभिभाषण दिया। एनके नागर को भामाशाह पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। अध्यक्षता मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कुंज बिहारी भारद्वाज ने की। मुख्य अतिथि महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति के संयोजक पंकज कुमार शर्मा, विशिष्ट अतिथि नीतु गुप्ता, फिरोज अहमद शेख, विजय सारस्वत व चेतन पानेरी थे।

अयूब बांसवाड़ा कॉर्डिनेटर

उदयपुर। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने लीडरशीप डेवलपमेंट एलडीएम के तहत बांसवाड़ा लोकसभा सीट के लिए मोहम्मद अयूब को कॉर्डिनेटर नियुक्त किया है।

एमबी में आधुनिक आईसीयू शुरू

उदयपुर। एम बी चिकित्सालय में विकसित आत्याधुनिक आईसीयू को भंवरलाल तायलिया ट्रस्ट ने गत दिनों कॉलेज प्रशासन को सौंप दिया। 26 बेड्स की आई.सी.यू. व 9 काटेज मय प्रतीक्षालय, डॉक्टर्स व नर्सिंग अधिकारियों के ड्यूटी कक्ष ट्रस्ट ने प्रधानाचार्य एवं नियंत्रक डॉ लाखन पोसवाल व मेडीकल सुपरिटेंडेंट डॉ आर एल सुमन को सुपुर्द किए। इस अवसर पर ट्रस्टी एम के अग्रवाल, मनोज अग्रवाल, पूर्व प्रधानाचार्य डॉ एके गुप्ता, डॉ जेके छापरवाल, डॉ मुकेश बड़जात्या, डॉ गुरदीप गम्भीर, डॉ महेश दवे, डॉ आर एल मीना, डॉ ओपी मीना, डॉ नीरा सामन, डॉ राहुल जैन, जितेंद्र तायलिया, जितेंद्र भटनागर व तायलिया ट्रस्ट के ट्रस्टी व परिवार के सदस्य मौजूद थे।

अभिनेत्री महिमा ने की अर्थ ग्रुप की सराहना

उदयपुर। बॉलीवुड अभिनेत्री महिमा चौधरी अर्थ ग्रुप के टैलेंट हंट राउंड में शामिल होने उदयपुर आई। उन्होंने अर्थ स्किन तथा फिटनेस पर मशीनों व उनके द्वारा दी जा रही सर्विसेज को देखा। उन्होंने कहा कि मैं अचंभित हूं कि उदयपुर जैसे शहर में इस तरह की अंतरराष्ट्रीय स्तर की मशीनें तथा सेवाएं उपलब्ध हैं। उन्होंने अर्थ ग्रुप को वर्ल्ड रिकॉर्ड मिलने पर बधाई भी दी। ग्रुप के सीईओ डॉ. अरविंदर सिंह, डॉ. दीपा सिंह, डॉ. खुर्शीद अहमद और प्रवीण शर्मा ने चौधरी का स्वागत किया।

टेन ट्विस्टर्स बारबक्यू रेस्टोरेंट का उद्घाटन

उदयपुर। मशहूर टेन ट्विस्टर्स बारबक्यू रेस्टोरेंट का उदयपुर में उद्घाटन हुआ। यह उदयपुर का सबसे बड़ा स्पेस वाला बारबक्यू रेस्टोरेंट है, जिसकी केपेसिटी 120 सीट की है। अलग से 60 लोगों का बैंकेट हॉल, जिसको कीटी पार्टी, बर्थ डे पार्टी एवं कॉन्फ्रेंस आदि के लिए बनाया गया है। रेस्टोरेंट फैमिली एटमोस्पियर के हिसाब से बनाया गया है, जहां पर मोकटेल, फास्ट फूड फॉफी शॉप, स्टार्टर की हाइयेस्ट रेंज, वेज नॉनवेज, आलाकार्ड की सुविधा है। रेस्टोरेंट आरके सर्किल से शोभागपुरा सर्किल लिंक रोड पर है। मैनेंजिग डायरेक्टर डॉ वसीम खान, मो. शाकीर ने बताया कि उद्घाटन समारोह में संभ्रांत लोगों की मौजूदगी रही।

अणुव्रत समिति की नई कार्यकारिणी

उदयपुर। अणुव्रत समिति उदयपुर की नई कार्यकारिणी मुनि सुरेश कुमार, मुनि सुबोध कुमार मेघांश के सानिध्य में घोषित की गई। मुख्य संरक्षक गणेश डागलिया, अध्यक्ष डॉ सुरेन्द्र छंगानी, महामंत्री राजेंद्र सेन, संरक्षक कैलाश मानव, शब्बीर के मुस्तफा, परामर्शक अरूण कोठारी, डॉ. निर्मल कुणावत, आलोक पगरिया, उपाध्यक्ष मनमोहन राज सिंघवी, दिनेश कोठारी, प्रणिता तलेसरा, कोषाध्यक्ष सुनील खोखावत, प्रचार प्रसार मंत्री चतर लाल सोमानी, संगठन मंत्री अरविंद चित्तौड़ा, अशोक राठौड़, भरत सोनी बनाए गए।

डॉ. छापरवाल को मानद उपाधि

उदयपुर। फिजीशियन डॉ. जे.के. छापरवाल को उनकी चिकित्सा जगत में दी गई उल्लेखनीय सेवाओं के लिए फेलो ऑफ इंडियन कॉलेज ऑफ फिजिशियन की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान अहमदाबाद में एसोसिएशन ऑफ फिजीशियन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दिया गया। फिजिशियन डॉ. सुधीर भंडारी ने देश के 129 भारतीय व 4 विदेशी विशेषज्ञों को फेलोशिप देकर सम्मानित किया। ऐसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. गिरीश माथुर, डॉ. एएम भगवती व डॉ. नंदिनी ने भी विचार रखे।

मुरली राजानी अध्यक्ष

उदयपुर। पूज्य सिंधी पंचायत हिरणमगरी सेक्टर 3-8 की साधारण सभा की बैठक सेक्टर 4 स्थित भवन में हुई। अध्यक्षता सिंधी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हरीश राजानी ने की। आय-व्यय का विवरण कोषाध्यक्ष नरेश लालवानी ने पेश किया। महासचिव ओमप्रकाश तलदार ने भी जानकारी दी। अध्यक्ष मुरली राजानी को ही आगामी कार्यकाल के लिए पुन: अध्यक्ष चुना गया। जीडी पाहुजा, कमल पाहुजा, राजेश गोकलानी, ओमप्रकाश आहूजा, लक्ष्मण रामचंदानी, रमेश चोटरानी, गिरीश राजानी, बसंत पंजवानी मौजूद थे।

आंचल को पीएचडी उपाधि

उदयपुर। भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर की ओर से आँचल मेनारिया को 'ऑटो मोबाइल कम्पनियों में कोविड-19 के स्तर एवं उत्पाद प्रचार रणनीति' विषय पर शोध के लिए पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। आँचल ने शोध कार्य भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय के व्यावसायिक प्रशासन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. राहुल खन्ना के निर्देशन में पूर्ण किया।

गुजरात समाज अध्यक्ष का स्वागत

उदयपुर। अखिल भारत गुजराती समाज के अध्यक्ष राजेंद्र भाई टांक के आगमन पर उदयपुर गुजराती समाज के पदाधिकारियों ने स्वागत किया। इस अवसर पर अध्यक्ष राजेश बी मेहता एवं सचिव दिनेश भाई पटेल, दिलीप भाई सोनी, गिरिश भाई पटेल, नितिन भाई, जयेश भाई जोशी आदि मौजूद थे।

पेसिफिक विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह, 700 विद्यार्थियों को मिली डिग्रियां

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह 4 जनवरी को कुलाधिपति राहुल अग्रवाल व मुख्य अतिथि उच्चतम न्यायालय के जस्टिस जितेन्द्र कुमार माहेश्वरी के सानिध्य में गरिमापूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। जिसमें 700 विद्यार्थियों को विभिन्न स्तर की डिग्रियों प्रदान की गई। इनमें 40 विद्यार्थी स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक विजेता भी थे। इस अवसर पर कुलाधिपति अग्रवाल ने कहा कि विश्व विद्यालय के शिक्षकों से एक ही अपेक्षा है कि वे अपने द्वारा अर्जित ज्ञान को पहले स्वयं आत्मसात करें। हमें ऐसे शैक्षिक मॉडल तैयार करने होंगे, जो नई शिक्षा नीति की प्राथमिकताओं को पूरा करें। उपकुलपति डॉ. ए.पी. गुप्ता, वाइस चेयरमैन प्रीति अग्रवाल, यूनेस्को के एशिया पेसिफिक क्षेत्रीय व संतत विकास महात्मा गांधी संस्थान के अध्यक्ष प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा ने भी विचार रखे। विशिष्ट अतिथि डॉ. अरविंद द्विवेदी, न्यायाधीश इन्द्रप्रीत सिंह जोश, केवल कौशिक, चेयरमैन बी.आर. अग्रवाल, राजेन्द्र प्रसाद गोयल, अखिलेश द्विवेदी, अमित सोनी, शरद कोठारी आदि थे।

पीडियाट्रिक कैंसर वार्ड का उद्घाटन

उदयपुर। विश्व कैंसर दिवस पर एचआरएच ग्रुप के निदेशक डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ जीबीएच कैंसर अस्पताल पहुंचे। वहीं बच्चों के लिए पीडियाट्रिक कैंसर वार्ड का उद्घाटन किया। मेवाड़ ने कहा कि कैंसर रोगियों की सेवा में सदैव तत्पर हूं। जिसको भी आवश्यकता हो मेरे दरवाजे खुले हैं। अर्चना ग्रुप के निदेशक सौरभ पालीवाल, शालिनी ने भी संबोधित किया। डॉ. कुरेश बंबोरा, निदेशक डॉ. सुरभि पोरवाल, डीन डॉ. विनय जोशी, डॉ. तरूण व्यास, डॉ रोहित रेबेलो, डॉ. ममता लोढ़ा, डॉ. मानसी शाह और आशीष शर्मा भी मौजूद रहे। संचालन विवेक अग्रवाल ने किया।

दिव्यानी समाज कल्याण बोर्ड की सदस्य

उदयपुर। राजस्थान राज्य समाज कल्याण बोर्ड की ओर से उदयपुर में सेव द गर्ल चाइल्ड की ब्रांड एंबेसडर डॉ. दिव्यानी कटारा को बोर्ड सदस्य के पद पर नियुक्त दी गई है। उन्हें नियुक्ति पत्र बोर्ड अध्यक्ष अर्चना शर्मा द्वारा दिया गया।

राजौरा खेलो इण्डिया में टीम प्रशिक्षक

उदयपुर। राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद, जयपुर द्वारा युवा मामले एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा भोपाल में 30 जनवरी से 11 फरवरी तक खेलो इण्डिया यूथ गेम्स 2022 में राजस्थान जूडो टीम के साथ डॉ. हिमान्शु राजौरा, जूडो प्रशिक्षक को प्रशिक्षक नियुक्त किया है। यह जानकारी जिला खेल अधिकारी शकील हुसैन ने दी।

बड़ाला क्लासेज की गुड लक पार्टी

उदयपुर। बड़ाला क्लासेज पर 12वीं कक्षा के लिए गुड लक पार्टी हुई। निदेशक त्रय सीए राहुल बड़ाला व निशांत बड़ाला, सौरभ बड़ाला ने बताया कि स्टूडेंट ऑफ द ईयर का अवार्ड दक्ष लोढ़ा एवं तिथि बोहरा को मिला। इस दौरान विष्णु सुहालका, सुमीत पाल सिंह अरोड़ा, संजय कुमार जैन, रजनीश गोस्वामी, शैलेंद्र झा, शरद जैन, आदित्य बड़ाला, हर्षल गांधी, सुधांशु गोयल, जुबिन सलूजा, रामेश्वर सुखवाल, अभिषेक जैन भी उपस्थित थे।

एयरटेल 5जी प्लस लांच

उदयपुर। डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने सिटी पैलेस से उदयपुर में एयरटेल 5जी सेवा की शुरूआत की। उन्होंने कहा कि उदयपुर में 5जी की शुरूआत बड़ी उपलब्धि है। यहां के नागरिकों के साथ ही पर्यटक भी इस सेवा का लाभ ले सकेंगे।

भानावत अध्यक्ष, पारीक सचिव

उदयपुर। आर्ची ग्रुप ऑफ बिल्डर्स की ओर से न्यू भूपालपुरा स्थित प्रोजेक्ट आर्ची आर्केड में रेजीडेंशियल वेलफेयर सोसायटी का गठन किया गया। आर्ची ग्रुप के ऋषभ भागावत , विनीत सरूपरिया, लोकेश मल्हारा, राजीव जैन, डूंगरसिंह कोठारी, शैलेष सरूपरिया, हिमांशु चौधरी ने कार्यकारिणी को सोसायटी दस्तावेज सुपूर्द किए। डॉ. तुक्तक भानावत अध्यक्ष, पीयूष पारीक सचिव, आलोक लसोड़ कोषाध्यक्ष, राजीव जैन उपाध्यक्ष, पुलकित अग्रवाल, संयुक्त सचिव और सदस्य अमित शर्मा, दिनेश जैन, मनीष जैन, राजेन्द्रकुमार जैन, हितेश मोगरा ने कार्यभार संभाला।

मोगरा बार एसो. के नए अध्यक्ष शिव कुमार महासचिव, दशोरा बने उपाध्यक्ष

उदयपुर। बार एसोसिएशन के वर्ष 22 जनवरी 2023 की कार्यकारिणी के लिए हुए चुनाव में राकेश मोगरा विजयी रहे। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी मनीष श्रीमाली को 670 रिकॉर्ड मतों से हराया। वहीं महासचिव पद पर शिव कुमार उपाध्याय जीते। मोगरा की जीत के बाद साथी अधिवक्ताओं ने कोर्ट परिसर में जमकर आतिशबाजी की। जीत के बाद मोगरा ने पद एवं गोपनीयता की शपथ ली, निर्वतमान अध्यक्ष गिरजा शंकर के नहीं आने पर उपाध्यक्ष दिलीप बापना ने शपथ दिलाई।

जिला हज कमेटी की घोषणा

उदयपुर। राजस्थान प्रदेश हज कमेटी अध्यक्ष एवं विधायक अमीन कागज़ी ने उदयपुर जिला हज कमेटी के संयोजक पद पर हाजी मोहम्मद अयूब डायर, सहसंयोजक हाजी इसरार अहमद, हाजी मुस्ताक अली, सदस्य हाजी बाबू खान, मोहम्मद नासिर, हाली अशफाक हुसैन, मोहम्मद रईस खान, हाजी मोहम्मद हनीफ, मोहम्मद याहया, हाजी सरफराज, हाजी सुल्तान बक्श शेख, अहसान बक्श शेख, हाजी फरीद अहमद शेख को नियुक्त किया

डॉ. शर्मा संयुक्त निदेशक बने

उदयपुर। राजस्थान सूचना एवं जनसंपर्क सेवा के वर्ष 2005 बैच के अधिकारी डॉ. कमलेश शर्मा ने पदोन्नति पर संयुक्त निदेशक का पदभार ग्रहण किया। बांसवाड़ा जिले के बड़ोदिया गांव निवासी डॉ.शर्मा उदयपुर कार्यालय में उपनिदेशक के पद पर कार्यरत थे। और इनकी पदोन्नति गत दिनों हुई थी। इससे पूर्व डॉ. शर्मा डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ जिले में भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

मीणा शहर ए और सिंह बी के अध्यक्ष

उदयपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने उदयपुर जिले में विभिन्न ब्लॉक अध्यक्षों को नियुक्त किया है। उदयपुर शहर ए के सोमेश्वर मीणा और उदयपुर शहर बी का अजय सिंह को ब्लॉक अध्यक्ष नियुक्त किया है। साथ ही राजेन्द्र जैन को झाड़ोल, रायसाराम खैर को कोटड़ा, अमरसिंह सिसोदिया को गिर्वा व कमल डांगी को हिरणमगरी का ब्लॉक अध्यक्ष बनाया गया है।

डॉ. छतलानी को मां शारदे सेवा सम्मान

उदयपुर। ऋषि वैदिक साहित्य पुस्तकालय फतेहाबाद, आगरा ने जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी को मां शारदे सेवा सम्मान दिया। उन्हें से सम्मान राष्ट्रीय स्तर पर की गई साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षणिक व सामाजिक सेवाओं के लिए मुकेश कुमार, ऋषि वर्मा ने दिया।

दुर्गेश नंदवाना सम्मानित

उदयपुर। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा आयोजित 65वें स्थापना दिवस समारोह पर संस्था के निर्माण, विकास, ध्येय की पूर्ति में महत्ती भूमिका और सेवाकाल में श्रेष्ठ उल्लेखनीय सेवाओं के लिए दुर्गेश नंदवाना को सम्मानित किया गया। अकादमी अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण, पत्रकार ओम थानवी, साहित्यकार सी.पी. देवल और शिक्षाविद् दिव्यप्रभा नागर आद् ने उन्हें सम्मानित किया।

सिंघवी अशासकीय सदस्य मनोनीत

उदयपुर। राजस्थान सरकार ने रोटरी के पूर्व प्रांतपाल निर्मल सिंघवी को उदयपुर जिले के जन अभियोग एवं सतर्कता समिति के अशासकीय सदस्य के रूप में मनोनीत किया है। बसंती देवी मीणा, सवाराम गमेती, मोहनलाल खराड़ी, अंबालाल मेघवाल, अमित सुवालका, वीरेंद्र रोजी, नजमा मेवाफरोश भी शामिल है।

लघु पुस्तिका का विमोचन

उदयपुर। मेवाड़ के यशस्वी महाराणा भूपालसिंह की 139वीं जयंती पर सूक्ष्मकृतिकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा द्वारा निर्मित उनके जीवन एवं शासनकाल पर आधारित लघु पुस्तिका का निर्माण किया गया। जिसका विमोचन लोकजन सेवा संस्थान द्वारा आयोजित जयंती समारोह में डॉ. विमल शर्मा, संस्थापक जयकिशन चौबे, इन्द्रसिंह राणावत के सानिध्य में किया गया है। चौबे ने बताया कि समरोह में शहर की 34 हस्तियों को सम्मानित किया गया।

संवेदना/श्रद्धांजलि

जावद। श्री कन्हैयालाल जी पालीवाल का 31 जनवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी, पुत्र दिनेश, दीपक व कुलदीप तथा पौत्र, भाई-भतीजों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री अम्बालाल जी नेणावा चक्कीवाले का 11 फरवरी को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती कमलाबाई, पुत्र कैलाश व भगवतीलाल, पुत्रियां श्रीमती राजूदेवी सुवानिया व ललिता दया तथा पौत्र-पौत्रियों-दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री जमनालाल जी सोनी (वैनाथिया) का 6 फरवरी को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गादेवी, पुत्र कमल व भगवान सोनी (कांग्रेस कार्यकर्ता), पुत्री श्रीमती अंजना तथा भाई-भतीजों का संपन्न परिवार छोड़ गए हैं। स्व. सोनी धर्मपरायण व समाज सेवा में अग्रणी थे।

ॐ

प्रथम स्मरण

थमते नही हैं आँसू आँखे आज भी नम है,
एक आपकी कमी जिन्दगी का गम है।
बड़े स्नेह से संवारा था जीवन हमारा,
बस आपकी याद ही है जीने का सहारा ।।

श्री राजेन्द्र जी पालीवाल (राजु भाई)

सुपुत्र स्व. श्रीमती लीला देवी एवं स्व. श्री रूपशंकर जी पालीवाल (उथनोल वाले)
की प्रथम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती इन्द्रा पालीवाल (धर्मपत्नी), स्व. श्री सुरेश पालीवाल-श्रीमती शीला पालीवाल (भाई–भाभी),
श्री सौरभ पालीवाल-श्रीमती नेहा पालीवाल (चन्दन),
श्री लोकेन्द्र पालीवाल-श्रीमती भूमिका पालीवाल (पुत्र–पुत्रवधू),
हियाश्री, प्रिहान, काव्याश्री, हर्षवर्द्धन (पौत्र, पौत्रियां),
श्रीमती राखी-स्व. भूपेन्द्र जी, श्रीमती शीतल-अम्बरीश जी, श्रीमती मीनाक्षी-श्री शैलेन्द्र जी (पुत्री-जंवाई सा.),
धनन्जय, भार्गवी, नीति, ऋत्विक, ग्रंथ (दोहित्र, दोहित्रियां),
एवं समस्त पालीवाल एवं अर्चना अगरबत्ती (अर्चना ग्रुप) परिवार एवं स्टाफ
मो. 9829042705, 9950815555

• अर्चना अगरबत्ती
• अर्चना एक्टीव प्लस वाशिंग पाउडर
• अर्चना ग्रुप (नवभारत इण्डस्ट्रीज)

ACTIVE DETERGENT POWDER

उदयपुर संभाग का सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थान

अनुष्का एकेडमी

आज ही जुड़कर कीजिये अपनी सफलता सुनिश्चित

UNDER THE GUIDANCE OF

Dr. S.S.Surana
FOUNDER
Dr. Anushka Group of Institutes

Mr. Rajeev Surana
HON. SECRETARY
Dr. Anushka Group of Institutes

Dr. T.C Damor
IPS (RETD.)
EX-IG & EX-VC

Mr. S.L. Bohra
IAS (RETD.)

Mr. Vishrut Abhinna
FORMER CIVIL SERVANT

Smt. Kamla Surana
CHAIRPERSON
Dr. Anushka Group of Institutes

UPSC | RAS | BANK | SSC | CLAT

CET | राज. पुलिस SI | LDC | राज. पुलिस कॉन्सटेबल | 2nd & 3rd Grade शिक्षक

HIRAN MAGRI, SECTOR 3, NEAR SEWASHRAM BRIDGE,UDAIPUR

8233223322 | 8233033033 | 7340019191

18 YEARS OF EXCELLENCE

ARAVALI GROUP OF COLLEGES

Approved by AICTE, NCTE, INC, RNC & Affiliated to RTU-Kota, BTER, RUHS, MLSU-Udaipur

1st In Udaipur RTU QIV Ranking 2021-22

AITS is Accredited by NAAC

B.Tech. | M.Tech. | M.C.A. | B.C.A. | B.Sc. | Polytechnic Diploma
B.Sc. Nursing | B.Sc. - B.Ed. | B.A. - B.Ed. | B.A. | B.Ed.

Aravali Knowledge Campus, Umarda, Udaipur (Raj.) | +919513105332 | www.aravalieducation.org

Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth (Deemed To Be University)

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय)

Pratap Nagar, Udaipur – 313001 (Raj.) Ph. & Fax : 0294-2492440, Email: admissions@jrnrvu.edu.in

समस्त पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) से मान्यता प्राप्त

ADMISSIONS OPEN - 2023-24

Manikyalal Verma Shramjeevi College

Faculty of Social Sciences and Humanities : Ph. : 0294-2413029, 9829160606, 9460826362

B.A. : English, Hindi, Sanskrit, History, Sociology, Geography, Economics, Political Science, Public Administration, Environmental Science, Jyotish, Music.
M.A. : English, Hindi, Sanskrit, History, Sociology, Geography, Economics, Political Science, Music. **Diploma Courses** : Diploma in Music (Sugam Sangeet), Diploma in Panchgavya, P.G. Diploma in G.I.S. and Remote Sensing, Bachelor of Journalism and Mass Communication. **Certificate Courses** : Spoken English, Proficiency in English and Communication Skills, Culture of Rajasthan, Research Methodology and Data Analyst, Human Rights, Acupressure.

Faculty of Commerce : Ph. : 0294-2413029, 9460275655, 9460372183

B.Com., BBA., M.Com. (Accounting, Business Administration), Master of NGO Management, PG Diploma in Training and Development. Certificate Courses : Plastic Processing and Manufacturing Skills, Tally ERP 9.0, Goods and Service Tax (GST).

Faculty of Science : Ph. 7852803736

B.Sc. : Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology, Biotechnology, Environmental Science, Geology
M.Sc. Chemistry (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
M.Sc. : Mathematics, Physics, Botany, Zoology, Environmental Science, Statistics, Bioinformatics, Biotechnology.

Jyotish and Vastu Sansthan - 9460030605

M.A. (ज्योतिर्विज्ञान), Diploma and Certificate Courses in Astrology (ज्योतिष)
Vastu (वास्तु), Palmistry (हस्तरेखा), Worship System (पूजा पद्धति), Rituals (अनुष्ठान), Vedic Culture (वैदिक जनजन संस्कृति).

Faculty of Education - 9460693771

B.A. B.Ed (4 year Integrated Course), B.Sc. B.Ed. (4 Year Integrated Course)

Manikyalal Verma Shramjeevi Evening College

Mob. - 9414291078, 0294-2426432, 8209630249, 9413972286

B.A./B.Com/B.Sc - B.Ed. Special Education Integrated (Eligibility 10+2).
B.Ed. Special Education (HI) (Eligibility 10+2+3)
B.Ed. Special Education (ID/MR) (Eligibility 10+2+3)
M.Sc. Chemistry - Self Finance Scheme (Special for Working Persons)

Department of Physical And Yoga Education

M.V. Shramjeevi Collage Campus, Ph.: 9352500446

PhD. Yoga, M.A.Yoga, P.G. Diploma in Yoga, PhD. Physical Education, M.A. Physical Education, Bachelor of Physical Education & Sports (B.P.E.S), Diploma in Gymnasium, Diploma in Sports Coaching (NIS) - 1 Year (Wrestling, Judo, Powerlifting, Yoga, Weight Lifting, Boxing, Wushu)

Department of Physical Education, Pratap Nagar Campus - 9829943205

Master of Physical Education (M.P.Ed.) - 2 Years, Diploma in Sports Coaching (NIS) - 1 Year (Hockey, Football, Kabaddi, Volleyball, Basketball, Badminton)

Department of Law - 9414343363, 9887214600

B.A. LL.B. (5 Year Integrated Course), LL.B. (3 Year Degree Course), LL.M. (2 Years), Ph.D., PG Diploma (1 Year Course) in Labour Law (PGDLL), Cyber Law (PGDCL), Law & Forensic Science (PGDLFS), Accountancy & Taxation (PGDLTA) and Intellectual Property Laws (PGDIPL), LL.M. 2 years (Criminal and Business Law)

Diploma In Criminal Psychology

Department of Pharmacy - 9414869044

D. Pharma (Diploma in Pharmacy)

Faculty of Engineering - Rajasthan Vidyapeeth Technology College

Ph. : 0294-2490210, 9829009878, 9950304204

Diploma in Engineering : Civil Engineering, Electrical Engineering, Mechanical Engineering, Electronics & Communication Engineering, Computer Science.

Faculty of Computer Science and Information Technology

Ph. 2494227, 2494217, 9414737125

B.C.A., M.C.A., M.Sc.(CS), B.Sc. in Data Science, PG DCA, B.Voc in Software Development, DCA (Diploma in Computer Applications).

Department of Physiotherapy - Ph. : 0294-2656271, 9414234293

Bachelor of Physiotherapy (B.P.T.), Master of Physiotherapy (M.P.T.), Master of Hospital Management, Fellowship in Palliative Care and Oncology Rehabilitation, Fellowship in Neurological Rehabilitation, MBA in Health Care Management, Fellowship in Geriatric Care and Rehabilitation, Fellowship in Sports Rehabilitation.

Udaipur School of Social Work - Ph. 8118806319, 9829445889

Master of Social Work (MSW), PG Diploma in HRM, PG Diploma in CSR, Post Graduate Diploma in Rural Development (PGDRD), Master of Social Work (MSW) - Self Finance Evening Batch, P.G. Diploma in Talent Management.

Sahitya Sansthan (Institute of Rajasthan Studies)

Ph. : 0294-2491054, 8003836352

M. A. in Ancient Indian Culture and Archaeology, Diploma in Archaeology

School of Agricultural Sciences, Dabok - 9460728783

B.Sc. (Hons.) Agriculture, B.Sc. Horticulture, B.Tech. Food Technology, M.Sc. Agronomy and Horticulture

Manikyalal Verma Shramjeevi Girls College, Dabok

Ph. : 0294-2655327, 9460856658, 9694881447, 9079919960

B.A., B.Com., B.Sc., M.A. (English, Hindi, Sanskrit, Pol. Sc., History, Geography, Sociology, Economics), M.Com (Accountancy).
Special Classes for English Speaking and Computer Basics.

R.V. Homeopathic Medical College and Hospital, Dabok

Ph. : 0294-2655974, 2655975, 9414156701, 9351343740

Diploma in Homoeopathic Pharmacy (DHP)

Faculty of Management Studies (FMS)

Ph. : 0294-2490632, 9460322351, 9414161889, 9636803729, 9782049628, 9001558308, 9928544749

B.B.A. M.B.A (HR / Marketing / Finance / Production & Operation Management / IB / IT / Tourism and Travel / Retail Management / Agri-Business / Family Business Management), M.H.R.M.

Department of Travel, Tourism & Hospitality

Faculty of Management Studies - 9950489333

BBA (Tourism and Travel) Specialization in Hotel Management
Diploma in Hotel Management (Food & Beverage Service)
Diploma in Hotel Management (House keeping)
Diploma in Hotel Management (Food Production).

Manikyalal Verma Shramjeevi Girls College, Pratapnagar, Udaipur

Mob. : 9928456341, 9929939903

B.A., B.Com., B.Sc., M.A. Geography, Pol. Sc., Regular special Classes for Competition exams

Lokmanya Tilak Teachers Training College, Dabok

Faculty of Education - Ph. : 8306182436, 0294-2655327

M.Ed., M.A. Education, B.Ed.-M.Ed. (3 Year Integrated), M.Ed. (Early Childhood Development), B.A. B.Ed. and B.Sc. B.Ed. (4 Year Integrated), D.El.Ed., PG Diploma in Yoga

Note :

For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website : www.jrnrvu.edu.in, respective prospectus or contact concerned department

REGISTRAR

RAJDHANI
ENGINEERING SOLUTIONS

Rajdhani

Authorised Distributor of
Gates Hoses & Assembly, Pix & Fenner V-Belts, Safety & Gum Boots

Gates | PIX Power Transmission Solutions Driving growth! Pix Transmission Limited | Fenner | INDO-MAKSSON

Authorised Assembler

We supply Hydraulic Hose Assembly by part no. for TATA, Volvo, Kosatsu, Atlas Copco, BEML, L&T, JCB, Kobeico, Poclain, Caterpillar, TATA Hitachi

All major kits available for Earthmoving Machinery available by part no.

Radhey Shyam Sikhwal Mo. 94142 35249, 76650-49666
N.H. 8, Main Road, Bhuwana, Udaipur - 313 004 (Raj)
Ph.: 0294-2440538 (O), 2441209 (O&R) Email: rajdhaniudaipur@gmail.com

Sister Concern: Gourav Engineering Solutions, Madras Traders

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 20 अंक 11, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

'प्रत्यूष' पत्रिका डिलिवर्ड न होने की स्थिति में इस पते पर लौटाएं: पंकज कुमार शर्मा, 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001